प्यार का सागर

सम्पादक – प्रेम प्रकाश छाबड़ा अनुवादक – मास्टर प्रताप सिंह शाक्य
विशेष सलाहकार – गुरमेल सिंह नौरिया उप सम्पादक – नंदिनी
सहयोग – जगमीत व परमजीत

प्यार का सागर

(कबीर साहब का अनुराग सागर)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के सुमार्ग दर्शन में
अनुवादित एवं सम्पादित

सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039
जिला – श्री गंगा नगर (राजस्थान)
2011

कबीर साहब एवं धर्मदास

(वचनामृत – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज)

सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा ने जब से इस संसार में सन्तों के रूप में आना शुरू किया है तब से ऐसा ही होता आया है कि उस समय के बहुत कम लोग ही उनकी तरफ ध्यान देते हैं। जब सन्त इस संसार से चले जाते हैं तो उनकी असीम शक्ति व शिक्षा से बहुत से लोगों की ज़िंदगियां पलट जाती हैं जिससे संसार के लोग प्रभावित होते हैं। सन्तों के संसार से जाने के बाद लोग उनके बारे में सोचना शुरू कर देते हैं और अपने आपको उनकी भक्ति में लगा देते हैं।

जिन लोगों ने भी सन्तों के बारे में लिखा उनके संसार से जाने के बहुत साल बाद लिखा इसलिए उनके जन्म स्थान, बचपन और ज़िंदगी के बारे में जानना मुश्किल हो जाता है।

इसी तरह कबीर साहब के बारे में बहुत सी धारणाएं प्रचलित हैं। सबसे अधिक प्रचलित धारणा के मुताबिक कबीर साहब का जन्म सन् 1398 में बनारस में हुआ और आप सन् 1518 में देह छोड़ गए। आपका जीवनकाल 120 साल का था।

धर्मदास, कबीर साहब के गुरमुख सेवक और उत्तराधिकारी थे। धर्मदास एक अमीर इंसान व मूर्ति पूजक थे। ऐसा कहा जाता है कि एक बार धर्मदास मूर्ति पूजा कर रहे थे तब कबीर साहब आपके सामने प्रकट हुए और कबीर साहब ने धर्मदास से पूछा, ''अगर यह बड़ी मूर्ति परमात्मा है तो ये छोटी-छोटी पत्थर की मूर्तियाँ क्या हैं?'' यह कहकर कबीर साहब गायब हो गए। धर्मदास सोचते ही रह गए कि यह क्या हुआ? उस समय उन्हें यह नहीं मालूम था कि जो उनके सामने प्रकट हुए, वह कबीर साहब ही थे।

दूसरी बार कबीर साहब धर्मदास के सामने एक साधु के रूप में प्रकट हुए। धर्मदास अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठे हुए थे। कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''तुम पापी हो।'' धर्मदास की पत्नी इस बात को सहन नहीं कर पाई और वह कबीर साहब से बोली, ''तुम इन्हें पापी कैसे कह सकते हो?'' तब कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''तुम इन लकड़ियों के अंदर देखो! तुम्हें पता चलेगा कि तुम क्या कर रहे हो?'' धर्मदास ने देखा कि उन लकड़ियों के अंदर बहुत सारे जीवित कीड़े जल रहे हैं। कबीर साहब ने कहा, ''क्या तुम इन कीड़ो को जिन्दा जलाकर पाप नहीं कर रहे हो?'' यह कहकर कबीर साहब दोबारा गायब हो गए। धर्मदास को सच्चाई का एहसास हुआ कि मैं बहुत बड़ा पापी हूँ।

धर्मदास परमात्मा की एक अच्छी आत्मा थी। वह परमात्मा के बारे में जानना चाहती थी। धर्मदास को यह भी याद था कि इससे पहले भी वह किसी से मिल चुका है जिसने उससे मूर्तियों के बारे में पूछा था। उसने महसूस किया कि वह दोनों एक ही इंसान थे। धर्मदास को पछतावा हुआ उसने सोचा अगर उसकी पत्नी कबीर साहब पर नाराज़ न होती तो वह उनसे परमात्मा के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकता था।

धर्मदास की पत्नी ने कहा, ''गुड़ पर मक्खियाँ ढ़ेर! तुम्हारे पास बहुत धन है तुम यज्ञ करो और कहलवा दो कि तुम साधुओं को बहुत चीजें दान करना चाहते हो। बहुत से साधु आएंगे हो सकता है कि वही साधु फिर से आ जाए! तुम उससे बात करके परमात्मा के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेना।''

धर्मदास ने बनारस और बहुत से शहरों में जाकर यज्ञ करवाए लेकिन कबीर साहब कभी नहीं आए। इस तरह वह अपना पैसा खर्च करता चला गया। इसके बाद जब उसने अपना

सब कुछ बेचकर अंतिम यज्ञ किया तब भी कबीर साहब ने दर्शन नहीं दिए। अपना सारा पैसा गँवाकर भी जब धर्मदास को वह साधु नहीं मिला तो उसने सोचा! मैं अपना सब कुछ गँवा चुका हूँ अब मैं घर वापिस जाकर क्या करुंगाँ; इससे अच्छा तो यह है कि मैं आत्महत्या कर लूँ!''

धर्मदास नदी के किनारे जाकर जैसे ही नदी मे छलाँग लगाने लगा तभी कबीर साहब वहाँ प्रकट हुए। धर्मदास ने कबीर साहब के पाँव छूकर कहा, ''हे भगवान! अगर आप मुझे पहले मिल जाते तो मैं अपनी सारी दौलत यज्ञों में बरबाद करने की बजाय आपको दे देता।'' कबीर साहब ने कहा, ''मेरा तुमसे मिलने का यही वक्त मुनासिब था अगर तुम मुझसे पहले मिलते उस समय तुम्हारे पास वह सब दौलत थी तो तुम वह नहीं बन पाते जो तुम अब बनोगे।''

कबीर साहब ने धर्मदास को 'नामदान' दिया। कबीर साहब के चोला छोड़ने के बाद धर्मदास ने नामदान देने का कार्यक्रम जारी रखा। यह पुस्तक '**प्यार का सागर**'-अनुराग सागर उन प्रश्नों के रूप में है जो धर्मदास ने कबीर साहब से पूछे और जिनका कबीर साहब ने उत्तर दिया।

दो शब्द

Index

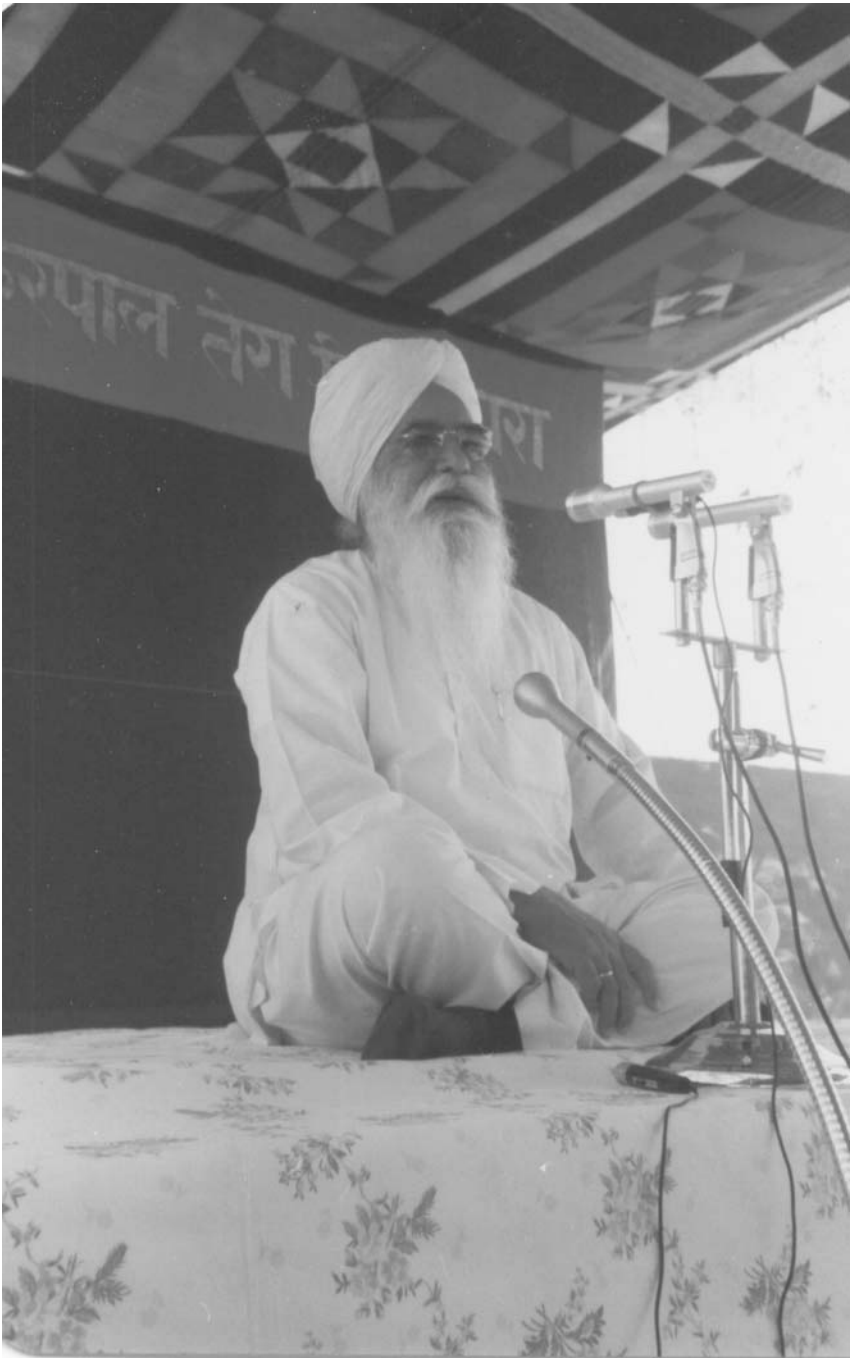

1. भूमिका

सर्वप्रथम हम अपने सतगुरु परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हम जीवों पर अपार दया की। परमात्मा अजायब सतलोक छोड़कर जीवों के कल्याण के लिए इस धरती पर आए। आपने अपने चरणों में बिठाकर अज्ञान रूपी भवसागर में भटकते हुए जीवों पर अमृत की वर्षा की और सन्तमत को सरल शब्दों में हमारे सामने रखा।

सन्तमत को समझाने के लिए महापुरुषों ने बड़े-बड़े ग्रंथ लिखे लेकिन परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने सन्तमत की परिभाषा एक सरल पंक्ति में दी जिसे हम जैसे अज्ञानी व मंदबुद्धि जीव भी समझ सकें। आप कहते हैं, ''अपने आपमें सुधार करने का नाम ही सन्तमत है।''

महाराज कृपाल सिंह जी ने कहा है, ''सन्तमत देखने का मार्ग है; सन्तों ने जो देखा वही बयान किया है।'' गुरुबानी में भी आता है:

सन्तन की सुण साची साखी, जो बोलण सो पेखे आँखी।

स्वामी जी महाराज अपनी बानी में लिखते हैं:

सन्तन का मत सबसे ऊँचा, जो परखे सोइ धुर पहुँचा।
पहुँचे की क्या करूँ बड़ाई, सब मत उसके नीचे आई।
जो मन में परतीत न देखे, तो कबीर गुरु वाणी पेखे।
तुलसी साहब का मत जोई, पलटू जगजीवन कहे सोई।

(सारवचन-वचन अड़तिसवां)

सन्तमत की महिमा से सन्त साहित्य भरा पड़ा है, सन्त साहित्य में कबीर साहब के अनुराग सागर का मुख्य स्थान है।

<u>अनुराग सागर का महत्त्व</u>:

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज सन्तमत को समझने के लिए अनुराग सागर पढ़ने पर बहुत जोर दिया

करते थे। आप अपने परम पिता सतगुरु कृपाल सिंह जी की आज्ञा से 16 पी.एस.-राजस्थान आए। आपने इस जगह पवित्र गुफा बनाकर दो साल तक भजन-अभ्यास किया।

जब आप थोड़े समय के लिए पवित्र गुफा से बाहर आते उस समय वहाँ नाममात्र ही प्रेमी होते थे। उस समय आप अनुराग सागर की बानी पर सतसंग दिया करते थे। अनुरागी पुरुष के ये सतसंग बहुत प्रभावशाली होते थे।

सन्त अजायब सिंह जी महाराज ने सन् 1977 में प्रथम विश्वयात्रा की। विश्वयात्रा से वापिस आकर आपने कहा, ''मुझे विश्वयात्रा पर बहुत आश्चर्य हुआ कि पश्चिम के लोग कबीर साहब के बारे में कुछ नहीं जानते। कबीर साहब इस सृष्टि के प्रथम सन्त हुए हैं और उन्होंने चारों युगों में जीवों के उद्धार के लिए धरती पर अवतार लिया। अतः अनुराग सागर का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद होना चाहिए।''

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया से अनुराग सागर के अनुवाद का कार्य आरंभ हुआ। सन् 1982 में अनुराग सागर की अंग्रेजी भाषा में अनुवादित पुस्तक- दी ओशियन ऑफ लव The Ocean of Love सन्तबानी आश्रम, सानबोर्न्टन, न्यू हैम्पशायर अमेरिका से प्रकाशित की गई। इस पुस्तक की एक प्रति विश्व के सबसे बड़े पुस्तकालय वाशिंगटन, डी.सी. में रखी गई है और भारत में प्रथम विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली में भी इसकी एक प्रति रखी गई।

महाराज कृपाल सिंह जी भी अनुराग सागर की बानी पर सतसंग दिया करते थे। बाबा सावन सिंह जी महाराज वेदान्त से प्रभावित थे लेकिन उनकी शंका का समाधान भी अनुराग सागर के अध्ययन से हुआ। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब मैं बाबा जयमल सिंह जी के सतसंग में गया

उस समय आप जपजी साहब की बानी की व्याख्या कर रहे थे। मैंने उनसे इतने प्रश्न पूछे कि वहाँ बैठे लोग परेशान हो गए। वहाँ स्वामी जी महाराज की बानी का संग्रह 'सार-वचन' भी रखा हुआ था। मैंने राधास्वामी शब्द पर आपत्ति की तो जयमलसिंह जी ने 'सार-वचन' की यह तुक पढ़ी:

राधा आदि सुरत का नाम, स्वामी शब्द बसे निज धाम।

मैंने बाबा जयमल सिंह जी की तालीम को समझने के लिए आठ दिन की छुट्टी ले ली। बाबा जी ने मुझे कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ने का आदेश दिया। मैंने उसी वक्त मुम्बई से अनुराग सागर की आठ प्रतियां मंगवा ली ताकि मैं अपने दूसरे मित्रों को भी पढ़ने के लिए दूँ और उनकी राय मालूम कर सकूँ। बाबा जी से थोड़े दिन और बात हुई जिससे मेरी तसल्ली हो गई और मैंने 15 अक्टूबर 1894 को बाबा जी से 'नाम' ले लिया।

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अनुराग सागर पढ़े बिना काल व दयाल मत में फर्क समझ नहीं आता और न ही सन्तमत की पूरी समझ आती है।'' सावन सिंह जी के समय में पश्चिम के बहुत से लोगों ने 'नामदान' लिया। उस समय से ही इस ग्रन्थ का अनुवाद करने के बारे में सोचा जा रहा था लेकिन यह कार्य सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा पूर्ण हुआ।

अनुराग सागर क्या है?:

अनुराग सागर को सरल अर्थ में **प्यार का सागर** कह सकते हैं। परम सन्त अजायब सिंह जी के शब्दों में परमात्मा प्यार है और अनुराग का अर्थ अथाह प्यार से है जो वियोग से उत्पन्न होता है। सन्तमत में अथाह प्यार के सागर परमात्मा को ही सतपुरुष, शब्द पुरुष या आदि पुरुष कहा गया है।

सतपुरुष की इच्छा से सोलह सुत (पुत्र) उत्पन्न हुए। उन सोलह पुत्रों को सतपुरुष की रचना की सोलह कलाएं भी कहा जाता है। उन सोलह पुत्रों में एक काल निरंजन था। काल निरंजन को धर्मराय या यमराज भी कहा जाता है। काल निरंजन ने एक पैर पर खड़े होकर सत्तर युग और फिर चौंसठ युग तपस्या की; उसकी तपस्या से सतपुरुष प्रसन्न हो गए। सतपुरुष या आदि पुरुष ने अद्या को पैदा किया, आदि पुरुष से उत्पन्न होने के कारण उसे अद्या कहा गया है।

आदि पुरुष ने अद्या को मूल बीज देकर भवसागर की रचना के लिए काल निरंजन के पास भेजा। काल निरंजन व अद्या से तीन पुत्र - ब्रह्मा, विष्णु और महेश पैदा हुए। फिर काल निरंजन मन रूपी गुफा में गुप्त हो गया और उसने अद्या को अपने पुत्रों ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ मिलकर जगत की रचना करने का हुक्म दिया। कबीर साहब ने अनुराग सागर में करोड़ों ब्रह्मा, विष्णु और महेश होने का जिक्र किया है:

कोटि विष्णु औतारहि खाया, ब्रह्मा रुद्रहि खाय नचाया।

(अनुराग सागर पृ. 41)

काल की आज्ञा से जगत की रचना हुई। आत्माओं को देह रूपी खोल देकर जीवों का रूप प्रदान किया गया। इस तरह जीव भवसागर में काल के जाल में फँसकर दु:ख भोगने लगे। तब जीवों ने दु:खी होकर सतपुरुष से पुकार की। सतपुरुष ने कबीर साहब को भेजकर वचन दिया कि वह सन्त रूप में आकर जीवों को भवसागर से छुड़ाकर अपने लोक अनुराग सागर में ले जाएंगे। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

सुरत बुन्द सत सिंध तज, आई दसवें द्वार।
वहाँ से उतरी पिंड में, बसी आय नौ बार।
मन इन्द्री सम्बंध कर, पड़ी जगत की लार।
जन्म जन्म दु:ख में रही, बही चौरासी धार।
सुध भूली घर आदि की, सतपुरुष दरबार।।

अनुराग सागर की कथा का सारांश यह है कि सन्त इस 'जीवात्मा' को अनुराग रूपी जहाज में बिठाकर उस अथाह **प्यार के सागर** - सतलोक में सतपुरुष की गोद में ले जाते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी महाराज कहते हैं:

सांच कहुं सुनि लेहु सभै जन, जिन प्रेम कियो तिनहि प्रभु पायो।

अनुराग सागर की कथा:

अनुराग सागर में कबीर साहब को सहज, जोगजीत, ज्ञानी, अचिन्त व योग सन्तायन आदि नामों से पुकारा गया है। कबीर साहब चारों युगों में आए। आपने सतयुग में सतसुकृत, त्रेता युग में मुनीन्द्र, द्वापर युग में करूणामय और कलियुग में कबीर नाम धारण किया। इस कथा में कबीर साहब ने अपने शिष्य धर्मदास द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए हैं।

सर्वप्रथम कबीर साहब ने धर्मदास को सतगुरु की महानता के बारे में बताया कि बहुत कम लोग सतगुरु की पहचान करते हैं। जो लोग सतगुरु को पहचान लेते हैं वे भवसागर से वियोगी होकर अनुरागी बन जाते हैं। सृष्टि की रचना के प्रश्न पर कबीर साहब धर्मदास से कहते हैं, ''शुरू की रचना को कोई नहीं जानता इस सारी रचना का विस्तार बाद में हुआ है इसलिए मैं तुम्हें किस चीज का प्रमाण दूं।''

आदि उत्पत्ति सुनुहु धर्मनि, कोइ न जानत ताहि हो।
सबहि भी विस्तार पाछे, साख देहुं मैं काहि हो।

(अनुराग सागर पृ. 13)

तब सारी रचना सतपुरुष में समाई हुई थी:

तब सब रहे पुरुष के माहीं, ज्यों वट वृक्ष मध्य रहे छाहीं।

(अनुराग सागर पृ. 13)

चारों युगों में कबीर साहब का अवतार और आपने किन-किन लोगों को 'नामदान' दिया विस्तार से समझाया है। भविष्य

में जो कुछ होने वाला है उसे भी खोलकर समझाया है। काल निरंजन द्वारा अपने चार दूतों को जीवों को कैद रखने की आज्ञा का वर्णन किया गया है। नाद या शब्द की महिमा और गुरु की महिमा पर प्रकाश डाला है। धर्मदास को गुरु और शिष्य की रहनी के बारे में समझाया है। अधिकारी जीवों के लक्षण, काया कमल विचार, मन के पाप और पुण्य के विचार, विभिन्न पंथो व निरंजन के चरित्र का वर्णन किया है।

मुक्ति के मार्ग पंथ की पहचान समझाकर वैरागी एवं गृहस्थी के लक्षणों को बताया है। चौका विधि और चौका के सामान का वर्णन किया है। उस समय 'नामदान' प्रचलित रीति-रिवाज के अनुसार पूरी विधि-विधान से दिया जाता था जिसे चौका विधि कहा जाता था। इसमें आरती का महत्त्व बताया गया है कि उस समय की परंपरा के अनुसार गुरु को सतपुरुष का अवतार मानकर आरती की जाती थी। नाम लेने के बाद सावधानी के फल और नाम लेने के बाद असावधानी के परिणामों का वर्णन किया गया है।

अनुराग सागर की कथा के अंत में ग्रन्थ का सार प्रस्तुत करते हुए कबीर साहब कहते हैं, ''प्रत्येक जीव को अपने गुरु के चरणों में पूर्ण विश्वास करते हुए अनुरागी बनकर 'शब्द-नाम' की कमाई करके अमर पद को प्राप्त करना चाहिए। पूर्ण सतगुरु के मिलाप से ही सुरत और शब्द के खेल का पता चलता है। यह जीवात्मा रूपी बूंद का अनुराग रूपी सागर से मेल की कथा है।''

धर्मदास के पूर्व जन्मों की कथा:

द्वापर युग में सुपच सुदर्शन नाम के एक पूर्ण सन्त थे। परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज आमतौर पर अपने

सतसंगों में सुपच सुदर्शन की कहानी सुनाया करते थे कि सुपच सुदर्शन के भोजन करने के बाद आसमान में घंटा बजा और पांडवों का यज्ञ सफल हुआ।

सन्त सुपच सुदर्शन के माता-पिता को अपने बेटे पर विश्वास नहीं था इसलिए उन्होंने उससे 'नामदान' नहीं लिया लेकिन उन्होंने कभी भी अपने बेटे को भक्ति करने से नहीं रोका। सन्त सुपच सुदर्शन ने सतपुरुष से प्रार्थना की, ''हे सतपुरुष! मेरे माता-पिता बहुत अच्छे हैं वे अभी भी काल के जाल में फँसे हुए हैं कृपया उन्हें मुक्त करवाकर अपने निजधाम में स्थान दें।'' तब सतपुरुष ने कबीर साहब को उन्हें मुक्त करवाकर लाने की आज्ञा दी।

अगले युग कलियुग में सुपच सुदर्शन की महिमा की वजह से वे दोनों गरीब ब्राह्मण कुल में जन्में। तब उनका नाम कुलपति और महेश्वरी पड़ा। कबीर साहब उनको बालरूप में मिले लेकिन उन्होंने कबीर साहब को नहीं पहचाना उनका यह जन्म भी व्यर्थ चला गया।

फिर उनका अगला जन्म चंदन साहु और ऊदा के रूप में हुआ। ऊदा को कबीर साहब तालाब पर बालरूप में मिले लेकिन चंदन साहु ने लोकलाज के डर से बालक को फिर से तालाब में फिंकवा दिया।

उनका तीसरा जन्म नीरु और नीमा के रूप में हुआ। कबीर साहब उनके घर में पुत्र बनकर रहे लेकिन उन्होंने कबीर साहब को नहीं पहचाना।

फिर चौथा जन्म मथुरा में धनी धर्मदास व आमिन के रूप में हुआ। तब धर्मदास ने कबीर साहब को पहचान लिया।

चलेहु तक तक सीस नवाई, धर्मदास अब तुम लग आई।
धर्मदास तुम नीरु औतारा, आमिन नीम प्रगट विचारा।

(अनुराग सागर पृ. 110)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज कई बार सतसंगो में धर्मदास की कहानी सुनाया करते थे। कबीर साहब ने धर्मदास को चारों जन्मों की कथा सुनाई और धर्मदास से कहा, ''मैं सतपुरुष की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूँ। मैंने तुम्हें पूर्व जन्मों की याद करवाई है। संयोगवश मैंने तुम्हें दर्शन दिया और तुमने मुझे पहचान लिया है; अब मैं तुम्हें सतपुरुष का 'शब्द' दूँगा। तुम दृढ़ विश्वास करके शब्द-नाम की कमाई करो।'' तब धर्मदास की आँखों से अश्रुधारा फूट पड़ी और धर्मदास कबीर साहब के चरणों में गिर पड़ा।

पुरुषहिं आज्ञा तुमरे ढिंग आये, पिछले हेतु पुनि याद कराये।
यहि संयोग हम दर्शन दीन्हा, धर्मनि अबकि तुम मोहि चीन्हा।
पुरुष आवाज कहूँ तुम पासा, चीन्हेहु शब्द गहो विश्वासा।
धाय पड़े चरणन धर्मदासा, नैन बारि भी प्रगट प्रगासा।

(अनुराग सागर पृ. 110)

कबीर साहब ने अपने गुरुमुख शिष्य धर्मदास को 'नामदान' दिया और अपना उत्तराधिकारी बनाया। कबीर साहब ने धर्मदास को उपदेश देते हुए कहा, ''हे धर्मदास! तुम और मैं अलग-अलग नहीं हैं; तुम अपने हृदय पर शब्द को परख कर देखो। तुम जीवों के लिए इस संसार में आए हो और भवसागर में इस पंथ को आगे चलाओ।''

हम तुम धर्मनि दूजा नाहीं, परखहु शब्द देख हिय माहीं।
तुम जो जीव काज जग आऊ, भौसागर महँ पंथ चलाऊ।

(अनुराग सागर पृ. 145)

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने भी अपने गुरुमुख शिष्य अजायब को आज्ञा दी, ''यह रूहानी विज्ञान संसार से लुप्त नहीं होना चाहिए, मैं सदा तुम्हारे अंग-संग रहूंगा। मुझे

तुम्हारी इस तरह चिन्ता रहेगी जैसे पिता को एक कुँवारी कन्या की चिन्ता होती है।''

सन्त अजायब सिंह जी महाराज 'नामदान' के समय कहा करते थे, ''जब गुरु नामदान देता है तो शिष्य के अंदर शब्द-रूप होकर बैठ जाता है उसे तब तक नहीं छोड़ता जब तक सतपुरुष की गोद में न पहुँचा दे।''

इस तरह धर्मदास को चौथे जन्म में 'नामदान' मिला। जब तक जीवात्मा अधिकारी न हो और उसमें निजधाम जाने की अभिलाषा न हो तब तक गुरु उसे 'नामदान' नहीं देता। जब धर्मदास ने कबीर साहब की शरण ग्रहण की और अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए कई प्रश्न पूछे तब कबीर साहब ने अनुराग सागर की कथा कहकर उसकी जिज्ञासा को शान्त किया।

संगत से निवेदन:

अनुराग सागर का मूल ग्रन्थ ब्रज भाषा में है। यह दोहा चौपाई सोरठा आदि से छंदबद्ध किया गया है। हमें अपार हर्ष है कि परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से इसका सरल हिन्दी में अनुवाद करने की कोशिश की गई है।

आशा है कि संगत के लिए यह अनुवादित रचना उपयोगी होगी और सतगुरु भक्ति में सहायक होगी। हमारी ओर से यह अनुवादित रचना **प्यार का सागर** परम पिता अजायब सिंह जी महाराज के चरण कमलों में एक छोटी सी भेंट है।

मास्टर प्रताप सिंह शाक्य

कबीर साहब का जीवन चरित्र

जन्म व जन्म स्थान :

कबीर साहब एक महान सन्त थे। आपका जीवनकाल लोक प्रचलित धारणाओं पर आधारित है। एक धारणा के अनुसार आप स्वतः सन्त थे और जन्म-मरण से ऊपर थे। अनुराग सागर के अनुसार भी आप चारों युगों में आए और स्वयं ही प्रकट हुए। सतयुग में आपका नाम सतसुकृत था।

सतयुग सतसुकृत मम नाऊँ। आज्ञा पुरुष जीव चेताऊँ।।

(अनुराग सागर पृ. 69)

त्रेतायुग में आपका नाम मुनिन्द्र था।

सतयुग गयो त्रेता आवा। नाम मुनिन्द्र जीव समुझावा ।।

(अनुराग सागर पृ. 73)

द्वापर युग में आपने करूणामय के रूप में अवतार लिया।

करुणामय तब नाम धराया। द्वापर युग जब महि में आया।।

(अनुराग सागर पृ. 81)

कलियुग में आपका नाम कबीर पड़ा।

द्वापर गत कलियुग परवेशा। पुनि हम चले जीवन उपदेशा।।

(अनुराग सागर पृ. 98)

इस तरह कबीर साहब जीवों के कल्याण के लिए चारों युगों में आए। सबसे अधिक प्रचलित धारणा के अनुसार कबीर साहब का जन्म सन् 1398 में बनारस(काशी) में हुआ। अनुराग सागर के अनुसार आप नीमा को लहर तालाब में कमलदल पर मिले थे। उस दिन जयेष्ठ मास की पूर्णिमा थी।

काशी नगर रहे पुनि सोई। नीरु नाम जुलाहा होई।।
नारि गवन लावे मग सोई। जेठ मास बरसाइत होई।।
नारि लिवाय आय मग माहीं। जल अचवन गह बनिताहीं।।
ताल ताहिं पुरइन पनवारा। शिशु होय मैं तहँ पगुधरा।।

(अनुराग सागर पृ. 98)

कबीर साहब व रामानन्द :

सन्त धुरधाम से आते हैं लेकिन सांसारिक नियमों का निर्वाह करने के लिए गुरु धारण करते हैं। कबीर साहब ने भी इसी तरह धर्म का निर्वाह करने के लिए रामानन्द को अपना गुरु धारण किया। कबीर साहब अपनी बानी में लिखते हैं:

कहे कबीर हम धुर के भेदी, लाए हुक्म हजूरी।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज अपने सतसंगों में कबीर साहब और रामानन्द का जिक्र किया करते थे कि कबीर साहब सर्वशक्तिमान थे अगर वह गुरु धारण न भी करते तो उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता था फिर भी उन्होंने सन्त मर्यादा को नहीं तोड़ा और रामानन्द को अपना गुरु धारण किया।

सच्चाई यह है कि कबीर साहब ने ही रामानन्द को मुक्त किया। रामानन्द मूर्तिपूजक थे उन्हें रूहानियत का कोई ज्ञान नहीं था। हिन्दू लोग रामानन्द को बहुत बड़ा साधु मानते थे और कबीर साहब की आलोचना किया करते थे कि इसका कोई गुरु नहीं है इसलिए वे कबीर साहब से गुरु मंत्र लेना पाप समझते थे।

कबीर साहब बहुत विवेकशील महात्मा थे। आपने सोचा! मुझे किसी ऐसे महात्मा को गुरु बनाना चाहिए जो बहुत मशहूर हो। कबीर साहब जुलाहा जाति के मुसलमान थे; रामानन्द किसी मुसलमान को देखना भी पसंद नहीं करते थे इसलिए रामानन्द से 'नामदान' प्राप्त करना असंभव था।

रामानन्द रोज प्रातःकाल गंगा स्नान के लिए जाया करते थे। कबीर साहब रामानन्द को गुरु बनाना चाहते थे इसलिए कबीर साहब बालक रूप होकर सीढ़ियों पर लेट गए, संयोग से अंधेरे में रामानन्द का पाँव बालक पर पड़ गया। कबीर

साहब जोकि बाल रूप में थे रोने लगे। रामानन्द का पाँव बालक पर पड़ा या नहीं कौन जानता है? लेकिन कबीर साहब को तो रोने का बहाना चाहिए था। रामानन्द चौंक गए और तुरंत उनके मुख से निकला, ''हे परमात्मा के बंदे! राम कहो, राम कहो।'' लेकिन कबीर साहब रोते रहे। रामानन्द ने फिर कहा, ''राम कहो, राम कहो।'' रामानन्द घर आ गए और कबीर साहब वहाँ से गायब हो गए।

उसके बाद कबीर साहब ने लोगों से कहना शुरू कर दिया, ''रामानन्द मेरे गुरु हैं मैंने उनसे दीक्षा ली है।'' यह सुनकर हिन्दू लोग बहुत नाराज हुए और उन्होंने रामानन्द के पास जाकर कहा कि आपके हजारों हिन्दू सेवक हैं फिर भी आपको और शिष्यों की भूख है इसलिए आपने मुसलमान कबीर को अपना शिष्य बनाया है। उन दिनों लोग जाति-पाति में बहुत विश्वास किया करते थे। रामानन्द ने कहा, ''कौन कहता है कि कबीर मेरा शिष्य है? मैं किसी कबीर को नहीं जानता, मैंने किसी कबीर को दीक्षा नहीं दी।''

हिन्दू लोगों ने कबीर साहब के पास आकर कहा, ''आप हमारे साथ रामानन्द के पास चलें। आप कहते हैं कि रामानन्द मेरा गुरु है जबकि रामानन्द कहते हैं कि मैं किसी कबीर को नहीं जानता।'' कबीर साहब रामानन्द के आश्रम में गए उस समय रामानन्द विष्णु की मर्तिपूजा कर रहे थे।

रामानन्द किसी मुसलमान को देखना पसंद नहीं करते थे इसलिए उन्होंने बीच में एक पर्दा लगाकर कबीर साहब को दूसरी तरफ बिठा दिया। रामानन्द ने मूर्ति के सिर पर मुकुट रख दिया लेकिन मूर्ति के गले में हार डालना भूल गए। अब अगर मुकुट उतारते हैं तो भगवान का अनादर होता है। रामानन्द कशमकश में थे कि अब क्या किया जाए! कबीर

साहब अंर्तयामी थे आपने कहा, ''गुरुजी! आप कशमकश में क्यों हैं ? हार की डोरी की गाँठ खोलकर हार पहना दीजिए।'' कबीर साहब पर्दे के पीछे भी रामानन्द की समस्या को जान गए और समाधान भी बता दिया।

रामानन्द ने कबीर साहब से पूछा, ''मैंने तुम्हें कब नामदान दिया है ?'' कबीर साहब ने रामानन्द को सारी घटना का विवरण बताकर कहा, ''जब आपने मेरे ऊपर पाँव रखा और मुझे राम-राम जपने के लिए कहा मैं तब से ही राम-राम जप रहा हूँ। इस तरह आप मेरे गुरु हैं।'' रामानन्द ने कहा, ''वह तो एक बालक था लेकिन तुम तो कबीर हो।'' तब कबीर साहब ने कहा, ''मैं आपको अभी भी बालक बनकर दिखा सकता हूँ।'' जब रामानन्द को इस बात का पता चला तो उन्होंने कहा अगर तुम इतने अंर्तयामी हो तो यह पर्दा क्यों? यह पर्दा हटा दो। इस तरह कबीर साहब ने रामानन्द को अपना गुरु धारण किया। वास्तव में कबीर साहब ने रामानन्द को कर्मकांडो व पाखंडो से हटाकर मुक्ति प्रदान की।

गृहस्थी जीवन :

कबीर साहब गृहस्थी थे आपकी पत्नी का नाम लोई था। आपके पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। आपने उच्च गृहस्थ जीवन का निर्वाह किया। आपने कपड़ा बुनकर अपनी रोजी-रोटी कमाई और सदा दीन दुःखियों की मदद की। आपने अपनी मधुर बानी से कर्मकांडो का खंडन किया और सरल भाषा में सन्त मार्ग का उपदेश दिया।

कबीर साहब का विरोध :

कबीर साहब कर्मकांड के विरोधी थे इसलिए पंडित और मौलवी दोनों ही कबीर साहब के विरोधी हो गए। आप पंडितों के कर्मकांड की ओर संकेत देते हुए कहते हैं:

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजों पहार।
या सैं तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

मौलवियों के कर्मकांड की ओर संकेत देते हुए कहते हैं:

कांकर पाथर जोड़कर, मस्जिद लई चिनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

इन कर्मकांडो के विरोध के कारण सिकन्दर लोदी ने आपको बहुत कष्ट दिए कई बार मारने की कोशिश की। परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज उक्त घटनाओं का जिक्र करते हुए गुरबानी की इन लाइनों को पढ़ा करते थे:

गंग गुसाइनि गहर गंभीर, जंजीर बांधकर खड़े कबीर।
मन न डिगे तन काहै को डराय, चरण कमल चित रहयो समाय।
गंगा की लहर मेरी टूटी जंजीर, मृगछाला पर बैठे कबीर।
कहे कबीर कोउ संग न साथ, जल थल राखन है रघुनाथ।

कबीर साहब ने काशी व दूर-दूर तक जाकर अनेक जीवों को 'शब्द-नाम' का भेद दिया। बड़े-बड़े राजा जैसे राजा बलख बुखारा, राजा वीर बघेल सिंह, बिजली खां पठान और धनी धर्मदास आदि आपके महान शिष्य हुए।

अंतिम समय :

कबीर साहब ने सन् 1518 में लगभग 120 वर्ष की आयु में अपनी देह को त्यागा। उस समय यह धारणा प्रचलित थी कि जो काशी में मरता है उसे मुक्ति मिलती है; जो मगहर में मरता है उसे मुक्ति नहीं मिलती। इस धारणा को दूर करने के लिए कबीर साहब ने मगहर में अपनी देह त्यागी।

हिन्दू मुसलमान दोनों ही कबीर साहब के शिष्य थे। जब कबीर साहब के अंतिम संस्कार के लिए विवाद हुआ तो कबीर साहब ने प्रकट होकर दोनों को डाँटा और एक चद्दर ओढ़कर

लेट गए। जब चद्दर हटाई गई तो वहाँ से कुछ फूल मिले। उन फूलों को हिन्दू मुसलमानों ने आपस में बाँट लिया। हिन्दुओं ने उन फूलों को आग को भेंट कर दिया और मुसलमानों ने उन फूलों को दफना दिया। परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज अपने सतसंगों में कबीर साहब की इस बानी को इस्तेमाल करते थे:

कवन स्वर्ग कवन नरक विचारा, सन्तन दोऊ रादे।
हम काहु की कान न कढ़ते, अपने गुरु प्रसादे।
अब तो जाय चढ़े सिंहासन, मिले हैं सारंग पानी।
राम कबीरा एक भए हैं, कोई न सके पिछानी।।

उत्तराधिकारी :

कबीर साहब ने देह त्याग करने से पहले धर्मदास को अपना उत्तराधिकारी बनाया। **प्यार का सागर** कबीर साहब द्वारा धर्मदास को दिए गए उपदेश का ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में कबीर साहब ने धर्मदास की सभी शंकाओं का समाधान करके 'शब्द-मार्ग' पर चलकर जीवों का कल्याण करने का उपदेश दिया है।

प्यार का सागर

सद्गुरु स्तुतिः

सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त पुरुष, मुनीन्द्र, करूणामय, कबीर, सुरति योग सन्तायन, धनी धर्मदास, चूड़ामणिनाम, सुदर्शननाम, कुलपति नाम प्रबोध, गुरुबाला पीर, केवलनाम, अमोल नाम, सुरति, सनेही नाम, हक्कनाम, पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम, उग्रनाम, साहब की दया, वंश ब्यालीस की दया।

मंगलाचरण :

सबसे पहले मैं अपने सतगुरु के चरणों में प्रणाम करता हूँ जिसने मुझे अगम के पार ले जाकर अनामी परमात्मा के दर्शन करवा दिए। सतगुरु ने ज्ञान रूपी प्रकाश के दीपक से मेरा पर्दा खोल दिया और मुझे उस परमात्मा के दर्शन हुए। सतगुरु की दया से मैंने उस परमात्मा को पा लिया है जिसे प्राप्त करने के लिए सिद्ध पुरुषों ने बहुत मेहनत की। परमात्मा के स्वरूप का वर्णन नहीं हो सकता। मैं उसी **प्यार के सागर** अमृतमयी स्वरूप में जाकर समा गया हूँ।

पूर्ण गुरुदेव :

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! गुरुदेव दया का सागर हैं। गुरुदेव दीन-दुःखियों पर दया करते हैं, बहुत ही कम लोग उनके भेद को जान पाते हैं जो लोग उन्हें पहचान लेते हैं गुरुदेव उनके अंदर प्रकट हो जाते हैं।''

अधिकारी शिष्य को ही बोधः

हे धर्मदास! जो सच्चा खोजी 'शब्द-नाम' की कमाई करता हुआ पूरे ध्यान से गुरु की शिक्षा पर अमल करता है उसके हृदय में ये शिक्षाएं समा जाती हैं,ज्ञान रूपी सूर्य उदय हो जाता है, मोह रूपी अंधेरा दूर हो जाता है। मैं तुम्हें **प्यार का सागर** की कथा सुनाता हूँ जिसे विरले सन्त ही समझ सकेंगे।

हे धर्मदास! जो ज्ञानी सन्त मेरे वचनों पर विचार करेगा उसके हृदय में अनुराग पैदा हो जाएगा और वह निर्वाण पद सतलोक को प्राप्त करेगा।

अनुरागी (प्रेमी) के लक्षण:

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु! मैं अपने हाथ जोड़कर आपसे विनती करता हूँ आप मेरे इस संदेह को दूर करें कि जिसके हृदय में अनुराग पैदा हो जाता है मैं उसकी पहचान कैसे करूँगा? अनुरागी कैसा दिखाई देता है? मुझे उस अनुराग के बारे में कुछ उदाहरण देकर अच्छी तरह से समझाएं?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अनुरागी के लक्षण के बारे में ध्यान से सुनो ताकि तुम उसे पहचान सको? संगीत की धुन में मस्त होकर हिरण दौड़कर शिकारी के पास आ जाता है। उसे कोई भय नहीं होता वह उस संगीत को सुनकर अपनी जिंदगी कुर्बान कर देता है। एक अनुरागी को भी ऐसा ही करना चाहिए। एक अनुरागी को पंतगे जैसा होना चाहिए। जब पतंगा दीपक के निकट जाता है तो वह जल जाता है।''

सती का उदाहरण:

हे धर्मदास! उस औरत की तरह बनो जो अपने आपको, अपने मरे हुए पति के साथ जला देती है। जब वह जल रही होती है तो भी अपना शरीर नहीं हिलाती। अपना घर, दौलत और रिश्तेदारों को छोड़कर जुदाई के दर्द में अकेली जल जाती है। वह तब भी नहीं रुकती जब लोग उसका बेटा उसके सामने लाकर उसके मोह को जगाने की कोशिश करते हैं। लोग उससे कहते हैं कि तुम्हारा बेटा कमजोर है मर जाएगा; तुम्हारे बिना तुम्हारा घर अकेला हो जाएगा। तुम्हारे पास बहुत दौलत है घर वापिस आ जाओ। वह अपने पति की जुदाई के दर्द में होती है उसे कुछ भी आकर्षित नहीं करता।

लोग उसे बहुत से तरीकों से मनाने की कोशिश करते हैं पर वह दृढ़ औरत नहीं सुनती। वह कहती है, ''मुझे धन-दौलत से कुछ भी लेना-देना नहीं है। इस संसार में चार दिन का जीवन है। अंत में कोई साथ नहीं देता इसलिए हे सखियो! मैंने अपने आपको अपने पति के चरणों में सौंप दिया है।'' वह अपने पति को गोद में लेते हुए चिता के ऊपर चढ़ जाती है और राम-नाम लेते हुए सती हो जाती है।

सच्चे अनुरागी के लक्षण:

हे धर्मदास! अब तुम सच्चे अनुरागी के लक्षण सुनो। तुम अच्छी तरह से इस असलियत को समझ लो। जो सच्चा अनुरागी बनकर नाम में ध्यान लगा लेता है वह कुल परिवार आदि को भुला देता है; उसे पुत्र और पत्नी का मोह नहीं होता। वह इस जीवन को स्वप्न की तरह समझता है। संसार में जीवन थोड़े समय के लिए है अंत में कोई साथ नहीं जाता।

इस संसार में पत्नी का प्यार सबसे बड़ा माना गया है पत्नी के प्रेम में मनुष्य अपना सिर कटवाने से भी पीछे नहीं हटता लेकिन वह भी अंत समय में प्यार नहीं करती, अपने मतलब के लिए रोती है; फिर वह अपने माता-पिता के घर चली जाती है। अपने शरीर से बढ़कर कोई वस्तु प्यारी नहीं होती लेकिन अंत समय में यह भी साथ नहीं जाता। मेरा यही उपदेश है कि तुम सतनाम को धारण करो।

काल से छुटकारा पाने के उपाय:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे भाई! मुझे ऐसा कोई दिखाई नहीं देता जो अंत समय में काल से मुक्त करवा सके। एक सतगुरु ही है जो हमें काल से मुक्त करवा सकता है। सतगुरु के साथ प्यार करने से ही मसला हल हो सकता है। काल को

हराते हुए सतगुरु आत्मा को उस मंडल में ले जाता है जिसमें कोई आवागमन नहीं होता। जहाँ सतपुरुष रहता है, वहाँ पहुँचकर हम अनन्त खुशी को प्राप्त कर लेते हैं और इस आवागमन से मुक्त हो जाते हैं।

हे धर्मदास! जो मेरे शब्दों में विश्वास करते हुए सच्चाई के रास्ते पर चलेगा वह उस योद्धा की तरह है जो युद्ध में आगे बढ़ता है पीछे की चिंता नहीं करता। उस योद्धा और सती की तरह बनें और सन्त से रास्ते का ज्ञान लें। सतगुरु में विश्वास करके उसका सहारा लें और मृतक बनें। अपने आपको काल के दर्द से बचाओ। कोई हिम्मत वाला ही ऐसा कर सकता है वही परमात्मा को पा सकता है।

मृतक किसे कहते हैं?

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! मुझे मृतक के गुणों के बारे में बताएं ताकि मेरे हृदय की आग बुझ जाए। हे दया के बादल! मुझे समझाएं कि जीव मृतक कैसे बन सकता है?''

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास! यह कहानी बहुत ही उलझी हुई है। सिर्फ थोड़े से ही लोग किसी पूर्ण गुरु से इस कहानी को जान सकते हैं।

हे धर्मदास! जो मृतक होकर सन्तों की सेवा करते हैं और 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं उन्हें ही प्रभु मार्ग की प्राप्ति होती है। जैसे कि भृंगी के संपर्क में आने से कीड़ा भृंगी शरीर धारण कर लेता है। भृंगी कीड़े के पास आकर अपना शब्द सुनाता है, जो कीड़ा शब्द को ग्रहण कर लेता है उस कीड़े को भृंगी अपने घर ले जाता है और उसे अपना ही रूप बना लेता है। कोई कीड़ा पहली बार में ही शब्द को ग्रहण कर लेता है कोई दूसरे या तीसरे प्रयास में शब्द को ग्रहण करता है। वह अपने शरीर और मन को त्यागकर भृंगी का रूप बन

जाता है लेकिन जो कीड़ा शब्द को ग्रहण नहीं करता वह सदा के लिए कीड़ा ही रह जाता है।

हे धर्मदास! जिस तरह कीड़ा भृंगी के शब्द को ग्रहण कर भृंगी बन जाता है उसी तरह शिष्य को सतगुरु के शब्द को ग्रहण करना चाहिए। जो मजबूत होकर शिक्षाओं को ग्रहण करते हैं उन्हें मैं अपना रूप बना लेता हूँ। जो जीव दुविधा नहीं रखते वे मुझे पा लेते हैं। जो गुरु के वचनों को मानते हैं उनमें भृंगी भाव आ जाता है वे सभी आशाओं को छोड़कर शब्द में समा जाते हैं; कौवे से हंस हो जाते हैं।

हंस कौन बनता है?

हे धर्मदास! जो कौवे की चाल छोड़कर अपने अंदर शब्द-रूपी मोती को चुगता है और सन्तमत पर चलते हुए सतगुरु को जीवन अर्पण कर देता है वह हंस बन जाता है।

मृतक के और उदाहरण:

हे सन्त! कोई विरला जीव ही मृतक भाव धारण करके परमात्मा के मार्ग का अभ्यास करता है। मृतक के कुछ और गुणों को सुनो। मृतक बनकर ही सतगुरु के चरणों की सेवा हो सकती है। मृतक अपने अंदर प्यार प्रकट कर लेता है और उसी प्यार से जीव की मुक्ति होती है।

धरती का उदाहरण:

हे धर्मदास! हमें धरती जैसे गुणों को ग्रहण करना चाहिए। कोई धरती के ऊपर चंदन डालता है, कोई गंदगी डालता है और कोई उसके ऊपर हल चलाकर खेती करता है लेकिन धरती किसी से नफरत नहीं करती। उसी तरह मृतक किसी से नफरत नहीं करता वह तब भी खुश होता है जब कोई उसका विरोध करता है।

गन्ने का उदाहरण:

हे धर्मदास! मृतक के और उदाहरण सुनों। उन्हें परखो फिर गुरु के बताए रास्ते पर चलो। जैसे पहले गन्ने को उगाया जाता है फिर कोल्हू चलाकर रस निकाला जाता है फिर उस रस को कड़ाहे में डालकर उबाला जाता है फिर शीरे को तपाने से गुड़ बन जाता है। गुड़ को तपाने से खांड बन जाती है खांड को जब और तपाया जाता है तो चीनी बन जाती है। चीनी को गलाया जाता है तो उसकी मिश्री बन जाती है। जब मिश्री से कंद बन जाता है तो वह सबके मन को अच्छा लगता है। इसी तरह अगर शिष्य गुरु के वचनों से तपकर निखर जाए तो वह सरलता से इस भवसागर को पार कर लेता है।

मृतक भाव धारण करने वाले के गुण:

हे धर्मदास! मृतक भाव के गुणों को धारण करना बहुत कठिन है कोई बहादुर ही इन गुणों को धारण कर सकता है कायर तो इसको सुन ही नहीं सकता सुनने से ही उसका तन मन जलने लग जाता है और वह डर के मारे भाग जाता है पीछे मुड़कर भी नहीं देखता। ऐसा शिष्य जिसकी संभाल स्वयं गुरु करता है वह ज्ञान की नाव पर सवार होता है। जो पूरा ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह निश्चय ही सतलोक को जाता है।

मृतक ही साधु होता है:

हे धर्मदास! जो मृतक बन जाता है वही साधु है। वही सतगुरु को जान लेता है। उसके सब भ्रम मिट जाते हैं। देवी-देवता भी ऐसी अवस्था की आशा करते हैं।

साधु मार्ग और रहनी:

हे धर्मदास! साधु का मार्ग बहुत कठिन है। जो मृतक की तरह रहता है वही पूरा साधु है। जिसने पाँचों इन्द्रियों को

अपने वश में कर लिया है और जो दिन-रात नाम का अमृत पीता है वही साधु है।

आँख इन्द्री को वश में करना:

हे धर्मदास! सबसे पहले आँख की इन्द्री को वश में करो, भगवान के सुंदर स्वरूप को देखना ही इन आँखो के लिए भक्ति है। गुरु से प्राप्त किए हुए नाम की तरफ ध्यान लगाओ। जब कोई सुंदरता और कुरूपता को एक जैसा समझ लेता है, देह की तरफ नहीं देखता; वह हमेशा के लिए सुख को पा लेता है।

कान इन्द्री को वश में करना:

हे धर्मदास! कान इन्द्री सदा अपने को अच्छे लगने वाले वचनों को ही सुनना चाहती है, बुरे वचन सुनते ही मन में क्रोध आ जाता है। जो अच्छे-बुरे वचनों को सहन कर लेता है उस पवित्र हृदय में गुरु का विशेष ज्ञान टिकता है।

नाक इन्द्री को वश में करना:

हे धर्मदास! नाक की इन्द्री सुंदर-सुंदर खुशबुओं के वश में होती है लेकिन चतुर सन्त इसे अपने वश में रखते हैं।

जीभ इन्द्री को वश में करना:

हे धर्मदास! जीभ की इन्द्री अच्छे-अच्छे स्वाद जैसे खट्टा, मीठा, लज़ीज चखना चाहती है लेकिन साधु लज़ीज और रूखे-सूखे खाने में कोई अंतर नहीं समझता अगर साधु को पाँच अमृत का भोजन भी दिया जाएं तो उसे खुशी नहीं होती। साधु को बिना नमक के स्वाद रहित खाना भी दिया जाए तो वह उस खाने को दोगुने प्रेम से ग्रहण करता है।

काम इन्द्री को वश में करना:

हे धर्मदास! यह इन्द्री बहुत दुष्ट और पापी है। कोई विरला साधु ही इसे वश में कर सकता है। कामी औरत काल की खान होती है इसका साथ छोड़कर गुरु ज्ञान ग्रहण करो।

काम को वश में करना:

हे धर्मदास! जब कभी काम का वेग आए तो अपने आपको जगा लेना चाहिए और अपने ध्यान को 'शब्द' में टिकाना चाहिए। अपने मन को शान्त करो और इसे नाम रूपी अमृत का पान कराओ तो काम समाप्त हो जाएगा।

काम का देवता लुटेरा है:

हे धर्मदास! काल की ताकतवर, खतरनाक और दुःख देने वाली शक्ति काम है। काम ने देवताओं, मुनियों, यक्षों, गंधर्वो को भी भोगों में फँसा दिया; सभी काम द्वारा लूट लिए गए। कोई विरले ही जिनके अंदर सतगुरु के ज्ञान का प्रकाश होता है वे ज्ञान के गुणों में दृढ़ रहे और काम से बच गए।

काम लुटेरे से बचने के उपाय:

हे धर्मदास! अपने अंदर ज्ञान के दीपक को जलाकर अगर सतगुरु के शब्द का अभ्यास करो तो अज्ञान रूपी अंधकार का चोर काम लुटेरा भाग जाएगा और अंतर में प्रकाश हो जाएगा।

पूर्ण साधु अनल पक्षी जैसा होता है:

हे धर्मदास! गुरु की कृपा से ही जीव साधु कहलाता है। साधु अनल पक्षी की तरह बनकर वापिस अपने घर सतलोक पहुँच जाता है।

धर्मदास! मैं तुम्हें अनल पक्षी के बारे में बताता हूँ कि अनल पक्षी दिन-रात आसमान में हवा के सहारे रहता है।

वह नज़र से ही संभोग करता है जिससे मादा अनल पक्षी गर्भ धारण कर लेती है। मादा अनल पक्षी आसमान में ही अंडे देती है जहाँ कोई सहारा नहीं होता। नीचे गिरते ही अंडा पक जाता है, आसमान में ही इससे बच्चा निकल आता है। नीचे आते हुए बच्चा आँखे खोलता है तो उसमें से पंख निकल आते हैं जब तक यह बच्चा धरती पर आता है यह पूरा पक्षी बन जाता है लेकिन इसे यहाँ आकर पता चलता है कि यह उसका देश नहीं है। अनल पक्षी बच्चे को लेने नहीं आता यह बच्चा वापिस उड़कर अपने माता-पिता के पास चला जाता है।

इस संसार में बहुत से पक्षी रहते हैं लेकिन अनल पक्षी जैसा कोई नहीं होता। इस प्रकार अनल पक्षी जैसे विरले साधु ही 'नाम' में समाते हैं। जो जीव 'नाम' में जाग जाता हैं वह काल के जाल से निकलकर सतलोक चला जाता है।

अनल पक्षी जैसे साधु को क्या प्राप्त होता है?

हे धर्मदास! जो दिन-रात सतगुरु की शरण में रहकर केवल नाम की इच्छा रखता है वह दिन-रात जागकर सतगुरु की सेवा करता है। उसमें धन-दौलत, बेटे-बेटी, पत्नी की इच्छा नहीं रहती और वह दुनियां के रसों-कसों को भूल जाता है तब वह अनल पक्षी की तरह बन जाता है। सतगुरु की दया से उसके सभी दु:खों का नाश हो जाता है और वह अविचलधाम या सतलोक को प्राप्त करता है।

अविचलधाम की प्राप्ति के साधन :

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! जो सदा मन, वचन और कर्म से सतगुरु को याद रखता है, गुरु की आज्ञा का पालन करता है सतगुरु उसे नाम में लीन करके मुक्ति का दान देते हैं; उसे अविचलधाम या सतलोक की प्राप्ति होती है।

नाम ध्यान की महानता :

हे धर्मदास! जब तक जीव अपने आपको 'नाम' में नहीं मिला लेता तब तक वह इस संसार में भटकता रहता है। जब वह निराकार प्रभु का ध्यान करके अपने आपको नाम में समा लेता है तो उसके सारे भ्रम दूर हो जाते हैं अगर कोई एक क्षण के लिए भी नाम में समा जाए तो उसकी महिमा का वर्णन नहीं हो सकता।

सब लोग नाम की बातें तो करते हैं लेकिन निराकार शब्द को बहुत कम लोग ही प्राप्त करते हैं। चाहे कोई चार युगों तक काशी में जाकर रहे लेकिन बिना 'शब्द' के वह नर्कों में ही जाएगा अगर कोई बद्रीधाम, गया और प्रयाग जैसी धार्मिक जगहों में स्नान कर ले और अड़सठ तीर्थों पर भी हो आए फिर भी 'शब्द-नाम' के बिना उसका भ्रम दूर नहीं हो सकता। मैं 'नाम' के बारे में और अधिक क्या कहूँ? नाम जपने से यम का डर दूर हो जाता है।

नाम लेने वाले को क्या मिलता है?

हे धर्मदास! जिसे सतगुरु से 'नाम' प्राप्त हो जाता है वह नाम की डोरी पकड़कर हंस बनकर सतलोक में चला जाता है। धर्मराय भी उसके आगे अपना सिर झुका देता है।

सार-शब्द क्या है?

हे धर्मदास! सार-शब्द निराकार रूप होता है यह पढ़ने-लिखने में नहीं आता। यह देह तत्व और प्रकृति से बनी हुई है। सार-शब्द बिना तत्व और बिना प्रकृति के होता है। चारों दिशाओं में शब्द की बातें होती हैं लेकिन सार-शब्द ही आत्मा को मुक्ति दे सकता है। सतपुरुष का नाम ही सार-शब्द है। सतपुरुष का सिमरन ही शब्द की पहचान है जो बिना जुबान सिमरन करके इसमें समा जाता है काल भी उससे डरता है।

सार-शब्द का रास्ता सूक्ष्म, आसान और पूर्ण है लेकिन कोई बहादुर ही इस रास्ते पर चल सकता है। यह न तो शब्द है न ही सिमरन है और न ही जप है। यह पूर्ण वस्तु है जिसे प्राप्त करके हम काल को जीत सकते हैं। आत्मा का स्थान दोनों आँखों के बीच थोड़ा सा ऊपर मस्तक में है, जहाँ ध्यान शब्द से टिकता है।

हे धर्मदास! तुम एक समझदार सन्त हो अब मैं तुम्हें शब्द की पहचान बताऊंगा जो मुक्ति देता है। जो अजपा जाप से जुड़ जाता है उसे वहाँ अनन्त पंखुड़ी का कमल दिखाई देता है; जब वह सूक्ष्म मंडल में प्रवेश करता है तो वहाँ से अगम अगोचर की ओर जाने वाले सत्य मार्ग पर चल पड़ता है; उसके अंदर प्रकाश हो जाता है। वही आदि पुरुष या सतपुरुष का निवास है। उसे पहचानकर आत्मा उसके पास जाती है और सतपुरुष इसे आदिधाम में पहुँचा देता है। आत्मा सतपुरुष की अंश है इसलिए इस जीव को 'सोहंग' कहते हैं।

सार-शब्द जपने की विधि:

हे धर्मदास! पूर्ण सतगुरु की दया से अजपा जाप को जपो और इसका अभ्यास करो। अपने मन को शांत करो, शब्द में ध्यान लगाओ और मन को जीतकर अपने कर्मों को समाप्त करो। उस स्थान पर पहुँचो जहाँ बिना जुबान के धुन हो रही है और बिना हाथों के माला फेरी जा रही है; सार-शब्द में समाकर जीव अनामी देश में पहुँच जाता है और सतपुरुष के दर्शन करता है। उस अगम पुरुष की शोभा अपार है। सतपुरुष के एक-एक रोम की रोशनी का मुकाबला करोड़ों सूरज और चन्द्रमा भी नहीं कर सकते। वहाँ पहुँचकर आत्मा का प्रकाश सोलह सूरजों के बराबर हो जाता है।

धर्मदास का आनन्द प्रकट करना:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! मैं अपने आपको आपके चरणों पर कुर्बान करता हूँ। आपने मेरे सभी दुःखों को दूर करके मुझे सुखी कर दिया है। मैं आपके वचनों को सुनकर ऐसे खुश हूँ जैसे अंधा आँखें पाकर खुश हो जाता है।''

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास! तुम एक पवित्र आत्मा हो जिसने मुझसे मिलकर अपने दुःखों को दूर कर लिया है। जिस तरह तुमने अपना घर-बार, धन-दौलत और पुत्रों को छोड़कर मुझसे प्यार किया है उसी तरह आगे भी जो शिष्य तन, मन, धन सतगुरु पर कुर्बान करके सतगुरु के चरणों को हृदय से प्यार करेंगे वे मुझे बहुत प्रिय होंगे; उन्हें कोई ताकत नहीं रोक सकेगी।

जो शिष्य अपने दिल में कपट रखकर बाहर चेहरे पर प्यार दिखाते हैं वे सतलोक कैसे पहुँचेंगे? गुरु को अपने अंदर प्रकट किए बिना वे मुझे नहीं पा सकते।''

धर्मदास द्वारा दीनता प्रकट करना:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! मैं बहुत गन्दा था। आपने मुझ पर दया की वर्षा की। आप खुद मेरे पास आए और मेरी बाँह पकड़कर आपने मुझे काल से बचा लिया।''

सृष्टि की उत्पत्ति

धर्मदास ने कहा, हे साहब! मैं प्यासा हूँ अमृत पिलाकर मेरी प्यास बुझाएं। मुझे यह बताएं कि अमरलोक कहाँ है? आत्मा का स्थान कहाँ है? आत्मा का भोजन क्या है? सतपुरुष कहाँ रहता है और शब्द कहाँ से आता है? सतपुरुष ने लोकों की रचना कैसे की? इन दीपों की रचना करने के लिए उसके मन में इच्छा कैसे हुई?

काल निरंजन कैसे पैदा हुआ, किस तरह सोलह पुत्रों का जन्म हुआ? किस तरह चार प्रकार की खानियाँ बनी? किस तरह आत्माओं को काल के हवाले किया गया? कूर्म और शेषनाग किस तरह पैदा हुए? मत्स्य और वरहा का अवतार कैसे हुआ? ब्रह्मा, विष्णु और महेश कैसे पैदा हुए? आकाश और धरती का निर्माण कैसे हुआ? चन्द्रमा, सूरज और तारामंडल की रचना कैसे हुई? हे साहब! सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में बताएं जिससे मेरा संदेह दूर हो जाए और मेरे मन को संतोष आ जाए?

हे सतगुरु! दया करके अपने इस दास को सृष्टि की उत्पत्ति की कथा बताइए। अपने शब्दों के अमृत से मेरे ऊपर प्रकाश कीजिए ताकि मेरे मन से यम का भय दूर हो जाए। हे सतगुरु! आपके वचन सत्य हैं और मुझे बहुत प्यारे हैं। आपकी दया का वर्णन नहीं किया जा सकता, यह मेरा सौभाग्य है जो आपने मुझे दर्शन दिए हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! मुझे तुम सही अधिकारी मिले हो इसलिए मैं तुम्हें सब भेद बताऊँगा। अब इस सृष्टि के आदि का वर्णन सुनो। मैं तुम्हें उत्पत्ति और प्रलय के बारे में भी बताऊंगा।''

आदि में क्या था?

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास सुनो! तब धरती, आकाश और पाताल नहीं थे। कूर्म, वराह, शेषनाग, सरस्वती, पार्वती और गणेश नहीं थे; उस समय काल निरंजन भी नहीं था। उस समय तैंतीस करोड़ देवी-देवता भी नहीं थे। उस समय ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी नहीं थे। उस समय वेद, शास्त्र और पुराण भी नहीं थे। उस समय ये सब सतपुरुष में समाए हुए थे जैसे कि बड़ के पेड़ के बीच में छाया समाई रहती है।

हे धर्मदास! शुरू में उत्पत्ति हुई जिसे कोई नहीं जानता। मैं तुम्हें किस चीज़ का उदाहरण दूं। सतपुरुष के बारे में वेद भी नहीं जानते क्योंकि वेद थे ही नहीं तो वे इस अकथ कथा का बखान कैसे कर सकते हैं?

वेद शुरूआत के भेद को नहीं जानते, सारा संसार वेदों के मत पर चलता है लेकिन ज्ञानी लोग उसका खंडन करके सच्चा रास्ता बताते हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति और सतपुरुष की रचना:

हे धर्मदास! उस समय सतपुरुष गुप्त था। उसने देह और पदार्थ का निर्माण नहीं किया था। जिस तरह चिकनाई कमल में छिपी रहती है उसी तरह निराकार सतपुरुष पुहुप(कमल) में था। जब सतपुरुष की इच्छा हुई उसने आत्माओं को रचा और उन आत्माओं को देखकर बहुत खुश हुआ।

सतपुरुष ने पहले शब्द को प्रकट करके दीपों और लोकों की रचना की। इन चार की रचना करके वह पुहुप दीप में सिंहासन बनाकर बैठ गया। वहाँ बैठकर सतपुरुष ने अपनी कला को धारण किया। उसमें से इच्छा की महक उत्पन्न हुई। सतपुरुष की इच्छा से अट्ठासी हजार दीपों की रचना हुई। सारे

दीपों में उसकी इच्छा की महक समाई हुई है, उसकी इच्छा की महक बहुत सुखदायी है।

सोलह सुत का प्रकट होना:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! सतपुरुष के दूसरे शब्द से **कूर्म** प्रकट हुए और उन्होंने सतपुरुष के चरणों में ध्यान लगा लिया।

सतपुरुष के तीसरे शब्द से **ज्ञान** नाम का बेटा प्रकट हुआ। उसने सतपुरुष के सामने आकर शीश झुकाया। सतपुरुष ने उसे दीपों में जाने की आज्ञा दी।

सतपुरुष के चौथे शब्द से **विवेक** नाम का बेटा प्रकट हुआ। सतपुरुष ने उसे भी दीपों में रहने की आज्ञा दी।

सतपुरुष ने पाँचवे शब्द का उच्चारण किया तो **काल निरंजन** का अवतार हुआ। वह सतपुरुष के तेज अंग से पैदा हुआ इसी कारण जीवों को कष्ट देता है। जीव सतपुरुष का अंश है। उनके आदि और अंत को कोई नहीं जानता।

सतपुरुष ने जब छठे शब्द का उच्चारण किया तो **सहज** प्रकट हुआ।

सतपुरुष के सातवें शब्द से **संतोष** उत्पन्न हुआ। सतपुरुष ने उसे भी दीप में स्थान दिया।

सतपुरुष ने आठवें शब्द का उच्चारण किया तो **सुरत** प्रकट हुआ। जिसे सुंदर दीप में स्थान दिया।

सतपुरुष के नौंवे शब्द से **आनन्द** और

सतपुरुष के दसवें शब्द से **क्षमा** का जन्म हुआ।

सतपुरुष के ग्यारहवें शब्द से **निष्काम** और

सतपुरुष के बारहवें शब्द से **जलरंगी** पैदा हुए।

सतपुरुष के तेरहवें शब्द से **अचिंत** उत्पन्न हुए।

सतपुरुष के चौदहवें शब्द से **प्रेम** उत्पन्न हुए।

सतपुरुष के पंद्रहवे शब्द से **दीन दयाल** का जन्म हुआ।

सतपुरुष के सोलहवें शब्द से **धैर्य** का जन्म हुआ।

सतपुरुष के सत्तरहवें शब्द से **योग सन्तायन** का जन्म हुआ। सोलह पुत्र एक ही मूल से पैदा हुए। शब्द से ही सारे बेटे, लोक व दीप बने। उन सभी अंशो अर्थात पुत्रों का भोजन दिव्य अमृत है। उन सबको अलग-अलग दीपों में स्थान दे दिया गया। उन अंशो अर्थात पुत्रों की अपार शोभा है।

सतपुरुष द्वारा बनाई गई इस अनन्त कला का वर्णन नहीं किया जा सकता। सतलोक के उजाले से सारे दीपों में प्रकाश रहता है। सतपुरुष के एक रोम में करोड़ो सूर्यो और चन्द्रमाओं का प्रकाश होता है।

सतपुरुष आनन्द के धाम हैं। वहाँ शोक, मोह और दुःख नहीं। सतपुरुष का दर्शन करके सारी आत्माएं वहाँ सुख भोग रही हैं।

काल का अधोपतन

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! इस तरह से बहुत दिन बीत गए। उसके बाद काल निरंजन ने एक खेल किया। उसने एक पैर पर खड़े होकर सत्तर युग कठिन भक्ति की इसलिए सतपुरुष उस पर खुश हो गए।''

तब सतपुरुष से आवाज उठी। हे धर्मराय! तुमने यह कठिन तपस्या क्यों की है? धर्मराय ने अपना सिर झुकाकर कहा, ''कृपया मुझे कोई और स्थान दीजिए जहाँ मैं रह सकूँ।'' तब सतपुरुष ने आदेश दिया कि हे मेरे बेटे! तुम मानसरोवर दीप में जाकर रहो।

धर्मराय बहुत खुश हुआ और मानसरोवर चला गया। जब वह वहाँ पहुँचा तो वह खुशी से भरपूर था। उसने सतपुरुष का ध्यान किया और फिर एक पैर पर खड़े होकर सत्तर युग तपस्या की। उसकी इस तपस्या को देखकर दयावान सतपुरुष को उस पर दया आ गई।

सतपुरुष की सहज से बातचीत:

सतपुरुष के होठों पर यह वचन आए, ''हे सहज! धर्मराय के पास जाओ और उससे पूछो कि उसने इस बार मेरा ध्यान क्यों किया है? उसने बहुत कठिन तपस्या की है इसलिए मैंने उसे तीनों लोकों का मालिक बना दिया था। तीनों लोकों को पाकर वह बहुत खुश था। उससे जाकर पूछो कि उसे अब क्या चाहिए? वह जो कुछ कहे मुझे आकर बताओ।''

सहज का निरंजन के पास जाना:

सहज धर्मराय के पास गया। सहज ने सिर झुकाकर कहा, ''हे भाई! सतपुरुष ने तुम्हारी तपस्या को स्वीकार किया है, अब तुम क्या चाहते हो, मुझे बताओ?''

निरंजन ने सहज से कहा, ''हे सहज मेरे बड़े भाई! मेरे मन में पिता के लिए बहुत अनुराग है। सतपुरुष को मेरी तरफ से विनती करो कि मुझे इतना छोटा स्थान पंसद नहीं। मुझे कोई बड़ा राज्य देवलोक या कोई अन्य संसार दें।'' धर्मराय की बात सुनने के बाद सहज सतपुरुष के पास गया और सारी बातें उन्हें बताई।

सहज के वचन सुनकर सतपुरुष ने कहा, ''मैं धर्मराय से बहुत खुश हूँ। मैंने उसे तीनों लोक दे दिए हैं। उससे कहो कि वह शून्य मंडल में जाकर अपनी रचना कर सकता है।''

निरंजन को सृष्टि रचना के साज की प्राप्तिः

सतपुरुष ने जो कुछ सहज से कहा था उसने वह सब धर्मराय को आकर बता दिया। काल निरंजन बहुत खुश हुआ लेकिन उसे थोड़ा आश्चर्य भी हुआ।

निरंजन ने सहज से कहा, ''हे सहज प्यारे! मैं अपनी रचना का निर्माण कैसे करूँ? दयालु सतपुरुष ने मुझे राज्य तो दे दिया लेकिन मैं इसका विस्तार कैसे करूँ? मुझे अगम भेद नहीं आता, दया करके इसका भेद बताएं। मैं आप पर कुर्बान जाता हूँ आप सतपुरुष से मेरी यह विनती करें कि मैं किस प्रकार नौं खंडों की रचना करूँ? हे प्रभु! मुझे वह साज-समान दीजिए ताकि मैं संसार की रचना कर सकूँ।''

तब सहज सतलोक गया और उसने बार-बार सतपुरुष को शीश झुकाकर प्रणाम किया। सतपुरुष ने कहा, ''हे सहज! तुम यहाँ क्यों आए हो? मुझे सब बातें बताओ?''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तब सहज ने काल निरंजन की प्रार्थना सतपुरुष के आगे रखी।'' सतपुरुष ने कहा, ''हे सहज! तुम मेरी बात सुनो। तुम धर्मराय को बताओ

कि रचना का सब सामान कूर्म के पेट के अंदर है। वह कूर्म के पास जाकर विनती करके उससे माँग ले।''

सहज फिर धर्मराय के पास गया और उसने सतपुरुष की आज्ञा को सुनाया कि तुम कूर्म के पास जाओ और तुम्हें जो कुछ भी चाहिए उससे माँग लो। जब तुम अपना शीश कूर्म के आगे झुका दोगे तो वह तुम पर दया करेगा।

धर्मराय का कूर्म के पास जाना:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! धर्मराय कूर्म के पास पहुँचा, उसके दिल में बहुत खुशी थी लेकिन मन में अहंकार था। वह कूर्म के सामने जाकर खड़ा हो गया लेकिन उसने न तो कूर्म को प्रणाम किया और न उसके आगे शीश ही झुकाया।'' कूर्म तो अमृत स्वरूप है और सदा सुख देने वाला है। अहंकारी काल ने कूर्म को धैर्यशाली और परम बलवान देखा। कूर्म का शरीर बारह *पालंग* का था और धर्मराय का शरीर छः *पालंग* का था।

(पालंग - एक लाख योजन चौड़ा और एक लाख योजन लम्बा। योजन - आठ कोस की दूरी। कोस- दो मील की दूरी। अतः एक पालंग = 16 लाख मील लम्बा और 16 लाख मील चौड़ा होता है।)

धर्मराय ने क्रोध में कूर्म के चारों ओर चक्कर लगाया और कूर्म से उत्पत्ति का सामान लेने की सोचने लगा। काल ने अपने नाखूनों से कूर्म के सिर पर वार किया। कूर्म के तीनों सिरों में से ब्रह्मा, विष्णु और महेश को पैदा करने वाली त्रिगुण शक्तियाँ (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) बाहर आई फिर उसके पेट को फाड़ डाला जिसमें से पाँच तत्व - हवा, आकाश, सूरज, चाँद, सितारे बाहर आए। जब काल ने कूर्म के सिर को खींचा तो पसीना निकला उस पसीने की बूँदे पृथ्वी पर इस तरह तैरने लगी जिस तरह दूध पर मलाई ठहर जाती है।

यह धरती वरहा के दाँतो पर टिकी है। धरती के ऊपर बहुत भयंकर हवाएं चलने लगी। आकाश को अंडे की तरह समझो जिसमें धरती को टिका हुआ मानो। कूर्म के पेट से उसके बेटे कूर्म का जन्म हुआ जिसके ऊपर शेषनाग और वरहा का स्थान है। शेषनाग के शीश पर धरती टिकी है उसके नीचे कूर्म पुत्र रहता है। कूर्म से उत्पन्न कूर्म पुत्र अंड में है जबकि असली कूर्म सतलोक में रहता है। वह वहाँ पहले की तरह ही सतपुरुष का ध्यान करता है।

कूर्म ने सतपुरुष से कहा, ''हे परम पिता! निरंकार अर्थात धर्मराय ने मेरे साथ जबरदस्ती की, वह मेरे शरीर पर चढ़ गया और उसने मेरा पेट फाड़ डाला। उसने आपकी आज्ञा का पालन नहीं किया।'' सतपुरुष ने कूर्म से कहा, ''वह तुम्हारा छोटा भाई है बड़ो को चाहिए कि वे छोटों के अवगुणों को माफ करके उनसे प्यार करें।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! सतपुरुष के वचन सुनकर कूर्म बहुत खुश हुआ वह तो अमृत के समान है और सदा आनन्द में मग्न रहता है।''

निरंजन ने हठ धारण किया और चौंसठ युगों तक एक पैर पर खड़े होकर सतपुरुष की तपस्या की। यह तपस्या उसने अपने स्वार्थ के लिए की क्योंकि वह रचना बनाकर पछता रहा था कि मैं इस रचना का विकास कैसे करूंगा, बिना बीज के स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताल लोक का क्या करूँगा? मैं क्या उपाय करूँ जिससे शरीर की रचना हो सके।

सहज का निरंजन के पास जाना:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! सतपुरुष दया के सागर हैं, आप धर्मराय की भक्ति से बहुत खुश हुए। सतपुरुष

ने सहज से कहा, ''हे सहज! तुम धर्मराय के पास जाओ। अब वह क्या नई चीज़ माँग रहा है वह जो माँगे उसे दे दो और उससे कहो कि सारे छल-कपट त्यागकर अपनी रचना का निर्माण करे।'' तब सहज सतपुरुष को प्रणाम करके काल निरंजन के पास गया। धर्मराय सहज को देखकर प्रसन्न हुआ और समझ गया कि सतपुरुष मेरी तपस्या से खुश हो गए हैं।

सहज ने कहा, ''हे धर्मराय! अब तुमने किसलिए यह तपस्या की है?'' तब धर्मराय ने शीश झुकाकर प्रणाम किया और कहा, ''मुझे कोई ऐसा स्थान दें जहाँ मैं अपनी रचना का निवास कर सकूँ।'' तब सहज ने कहा, ''हे धर्मराय! तुम्हें सतपुरुष ने सब कुछ दे दिया है जो कुछ कूर्म के पेट से निकला है वह सब तुम्हें देने का हुक्म दिया है। तुम्हें त्रिलोकी का राज्य भी दे दिया है। अब तुम निडर होकर सृष्टि की रचना कर सकते हो।''

तब निरंजन ने कहा, ''कृपा करके सतपुरुष को हाथ जोड़कर कहना कि मैं कोई दूसरा नहीं आपका दास हूँ। मैं सदा से ही आपका सेवक हूँ। मैं सदा सतपुरुष का ध्यान लगाता हूँ। आप मेरी तरफ से सतपुरुष से विनती करें कि सृष्टि की रचना कैसे करूँ।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! निरंजन ने जो कहा था सहज ने सब कुछ सतपुरुष को बता दिया। उसके बाद सहज सदा सुखकारी सतलोक में लौट गया। दयालु सतपुरुष गुण या अवगुण नहीं देखता सदा भक्ति के वश में रहता है।''

अद्या की उत्पत्ति:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तब सतपुरुष ने अपनी इच्छा से एक अष्टांगी कन्या को उत्पन्न किया। उस कन्या के आठ हाथ थे, वह सतपुरुष के बाँयी और खड़ी हो गई और

उसने सतपुरुष को शीश झुकाते हुए कहा कि हे सतपुरुष! मेरे लिए क्या आदेश है?''

सतपुरुष द्वारा अद्या को रचना का बीज देना:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! तब सतपुरुष ने उस कन्या से यह वचन कहे, ''हे पुत्री! तुम धर्मराय के पास जाओ मैं तुम्हें जो वस्तु देता हूँ उसको ग्रहण करके धर्मराय के साथ मिलकर सृष्टि की रचना करो।'' सतपुरुष ने उसे जीव का मूल बीज दिया, जिसका नाम 'सोहंग' है। जीव और सोहंग के बीच कोई अंतर नहीं। यह जीव सतपुरुष की अंश है। तब सतपुरुष ने जड़, चेतन और प्राण तीन शक्तियाँ उत्पन्न करके उनका मूल बीज बनाया।

जब सतपुरुष ने अष्टांगी कन्या को ये सब कुछ दे दिया तो वह मानसरोवर को चल पड़ी। उसी समय सतपुरुष ने सहज को बुलाया और उससे कहा, ''हे सहज! तुम धर्मराय के पास जाओ और उससे कहो कि उसे जिस वस्तु की जरूरत थी वह मैंने दे दी है। मैंने उसके पास मूल बीज भेज दिया है अब वह मानसरोवर में रहकर अपनी इच्छानुसार सृष्टि की रचना करे।'' तब सहज वहाँ चलकर आया जहाँ धर्मराय खड़ा हुआ था। सहज ने धर्मराय को सतपुरुष के सुंदर वचन सुनाए; धर्मराय ने सतपुरुष के वचनों को स्वीकार किया।

निरंजन द्वारा अद्या को निगलना व सतपुरुष का श्राप:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! सतपुरुष के वचन सुनकर धर्मराय मानसरोवर में आकर रहने लगा। जब उसने सुंदर कन्या को आते देखा तो उसका मन बहुत खुश हुआ। अष्टांगी कन्या को देखकर धर्मराय बहुत उत्तेजित हुआ और उसने कहा कि उस अनन्त सतपुरुष का कोई अंत नहीं। कन्या के अंगों को देखकर धर्मराय ने अपना धीरज खो दिया।''

हे धर्मदास! काल के स्वभाव के बारे में सुनो। काल ने उस कन्या को खा लिया। जब दुष्ट काल ने अद्या को खा लिया तो उस कन्या के मन में आश्चर्य हुआ उसने उसी क्षण सतपुरुष को पुकारा, ''हे सतपुरुष! काल निरंजन ने मुझे अपना भोजन बना लिया है।'' तब सहज धर्मराय के पास आया और उससे सुन्न मंडल वापिस ले लिया। फिर सतपुरुष को याद आया कि कूर्म के साथ क्या हुआ था काल ने किस तरह कूर्म के ऊपर हमला किया था। धर्मराय के इस चरित्र को देखकर सतपुरुष ने उसे श्राप दे दिया ।

सतपुरुष का श्राप:

हे धर्मराय! अगर तुम रोज एक लाख जीवों को खाओगे तो सवा लाख जीव और पैदा हो जाएंगे।

सतपुरुष ने सोचा! मैं काल का कैसे नाश करूँ? यह बहुत खतरनाक है जीवों को परेशान करेगा। मैं न तो इसका नाश कर सकता हूँ और न ही इसे रोक सकता हूँ। यह मेरे सोलह बेटों में से एक नालायक बेटा है अगर मैं इसे अपने अंदर समेट लूँगा तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा। अब मैं काल को यहाँ से निकाल दूँगा और वह फिर कभी मेरे देश सतलोक में नहीं आ सकेगा। मैं सदा इस वचन का पालन करूंगा।

काल को मानसरोवर से निकालना:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! सतपुरुष ने जोगजीत को बुलाया और उसे धर्मराय के चरित्र के बारे में बताया कि जोगजीत! जल्दी जाओ और काल को पीटकर मानसरोवर से भगा दो। अब वह मानसरोवर में नहीं रह सकता और सतलोक में कभी प्रेवश नहीं कर सकता। धर्मराय के पेट के अंदर कन्या है उससे कहो कि वह मेरे 'शब्द' को

याद करे और धर्मराय के पेट से बाहर आ जाए। कन्या को अच्छे कर्म का फल दिया जाएगा और हे जोगजीत! धर्मराय से कहो कि यह कन्या अब तुम्हारी है।''

जोगजीत सतपुरुष को शीश झुकाकर मानसरोवर जा पहुँचा। जब काल ने जोगजीत को आते देखा तो बहुत डर गया। निरंजन ने जोगजीत से पूछा कि तुम यहाँ क्यों आए हो? जोगजीत ने कहा कि हे धर्मराय! तुमने उस कन्या को खा लिया है। सतपुरुष ने मुझे आदेश दिया है कि मैं तुम्हें यहाँ से निकाल दूँ। फिर जोगजीत ने अद्या से कहा, ''तुम इसके पेट में क्यों हो? सतपुरुष के तेज का सिमरन करते हुए इसके पेट को फाड़कर बाहर आ जाओ।''

यह सुनकर धर्मराय का दिल क्रोध से भर गया और वह जोगजीत से लड़ पड़ा। जोगजीत ने ध्यान लगाया तो उसके अंदर सतपुरुष का तेज आ गया। सतपुरुष ने जोगजीत को काल के मस्तक पर वार करने के लिए कहा। जोगजीत ने सतपुरुष की आज्ञा के अनुसार उसके मस्तक पर प्रहार किया। काल उस लोक से दूर जाकर गिरा और कन्या उसके पेट से बाहर आ गई।

कन्या काल को देखकर डर गई। वह वहाँ खड़ी होकर इधर-उधर जमीन को देखते हुए सोचने लगी।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उत्पत्ति:

निरंजन ने कहा, ''हे अद्या सुनो! अब तुम मुझसे मत डरो, सतपुरुष ने तुम्हारी रचना मेरे लिए की है। आओ हम मिलकर सृष्टि की रचना करें। मैं पुरुष हूँ और तुम स्त्री हो।''

अद्या ने कहा, ''तुम इस तरह की बात क्यों करते हो तुम मेरे बड़े भाई हो। फिर तुमने मुझे अपने पेट में डाल लिया

इसलिए अब मैं तुम्हारी पुत्री हूँ। पहले रिश्ते में तुम मेरे बड़े भाई हो और अब तुम मेरे पिता हो अगर तुम मुझे बुरी नजर से देखोगे तो तुम्हें पाप लगेगा।''

निरंजन ने कहा, ''सुनो भवानी! मैं पाप और पुण्य से नहीं डरता क्योंकि पाप और पुण्य का जन्म मुझसे ही होता है। कोई मुझसे कर्मों का लेखा नहीं माँगेगा। मैं पाप और पुण्य को फैला दूँगा जो इसमें फँस जाएगा वह जीव हमारा हो जाएगा। तुम मेरी शिक्षा को मान लो। सतपुरुष ने तुम्हें मुझे दिया है, तुम मेरा कहना मानो।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! यह सुनकर वह औरत हँसी। वे एक-दूसरे से सहमत हो गए और बहुत खुश थे। वह मीठी आवाज में सुंदर वचन बोली और धर्मराय के साथ संबन्ध बनाने के बारे में सोचने लगी। उसके मीठे वचन सुनकर धर्मराय बहुत खुश हुआ और उसने उसके साथ संबन्ध बनाने का फैसला कर लिया।''

अद्या ने कहा, ''मेरे पास भोग इन्द्री नहीं है।'' धर्मराय ने अपने नाखून से उसका काम अंग बनाया। इस प्रकार सृष्टि उत्पत्ति का घृणित दरवाजा बन गया। नाखून के घात से खून बहने लगा और तभी से भोग-विलास क्रिया की उत्पत्ति हुई। दोनों ने तीन बार भोग-विलास की क्रिया की जिससे ब्रह्मा, विष्णु और महेश का जन्म हुआ। काल और अद्या की भोगविलास क्रिया से सारी सृष्टि की उत्पत्ति प्रारंभ हुई।

भवसागर की रचना

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! इसके बाद क्या हुआ उसे तुम अपने विवेक से समझो पाँचों तत्त्व-आग, हवा, पानी, धरती और आकाश को कूर्म के पेट से लिया और तीनों गुण-सतोगुण, रजोगुण और तमोंगुण को कूर्म के सिर से लिया इस प्रकार पाँच तत्त्वों और तीन गुणों को मिलाकर धर्मराय ने भवसागर की रचना को प्रारंभ किया।''

हे धर्मदास! धर्मराय ने पाँच तत्त्वों और तीन गुणों को मिलाकर अपनी प्रकृति का घोल बनाकर उसकी तीन बूँदे अद्या की भोग इन्दी में डाल दी। जिससे उसके तीन अंश पैदा हुए। तीन गुणों और पाँच तत्त्वों के मिलने से ही भवसागर की रचना हुई। पहली बूँद से ब्रह्मा पैदा हुआ उसे रजोगुण और पाँच तत्त्व दिए गए। दूसरी बूँद से विष्णु पैदा हुआ उसे सतोगुण और पाँच तत्त्व दिए गए। तीसरी बूँद से महेश पैदा हुआ उसे तमोगुण और पाँच तत्त्व दिए गए। पाँच तत्त्व और तीन गुणों से शरीर की रचना हुई इसलिए बार-बार इस संसार का नाश होता है, इसके आदि भेद को कोई नहीं जानता।

धर्मराय ने कहा, ''हे कामिनी! मेरी आज्ञा का पालन करो। तुम्हारे पास रचना का बीज है इसकी मदद से भवसागर की रचना करो। मैंने तुम्हें तीन पुत्र दिए हैं। तुम तीनों पुत्रों को लेकर राज्य करना। मैं अब अपना ध्यान सतपुरुष की सेवा में लगाना चाहता हूँ। तुम किसी को भी मेरा भेद मत बताना अगर कोई मुझे ढूंढ़ने की कोशिश करेगा तो उसका जीवन बेकार चला जाएगा। मेरे तीनों पुत्रों को भी कभी मेरे दर्शन नहीं होंगें। संसार में इस तरह के विचार फैला देना कि सतपुरुष का भेद कोई नहीं पा सकता। जब तीनों बेटे समझदार हो जाएं तो इन्हें सागर-मंथन के लिए भेज देना।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! निरंजन अद्या को सब कुछ समझाकर गुप्त हो गया। उसने अपना निवास सुन्न मंडल में कर लिया, उसके भेद को कौन जान सकता है? अब तुम मन को ही निरंजन समझो। जो अपने मन को जीतकर सतपुरुष के ज्ञान को प्राप्त कर लेता है ऐसे पुरुष में सतपुरुष स्वयं प्रकट हो जाता है।''

हे धर्मदास! सारे जीव बुद्धिहीन हो गए हैं। ये जीव काल को ही अगम समझते हैं। कर्मों के भँवरजाल में फँसकर जन्म के बाद जन्म लेते हुए दुःख-दर्द को सह रहे हैं। काल जीवों को दुःख देता है और उन्हें बहुत सारे कर्मों में लगा देता है काल चलाकी करता है और जीवों को फल भुगतना पड़ता है।

सागर मंथन व चौदह रत्नो की उत्पत्तिः

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! जब तीनों बालक समझदार हो गए तो उनकी माता ने उन्हें सागर मंथन के लिए भेज दिया। बालक खेल में मस्त थे सागर मंथन के लिए नहीं जाना चाहते थे। हे धर्मदास! सुनों और समझो, उस समय क्या हुआ? उस समय निरंजन ने योगाभ्यास किया जिससे बहुत तेज आँधी चलने लगी जब उसने साँस छोड़ा तो उसमें से वेद निकले। इस भेद को कोई विरला ही जानता है। तब वेदों ने निरंजन से विनती की और पूछा कि हमारे लिए क्या आदेश है? निरंजन ने वेदों से कहा, ''सागर में जाकर निवास करो जो तुम्हें ढूंढ लेगा तुम उसके पास रहना।''

यह आवाज कहाँ से आई यह नहीं देखा जा सका सिर्फ एक गहरी रोशनी दिखाई दी। वेद अपने प्रकाश से प्रकाशित थे जैसे कि सूर्य के प्रकाश से संसार प्रकाशवान होता है। वेद धर्मराय के बनाए सागर में आ गए। जब वेद सागर की गहराईयों में चले गए तो धर्मराय ने अद्या को गुप्त ध्यान से कहा, ''तुम

जल्दी तीनों बालकों को सागर मंथन के लिए भेजो, मेरे वचन का दृढ़ता से पालन करो।'' फिर वह खुद सागर में चला गया।

अद्या ने अपने तीनों पुत्रों को आशीर्वाद देते हुए कहा, ''मेरे बच्चो! जल्दी से सागर के पास जाओ, वहाँ तुम्हें बहुत सारा खज़ाना मिलेगा।'' ब्रह्मा ने माता की बात मान ली और सागर की तरफ चल पड़ा, दोनों भाई उसके पीछे चल पड़े।

तीनों बच्चे हंस के प्यारे-प्यारे बच्चों की तरह खेलते हुए जा रहे थे। एक-दूसरे को पकड़ते हुए, एक-दूसरे के पीछे भागते हुए वे अजीब ढंग से चल रहे थे। वे कभी चलते, कभी भागते, कभी हाथ हिलाते हुए खड़े हो जाते। वेद भी उस समय की सुंदरता को ब्यान करने के लिए वहाँ मौजूद नहीं थे। वे तीनों सागर के पास जाकर खड़े हो गए और सागर मंथन की युक्ति सोचने लगे।

पहली बार सागर मंथन :

जब तीनों ने सागर का मंथन किया तो उन्हें तीन वस्तुएं प्राप्त हुई। ब्रह्मा को वेद, विष्णु को तेज और महेश को विष मिला। वे तीनों वस्तुएं लेकर खुशी-खुशी अपनी माता के पास आए और उन्हें जो वस्तुएं मिली थी वे माता को दिखा दी। उनकी माता ने कहा कि तुम ये वस्तुएं अपने-अपने पास रखो।

दूसरी बार सागर मंथन :

अद्या ने कहा, ''हे पुत्रो! तुम दोबारा से सागर मंथन करो तुम्हें जो मिले उसे अपने पास रख लेना।'' उस समय अद्या ने एक कौतुक किया उसने तीन कन्याओं को पैदा किया। तीनों में ही उसका अंश था। जब तीनों बेटों ने फिर से सागर मंथन किया तो उन्हें तीन कन्याएं मिली। वे कन्याओं को प्राप्त करके बहुत खुश हुए। वे कन्याओं को साथ लेकर माता के

पास आए और अपनी माता के सामने सिर झुका दिया। माता ने कहा, ''हे पुत्रो! ये तीनों कन्याएं तुम्हारे लिए हैं। ब्रह्मा तुम सावित्री ले लो। विष्णु तुम लक्ष्मी ले लो और महेश तुम पार्वती ले लो।'' तीनों पुत्रों को कन्याएं देकर उनसे भोग-विलास करने की आज्ञा दे दी गई। तीनों स्त्रियों को पाकर इस तरह खुश थे जिस तरह रात्रि में चकोर चाँद को देखकर खुश होता है। तीनों भाई काम-वासना में खो गए। इस तरह से देव और दैत्यों का जन्म हुआ।

तीसरी बार सागर मंथन :

हे धर्मदास! मेरी बात को समझो, जो स्त्री थी वह माता हो गई। माता ने उन्हें फिर सागर मंथन के लिए कहा, ''जाओ देर मत करो सागर मंथन करो जिसे जो मिले वह उसे ले ले।'' तीनों पुत्रों ने फिर सिर झुकाया और कहा आपने हमें जो आज्ञा दी है हम वही करेंगे। इस प्रकार सागर मंथन से कुल चौदह रत्न निकले जिसे वे अपनी माँ के पास ले आए। ब्रह्मा को वेद, विष्णु को अमृत और महेश को विष मिला। तीनों भाई बहुत खुश थे।

अद्या व तीनों पुत्रों की कथा का वर्णन:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तब माता ने अपने पुत्रों से कहा कि तुम तीनों जाकर सृष्टि की रचना करो। अद्या ने अंडज की रचना की। ब्रह्मा ने पिंडज की रचना की। विष्णु ने उष्मज और महेश ने उद्भिज खानि की रचना की। चौरासी लाख योनियाँ बनाई गई। धरती को आधा पानी और आधी धरती रहने दिया।

अंडज - अंडे से पैदा होने वाले पक्षी सर्प आदि इनमें तीन तत्त्व हैं। **पिंडज** - मनुष्य आदि में पाँच तत्व पैदा किए पाँच तत्त्वों और तीन गुणों को मिलाकर मनुष्य को सुंदर रूप प्रदान किया गया। **उष्मज** - कीड़े मकोड़ो आदि में दो तत्त्व **उदभिज** - वनस्पति में एक तत्त्व।

जब ब्रह्मा ने वेदों को पढ़ा तो उसके मन में अनुराग जागा। उसे वेदों से पता चला कि एक सतपुरुष है वह निराकार है। वह सुन्न मंडल में ज्योति स्वरूप नजर आता है। उसे इस शरीर में रहते हुए नहीं देखा जा सकता। उसका सिर स्वर्ग में और उसके पैर पाताल में हैं। यह सब जानने के बाद ब्रह्मा मस्त हो गया। ब्रह्मा ने विष्णु से कहा, ''मुझे वेदों से आदि पुरुष का पता चला है।'' फिर ब्रह्मा ने महेश से भी कहा, ''वेदों का निचोड़ यह है कि सतपुरुष एक है लेकिन हम उसके भेद को नहीं जानते।''

ब्रह्मा अपनी माता के पास आया। उसके पैर छूते हुए उसने कहा, ''हे माता! मुझे वेदों से पता चला है कि विधाता कोई और है आप दया करके मुझे बताओ कि हमारे पिता कहाँ हैं?'' अद्या ने कहा, ''सुनो ब्रह्मा! तुम्हारा कोई पिता नहीं है, सब चीज़ो की उत्पत्ति मेरे द्वारा ही हुई है मैं ही इस सारी सृष्टि का पालन-पोषण कर रही हूँ।'' ब्रह्मा ने कहा, ''हे माता! ध्यान से सुनो वेद इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि एक सतपुरुष है जो गुप्त-रूप में है।'' अद्या ने कहा, ''हे मेरे बेटे ब्रह्मा! मेरे अलावा और कोई विधाता नहीं है; मैंने ही तीनों संसारों और सात सागरों की रचना की है।''

ब्रह्मा ने कहा, ''हे माता! मैं इस बात से सहमत हूँ कि इस सबकी रचना करने वाली आप हैं लेकिन वेद यह कहते हैं कि एक अलख निरंजन सतपुरुष है अगर आप ही इस सबकी विधाता हो तो वेदों में सतपुरुष का जिक्र क्यों है? आप मुझसे छल मत करें, सच्चाई बताएं? जब ब्रह्मा ने जिद्द की तो अद्या सोचने लगी कि अब क्या किया जाए?''

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! तब अद्या ने सोचा कि मैं इसे कैसे समझाऊँ? यह मेरी बात पर विश्वास नहीं

कर रहा अगर मैं इसे निरंजन के बारे में बता दूँ तो यह उसे किस तरह स्वीकार करेगा? निरंजन ने मुझसे कहा है कि कोई उसके दर्शन नहीं कर सकेगा अगर मैं इसे यह बताऊँ कि वह अलख है तो मैं इसे कैसे दर्शन करवाऊँगी? ध्यान से सोचते हुए उसने अपने पुत्र ब्रह्मा से कहा, ''अलख निरंजन तुम्हारे पिता है लेकिन तुम्हें उनके दर्शन नहीं होंगे। यह सुनकर ब्रह्मा बहुत व्याकुल हुआ उसने पिता के दर्शन करने का निश्चय कर लिया।''

ब्रह्मा ने कहा, ''माता! मुझे बताओ कि वह कहाँ है? अच्छाई या बुराई की चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे वचनों में विश्वास नहीं करता। पहले तुमने मुझसे झूठ बोला अब तुम कहती हो वह अपने दर्शन नहीं देता। मुझे उनके दर्शन अभी करवाओ मेरे सारे शक दूर करो।''

अद्या ने कहा, ''सुनो ब्रह्मा! मैं तुम्हें सच्चाई बताती हूँ उसका सिर सातवें स्वर्ग में और पैर नीचे सातवें पाताल में है अगर तुम उनके दर्शन करना चाहते हो तो अपने हाथ में एक फूल लेकर अपना सिर उनके चरणों में झुका दो।'' यह सुनकर ब्रह्मा माता के आगे सिर झुकाकर उत्तर दिशा की तरफ चल चल पड़ा और उसने निश्चय किया कि वह अपने पिता के दर्शन पाकर ही वापिस लौटेगा।

विष्णु भी माता से आज्ञा लेकर पिता के चरणों के दर्शन करने पाताल को चल दिया। महेश ने अपने ध्यान को भटकने नहीं दिया वह अपनी माता की सेवा में लगा रहा। जब बहुत दिन बीत गए तो अद्या को अपने बच्चों की चिन्ता सताने लगी।

विष्णु का वापिस लौट आना:

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि पहले विष्णु ने अपनी माता के पास वापिस आकर कहा, ''मैं अपने पिता के

दर्शन नहीं कर सका। शेषनाग के विष की ज्वाला से मेरा सारा शरीर श्याम वर्ण का हो गया, मैं परेशान होकर वापिस आ गया हूँ।'' यह सुनकर अद्या बहुत प्रसन्न हुई। अपना हाथ उसके सिर के ऊपर रखकर वह बोली, ''हे मेरे बच्चे! तुमने मुझसे सच कहा है।''

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा, ''हे सतगुरु! मेरा भ्रम दूर करो अब मुझे ब्रह्मा के बारे में बताओ? क्या उसे अपने पिता के दर्शन हुए या वह भी निराश होकर वापिस लौट आया? मुझे अपना सेवक समझते हुए मेरे जन्म को सफल बनाएं और बताएं कि इसके बाद क्या हुआ?''

ब्रह्मा की कथा:

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, हे धर्मदास! तुम मुझे बहुत प्यारे हो। मेरे वचनों को दृढ़निश्चय से मानते हुए अपने हृदय में रखना। ब्रह्मा अपने पिता के दर्शन करना चाहता था इसलिए उसे वहाँ पहुँचने में ज्यादा समय नहीं लगा। वह उस जगह पर पहुँच गया जहाँ सूरज और चंद्रमा नहीं सिर्फ सुन्न मंडल है। उसने बहुत तरह से प्रार्थना की और अपना ध्यान ज्योति में लगा दिया। उस सुन्न मंडल के बारे में विचार करने में उसके चार युग बर्बाद हो गए फिर भी उसे अपने पिता के दर्शन नहीं हुए।

अद्या की चिन्ता:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! जब चार युग तक ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन नहीं हुए, वह वापिस नहीं आया तो अद्या को चिन्ता हुई कि मेरा सबसे बड़ा पुत्र ब्रह्मा कहाँ है? वह कब वापिस आएगा, मैं आगे सृष्टि की रचना कैसे करूँ?''

गायत्री की उत्पति:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! अद्या ने अपने शरीर को रगड़कर उसकी मैल से एक लड़की की रचना की उसके अंदर अपनी शक्ति का अंश मिलाकर उस लड़की का नाम गायत्री रखा। गायत्री ने अपनी माता के चरणों को चूमा और दोनों हाथ जोड़कर विनती की, ''माता! आपने किस कारण मेरी रचना की है? मुझे बताओ ताकि मैं आपकी आज्ञा का पालन कर सकूँ?'' अद्या ने कहा, ''बेटी! ब्रह्मा तुम्हारा बड़ा भाई है। वह आकाश में अपने पिता के दर्शन करने गया है। उसे बता दो कि उसे अपने पिता के दर्शन कभी नहीं होगें, वह ऐसे ही जन्म बर्बाद न करे। उसे वापिस लाने के लिए जो कुछ भी करना पड़े वह करो।''

गायत्री ब्रह्मा की खोज में जाती है:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! गायत्री अपनी माता के वचनों को हृदय में लेकर उस रास्ते पर चली गई। वहाँ पहुँचकर उसने एक ज्ञानी पुरुष को देखा जिसकी आँखे बंद थी। कुछ दिनों तक वह वहाँ रही फिर वह उपाय सोचने लगी कि यह किस तरह जागेगा। मुझे अब क्या करना चाहिए? गायत्री ने अपनी माता में अपना ध्यान लगाया। गायत्री ने ध्यान में अद्या से आज्ञा प्राप्त की । अद्या ने कहा, ''तुम ब्रह्मा को स्पर्श करो जिससे ब्रह्मा जाग जाएगा।'' गायत्री ने वैसा ही किया उसने ब्रह्मा के चरण-कमलों को स्पर्श किया।

जब ब्रह्मा का ध्यान भंग हुआ वह जाग गया उसने गुस्से में व्याकुल होकर कहा, ''यह पापिन कौन है, जिसने मुझे समाधि से जगा दिया है? मैं तुम्हें श्राप दूँगा तुमने मेरा ध्यान भंग किया है।'' गायत्री ने कहा, ''पहले मेरी बात सुनो फिर श्राप देना। मैं तुम्हें सच्चाई बताती हूँ कि मुझे तुम्हारी माता ने तुम्हें लेने के लिए भेजा है; अब तुम जल्दी से चलो तुम्हारे

बिना रचना कौन रचेगा?'' ब्रह्मा ने कहा, ''मैं कैसे जा सकता हूँ मैंने अभी तक अपने पिता के दर्शन नहीं किए?'' गायत्री ने कहा, ''तुम्हें उसके दर्शन हो जाएंगे लेकिन अभी तुम मेरे साथ चलो नहीं तो पछताओगे।''

ब्रह्मा ने कहा, ''अगर तुम इस बात की गवाही दो कि मैंने अपने पिता के दर्शन कर लिए हैं और मेरी माता को इस बात का विश्वास दिलवा दो तो ही मैं तुम्हारे साथ चलने के लिए तैयार हूँ।'' यह सुनते ही गायत्री ने कहा, ''मैं झूठ नहीं बोलूंगी अगर तुम मेरी इच्छा पूरी करो तो मैं यह झूठ बोलने के लिए तैयार हूँ।'' ब्रह्मा ने कहा, ''अपनी बात मुझे अच्छी तरह से समझाओ?'' गायत्री ने कहा, ''अगर मेरे साथ भोग-विलास करो तो मैं झूठ बोलकर तुम्हें जितवा दूँगी बेशक यह स्वार्थ है, लेकिन मैं तुम्हें ऐसा करने के लिए कह रही हूँ कि तुम यह कार्य परमार्थ जानकर करो।''

यह सुनकर ब्रह्मा अपने दिल में विचार करने लगा कि अब मैं क्या करूँ? अगर मैं इसकी बात नहीं मानता तो मेरा काम नहीं होगा। यह मेरी गवाही नहीं देगी और मुझे अपनी माता के सामने शर्मिन्दा होना पड़ेगा। मुझे अपने पिता के दर्शन नहीं हुए अगर मैं पाप के बारे में सोचूँगा तो मेरा लक्ष्य पूरा नहीं होगा मुझे इसके साथ भोग-विलास करना ही होगा। ब्रह्मा ने गायत्री के साथ भोग-विलास किया और उसके मन से अपने पिता के दर्शनों की इच्छा समाप्त हो गई। दोनों के मन में अच्छे विचारों की जगह बुरे विचार आ गए।

सावित्री की कथा:

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! जब ब्रह्मा ने गायत्री को अपनी माता के पास चलने के लिए कहा तो गायत्री ने कहा कि मेरा यह विचार है कि मैं एक गवाह और बना लूँ।''

ब्रह्मा ने कहा, ''माता को विश्वास दिलवाने के लिए कुछ भी करो।'' गायत्री ने अपने शरीर से मैल उतारकर एक पुत्री को पैदा किया, उसमें अपना अंश मिलाकर उसे सावित्री नाम दे दिया। गायत्री ने सावित्री से कहा, ''तुम यह कहना कि ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन हुए हैं।'' सावित्री ने कहा, ''मैं इस बारे में कुछ नहीं जानती, मैं झूठी गवाही नहीं दूँगी।''

यह सुनकर वे दोनों बहुत चिन्तित हुए। गायत्री ने सावित्री को बहुत तरीकों से मनाने की कोशिश की पर सावित्री नहीं मानी। आखिर सावित्री ने कहा, ''अगर ब्रह्मा मेरे साथ भोग-विलास करे तो ही मैं झूठी गवाही दूँगी।'' गायत्री ने ब्रह्मा से कहा, ''इसके साथ भोग-विलास करो तो ही हमारा काम पूरा होगा।'' ब्रह्मा ने सावित्री के साथ भोग-विलास करके पापों का बोझ अपने सिर पर उठा लिया। सावित्री का ही दूसरा नाम 'पुहपावती' है। अब वे तीनों मिलकर माता अद्या के पास आए उन्होंने माता को प्रणाम किया।

अद्या द्वारा ब्रह्मा, गायत्री और सावित्री को श्राप:

अद्या ने कहा, ''हे ब्रह्मा! क्या तुमने अपने पिता के दर्शन कर लिए और तुम यह दूसरी औरत कहाँ से लाए हो''? ब्रह्मा ने कहा, ''हे माता! ये दोनों गवाह हैं कि मैंने अपने पिता के शीश के दर्शन अपनी आँखों से किए हैं।'' अद्या ने गायत्री से पूछा, ''क्या तुमने ब्रह्मा को अपने पिता के दर्शन करते हुए देखा है?'' गायत्री ने कहा, ''हे माता! ब्रह्मा ने अपने पिता के शीश के दर्शन कर लिए हैं; इसने अपने पिता के सिर पर पुष्प अर्पण किए, जल चढ़ाया। उन्हीं फूलों में से यह पुहपावती प्रकट हुई है।'' अद्या ने पुहपावती से पूछा, ''तुम मुझे सच बताओ कि ब्रह्मा ने किस प्रकार पिता के दर्शन किए हैं? पुहपावती ने कहा, ''हाँ माता! यह सच है ब्रह्मा ने पिता के

दर्शन किए हैं और अपने पिता को पुष्प अर्पित किए हैं।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''इन गवाहों की बातें सुनने के बाद अद्या बहुत हैरान हुई, उसे समझ नहीं आया कि इसके पीछे क्या रहस्य है ?'' अद्या ने सोचा! अलख निरंजन ने मुझे दृढ़निश्चय से कहा था कि कोई भी उसका दर्शन नहीं कर सकेगा। ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब अद्या ने ध्यान लगाया, ''हे अलख निरंजन! मुझे सच बताइए।'' निरंजन ने अद्या को ध्यान द्वारा बताया, ''ब्रह्मा को मेरे दर्शन नहीं हुए हैं। ब्रह्मा झूठे गवाह लेकर आया है। ये तीनों झूठ बोल रहे हैं इनकी बात पर विश्वास मत करो।''

यह सुनकर माता बहुत नाराज हुई और उसने ब्रह्मा को श्राप दिया कि कोई तेरी पूजा नहीं करेगा, तुमने झूठ बोला है, कुकर्म किए हैं तुम्हारे सिर पर नर्कों का बोझ है। तुम्हारे वंशज भी झूठ बोलेंगे, वे अंदर से पापी होंगे। वे लोगों को पुराणों की कहानियाँ सुनाएंगे मगर खुद उस पर अमल नहीं करेंगे। वे देवी-देवताओं की बहुत तरीकों से पूजा करेंगे और दक्षिणा के कारण अपने गले कटवाएंगे। जो लोग उनके शिष्य बनेंगे उन्हें कभी भी आध्यात्मिक खजाना नहीं मिलेगा। अपने निजि स्वार्थ को पूरा करने के लिए ज्ञान की बात सुनाएंगे और संसार में अपनी पूजा करवाएंगे। वे अपने आपको ऊँचा और दूसरों को नीचा मानेंगे। हे ब्रह्मा! तुम्हारा कुल कलंकित होगा। जब अध्या ने ब्रह्मा को श्राप दिया वह बेहोश होकर धरती पर गिर पड़ा।

अद्या ने कहा, ''गायत्री! अब तुम्हारी बारी है। तुम्हारे पाँच पति होंगे लेकिन तुम्हारा पति नपुंसक होगा। तुम्हारी कुल बहुत ज्यादा फैलेगी और नष्ट भी हो जाएगी। तुम कई बार जन्म लोगी और ऐसा खाना खाओगी जो खाने लायक

नहीं होगा। तुमने अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोला है। तुम झूठी गवाह क्यों बनी?'' गायत्री ने इस श्राप को स्वीकार कर लिया फिर अद्या सावित्री की तरफ देखने लगी।

अद्या ने कहा, ''हे पुहपावती! तुमने झूठ बोलकर अपना जन्म बर्बाद कर लिया है। तुम्हारा निवास गंदगी में होगा। नर्क में जाकर दु:ख भोगो। तुमने काम-वासना के लिए झूठ बोला है। जो तुम्हारा पालन-पोषण करेगा उसके वंश का नुकसान होगा। अब तुम केवड़ा-केतकी का अवतार लो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''तीनों को अपने मंद कर्मों के कारण श्राप मिला। औरत को काम-वासना की चीज बनाना भी काल की सबसे बड़ी चाल है। यहाँ तक कि ब्रह्मा, शिव, सनकादि और नारद भी इससे बच नहीं पाए। इनसे सिर्फ वही बच सकता है जो मन, वचन और कर्म से गुरु के चरणों से जुड़ा रहता है।'' तीनों को श्राप देकर अद्या बहुत पछताई। अद्या ने सोचा! अब निरंजन मेरे साथ क्या करेगा? मैं तो माफी के लायक भी नहीं हूँ।

अद्या को श्राप:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तब आकाशवाणी हुई कि हे भवानी! तुमने यह क्या किया? मैंने तो तुम्हें सृष्टि की रचना के लिए भेजा था। अगर कोई बड़ा होकर छोटे को सताता है तो मैं उसको बदला दिलवाता हूँ। द्वापर युग में तुम्हारे भी पाँच पति होंगे। जब भवानी ने श्राप के बदले में श्राप सुना तो वह चुप रही।''

विष्णु का साँवला होकर वापिस आना:

अद्या ने विष्णु को दुलार किया और कहा, ''मेरे प्यारे पुत्र! मुझे सच बताओ कि जब तुम अपने पिता के दर्शन करने

गए थे तब तुम गोरे थे, अब साँवले कैसे हो गए?'' विष्णु ने अद्या से कहा, ''हे माता! मैं अपने पिता के दर्शन करने के लिए अक्षत फूल हाथ में लेकर पाताल के रास्ते पर चल पड़ा। मैं शेषनाग के पास पहुँचा शेषनाग के विष के तेज से मैं झुलस गया और साँवला हो गया।''

उसी समय एक आवाज हुई। उस आवाज ने कहा, ''हे विष्णु! तुम अपनी माता के पास जाकर उसे सच्चाई बता दो। जब सतयुग, त्रेता युग बीतने के बाद द्वापर युग का चौथा हिस्सा आएगा तब तुम 'कृष्ण' के रूप में अवतार लोगे और शेषनाग से बदला लोगे। तुम कालिंदी नदी में जाकर शेषनाग को नचाओगे। अगर कोई ताकतवर अपने से कमजोर को सताता है तो उसका बदला मैं लेता हूँ।'' मैंने तुम्हारे पास वापिस आकर सच्चाई बता दी है कि मैंने अपने पिता के दर्शन नहीं किए। मेरा शरीर विष की ज्वाला से साँवला हो गया है।

विष्णु को ज्योति के दर्शनः

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! विष्णु के वचन सुनकर अद्या खुश हो गई। उसने विष्णु को गोद में ले लिया और उससे कहा कि मेरे प्यारे बेटे! अब मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के दर्शन कराऊँगी और तुम्हारे मन के भ्रम को मिटाऊंगी। सबसे पहले अपने ज्ञान की नज़र से देखो और मेरे वचनों को अपने हृदय में धारण करो। इस सृष्टि का कर्ता कोई नहीं है; स्वर्ग से लेकर पाताल तक मन का ही पसारा है। यह मन चंचल है दूर-दूर तक ले जाता है और एक क्षण में अनेक कलाएं दिखाता है। इस मन को कोई नहीं देख सकता। मन को ही निराकार समझो दिन-रात इसकी इच्छा में खुश रहो। अपने ध्यान को उलटकर मन को शून्य में लगाओ। जहाँ झिलमिल प्रकाश हो रहा है अपने साँस को रोककर गगन मंडल में

पहुँचो फिर आकाश मार्ग में ध्यान लगाओ। विष्णु ने अपने मन के साथ वैसा ही किया जैसा कि उसकी माता ने कहा था।

विष्णु ने श्वास को रोककर अपने अंदर की गुफा में ध्यान लगाया। उस समय आकाश में आँधी की एक लहर से तेज आवाज हुई। उस आवाज को सुनकर विष्णु का मन मग्न हो गया और उसमें कल्पना उठी। मन की कल्पना से उसे वहाँ शून्य में सफेद, पीले, हरे और लाल रंग के बादल दिखाई दिए। काल रूपी मन ने उसे वहाँ अपने आपको दिखाया। फिर उसे रोशनी दिखाई दी जिसे देखकर विष्णु बहुत खुश हो गया। विष्णु ने अपनी माता के सामने पूरी दीनता और निर्भरता से अपना सिर झुकाकर कहा, ''हे मेरी माता! तुम्हारी कृपा से मैंने परमपिता परमात्मा के दर्शन कर लिए।''

अद्या का छल:

धर्मदास ने कबीर साहब के चरणों को पकड़कर कहा, ''हे साहब! मैं इस बात पर कशमकश में हूँ कि अद्या ने विष्णु को मन का ध्यान बताया, क्या इसी तरह से सब जीवों को भ्रम में डाला गया है?''

कबीर साहब ने कहा कि हे धर्मदास! यह काल का स्वभाव है। विष्णु को सतपुरुष का भेद नहीं मिला। अद्या का खेल देखो! उसने अमृत को छिपाकर बड़ी चालाकी से अपने पुत्र को भी विष दे दिया। ज्योति और काल में अंतर नहीं। तुम सच को समझने के बाद सच्चे धर्म से जुड़ जाओ।

यह काल का चरित्र है कि जो कुछ उसके हृदय में है वह बाहर भी वही करता है। जिस तरह दीपक को देखकर पतंगा उसके पास आता है क्योंकि वह ज्योति को अपना प्यारा समझता है लेकिन जैसे ही पतंगा दीपक को छूता है राख बन जाता है।

वह अनजाने में ही अपनी जान गँवा देता है। इसी तरह काल ज्योति स्वरूप है; यह क्रूर काल किसी को नहीं छोड़ता। इसने विष्णु के करोड़ों ही अवतारों को खा लिया; ब्रह्मा और महेश को भी तकलीफें देने के बाद उन्हें अपना खाज बना लिया। काल जीवों को इतने कष्ट देते है कि मैं उनका वर्णन नहीं कर सकता। यह कसाई काल इतना निर्दयी है कि यह रोज एक लाख जीवों को अपना खाज बना लेता है।''

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा, ''हे मेरे सतगुरु! मेरे मन में एक संदेह आ गया है कि अद्या को सतपुरुष ने बनाया था फिर धर्मराय ने अद्या को निगल लिया और वह सतपुरुष की अपार दया से ही बाहर आई थी। उसी अद्या ने ऐसा छल किया कि सतपुरुष को छिपाकर धर्मराय को प्रकट किया। उसने अपने पुत्रों को भी सतपुरुष का भेद नहीं बताया, उन्हें भी काल निरंजन के ध्यान में लगा दिया। अद्या ने ऐसा क्यों किया? वह सतपुरुष को त्यागकर काल की साथी हो गई।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! स्त्री के स्वभाव को सुनो। मैं तुम्हें सब समझाऊंगा। यह जिस घर में पुत्री होकर जन्म लेती है वहाँ इसका अनेक प्रकार से पालन-पोषण होता है। घर के लोग इसे पराया समझकर मान देते हैं। माता पिता यज्ञ करवाकर वस्त्र, बिस्तर आदि देकर इसे पति के साथ भेज देते हैं। जब यह पुत्री अपने पति के घर जाती है तो पति के रंग में रंगकर अपने माता-पिता को भी भूल जाती है। धर्मदास यह स्त्री का स्वभाव है। इसी तरह अद्या भी पराई हो गई, काल का एक अंग बन गई इसलिए इसने विष्णु को सतपुरुष दिखाने की बजाय काल का रूप दिखा दिया।''

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा, ''हे साहब! अब मुझे इस सबका भेद पता चल गया है, बताएं इसके बाद क्या हुआ?''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''अद्या ने ब्रह्मा के घमंड को तोड़ दिया और अपने पुत्र विष्णु को बुलाकर कहा कि तुम मेरा आशीर्वाद लो। तुम सब देवताओं में सबसे ज्यादा पूजे जाओगे। तुम्हारे मन में जो भी इच्छा होगी मैं उसे पूर्ण करूँगी। मेरा बड़ा पुत्र ब्रह्मा दुष्ट निकला क्योंकि उसे झूठ और बुरी आदतों से प्यार था। अब तुम सभी देवताओं में सर्वोच्च रहोगे सब तुम्हारी पूजा करेंगे।

अद्या का महेश को आशीर्वाद देना:

फिर अद्या छोटे पुत्र महेश के पास गई। माता को देखकर महेश बहुत प्रसन्न हुए। फिर माता ने महेश से कहा, ''हे मेरे प्यारे पुत्र! तुम बताओ तुम्हारे दिल में क्या है? तुम्हें जो भी अच्छा लगता है वह माँगो मैं तुम्हें वही दूंगी।'' महेश ने अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा, ''माता! मैं वही करूँगा जो आप मुझे आदेश देंगी। मैं सिर्फ यही वरदान माँगता हूँ कि मेरे शरीर का कभी नाश न हो।''

अद्या ने कहा, ''ऐसा कभी नहीं हो सकता कोई अमर नहीं हो सकता अगर तुम योग और तपस्या करोगे तो तुम्हारा शरीर चार युगों तक रहेगा। जब तक धरती और आकाश है तुम्हारे शरीर का कभी भी नाश नहीं होगा।''

धर्मदास ने विनती की, ''हे ज्ञानी! अब मुझे ब्रह्मा के बारे में बताएं कि अद्या से श्राप मिलने के बाद ब्रह्मा ने क्या किया?''

कबीर साहब ने कहा, ''जब विष्णु और महेश को वरदान मिले तो वे बहुत खुश हुए। श्राप मिलने के बाद ब्रह्मा ने बहुत दु:खी होकर विष्णु से कहा, ''तुम मेरे भाई हो और देवताओं में सर्वोच्च हो, तुम पर माता की कृपा है। हे भाई! मुझे श्राप मिला हुआ है। मैं अपने कर्मों की वजह से पछता रहा हूँ। माता

को कैसे दोष दूँ? अब कुछ ऐसा करो जिससे माता के वचनों पर चलते हुए मेरा वंश भी चलता रहे।''

विष्णु ने कहा, ''हे भाई! तुम अपने मन से डर निकाल दो। तुम मेरे बड़े भाई हो जो भी मेरा भक्त होगा वह तुम्हारे परिवार की भी सेवा करेगा। मैं संसार में ऐसा विश्वास फैला दूँगा कि मैं ब्राह्मण के बिना किए गए यज्ञ और पूजा को स्वीकार नहीं करूँगा। जो ब्राह्मण को पूजेंगे वे अच्छा काम कर रहे होंगे, वही मुझे प्यारे होंगे। मैं उन्हीं को अपने लोक में स्थान दूँगा।'' अपने भाई के मुँह से यह सुनकर ब्रह्मा ने खुश होकर कहा कि तुमने मेरे मन की पीड़ा को खत्म कर दिया है।

काल का प्रपंच :

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! यह सब काल का पसारा है। इसने सारे संसार को ठग लिया है। काल जीवों को आशा देकर धोखे में डालता है फिर जन्म के बाद जन्म देकर उन्हें सताता है। बाली, हरिश्चन्द्र, वेणु वैरोचन और कुन्ती के पुत्र पांडव बहुत अच्छे और दानी राजा हुए हैं काल ने उन्हें कौन सा लोक दिया? ये सभी काल के आधीन हुए काल ने अपने बल से सबकी बुद्धि को हर लिया। जीव मन की लहरों में आकर अपने निज घर जाने का रास्ता भूल गया।

धर्मदास ने कहा, ''हे गुसाईं! आपने मुझे उस समय की कथा समझाकर कही है। मैंने आपकी कृपा से यम का छल जान लिया है और अपने मन को मजबूती के साथ आपके चरणों में लगा लिया है। आपने मुझे इस भवसागर में डूबने से बचा लिया है। अब आप मुझे वह कथा समझाकर कहें कि उनके श्रापों का अंत किस तरह हुआ?''

गायत्री का अध्या को श्राप :

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि धर्मदास! अब मैं तुम्हें अगम पुरुष का ज्ञान समझाऊँगा। गायत्री ने माता का श्राप स्वीकार करके फिर माता को श्राप दिया, ''अगर मैं पाँच पुरुषों की पत्नी बनूँगी तो तुम उनकी माता बनोगी। तुम बिना पुरुष के संतान को जन्म दोगी जिसे सारा संसार जानेगा।'' इस तरह दोनों ने ही श्रापों का फल भोगा और उन्होंने उचित समय मानव देह को धारण किया।

स्थूल जगत की रचना

चार तरह के खानियों की उत्पत्ति:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! इन सब घटनाओं के बाद स्थूल जगत की रचना हुई। इस बार चौरासी लाख योनियों व चार खानियों का निर्माण हुआ। सबसे पहले अद्या ने अंडज की रचना की, ब्रह्मा ने जेरज की रचना की, विष्णु ने उष्मज (नमी)से जन्म लेने वालों की रचना की और महेश ने स्थावर(बीज से)जन्म लेने वालों की रचना की।

फिर चारों खानियों की रचना करके जीवों को इनमें बाँध दिया गया, इस तरह से जीवों के शरीर बनाए गए। अब तुम जान लो कि इनकी रचना करने वाला कौन है? इस प्रकार चारों खानियों का चारों दिशाओ में विस्तार होने लगा।

चौरासी लाख योनियों की गणना :

धर्मदास ने अपने दोनों हाथ जोड़ते हुए कहा, ''हे सतगुरु! मुझे आपने चारों खानियों की उत्पत्ति के बारे में सब प्रकार से समझा दिया है अब मुझे चौरासी लाख योनियों व उनके विस्तार के बारे में बताएं?''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! नौ लाख प्रकार के जल के जीव, चौदह लाख प्रकार के पक्षी, सत्ताईस लाख प्रकार के कीड़े, तीस लाख प्रकार के पेड़-पौधे, चार लाख प्रकार के पशु, मनुष्य, देवता और प्रेत हैं; जिनमें मनुष्य देह सबसे उत्तम है। दूसरी योनियों में जीव परमात्मा को नहीं समझ सकते, कर्मों के बंधन में बंधे हुए भटकते रहते हैं।''

इंसानी योनि सर्वोच्च क्यों है?

धर्मदास ने अपना सिर कबीर साहब के चरणों में झुकाकर

विनती की, ''सारी योनियों के जीवों का जन्म समान रूप से हुआ है फिर इनमें एक जैसा ज्ञान क्यों नहीं है? मुझे समझाकर कहिए ताकि मेरे मन का संदेह दूर हो जाए?''

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास सुनो! तुम मेरे अपने सुंदर अंश हो। मैं तुम्हें सब समझाकर कहूँगा। चारों खानियों के जीवों की उत्पत्ति समान है। बीज से जन्मे जीवों में पानी का एक तत्व है। नमी से जन्मे जीवों में हवा और आग दो तत्व हैं। अंडज से जन्मे जीवों में पानी, हवा और आग तीन तत्व हैं। जेरज से जन्मे जीवों में पृथ्वी, आग, पानी और हवा चार तत्व हैं। इंसानी जामें में पृथ्वी, आग, पानी, हवा और आकाश पाँच तत्व होते हैं जिस वजह से इंसान को ज्यादा ज्ञान होता है। इस नर देही को परमात्मा ने भक्ति के लिए बनाया है। इंसान नाम लेकर सतलोक जा सकता है।''

सब मनुष्यों का ज्ञान एक समान क्यों नहीं ?

धर्मदास ने कहा, ''हे भवसागर से छुड़ाने वाले सतगुरु! कृपया मेरा यह भ्रम दूर करें कि सब पुरुष और स्त्रियों में एक ही तत्व होते हैं लेकिन सबमें एक समान ज्ञान क्यों नहीं होता? कुछ लोगों में दया, शील, संतोष, क्षमा आदि गुण भरपूर होते हैं और कुछ लोगों में ये गुण नहीं होते। कुछ लोग अपराधी होते हैं, कुछ लोग शीतल स्वभाव के होते हैं। कुछ लोग काल की तरह क्रूर होते हैं और कुछ लोग दूसरों को मारकर खा जाते हैं। कुछ लोगों के हृदय में दया होती है। कुछ लोग परमात्मा के ज्ञान की बातें सुनकर खुश होते हैं और कुछ को काल के गुणगान गाना ही अच्छा लगता है। हे साहब! मनुष्य में ये अलग-अलग गुण क्यों होते हैं?''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''धर्मदास! मैं तुम्हें स्त्री और पुरुष के अंदर के गुणों के बारे में बताऊँगा कोई

मनुष्य ज्ञानी और कोई अज्ञानी होता है। जो आत्माएं शेर, साँप, कुत्ता, लोमड़ी, कौवा, गिद्ध, सूअर, बिल्ली आदि के शरीर से आती हैं वे ऐसा खाना खाती हैं जो खाने लायक नहीं होता। ऐसे मनुष्यों को बुराईयों से भरा हुआ इंसान समझो, वे पिछले जन्म का स्वभाव नहीं छोड़ते। बहुत अच्छे कर्म ही उन्हें मुक्त करवा सकते हैं। इसी वजह से वे इंसानी जामें में रहते हुए भी जानवरों जैसा व्यवहार करते हैं। आत्मा जिस भी शरीर से आई है उसका स्वभाव उसी मुताबिक होता है। वे पापी, हिंसात्मक और हत्यारे होते हैं और विष की पूजा करते हैं इनमें जो अवगुण होते हैं वे कभी नहीं जाते।''

योनि प्रभाव का दूर होना :

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! जब कोई सतगुरु से मिलकर ज्ञान प्राप्त करता है तो अपने अवगुणों को भूल जाता है। जब आत्मा को सतगुरु के ज्ञान रूपी रेगमाल से रगड़ा जाता है तो आत्मा की जंग हट जाती है। जिस तरह एक धोबी कपड़े धोने के लिए साबुन का इस्तेमाल करता है जिन कपड़ो में थोड़ा मैल होता है उन्हें धोने में कम मेहनत लगती है और जिन कपड़ो में बहुत ज्यादा मैल होती है उन्हें धोने में ज्यादा मेहनत लगती है। मनुष्य का स्वभाव इसी तरह है शुद्ध आत्माएं थोड़े ज्ञान से ही समझ जाती हैं।

चार खानियों से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान :

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु! यह तो आपने थोड़ी सी ही योनियों का विवरण बताया है। अब आप मुझे सब प्रकार की खानियों के लक्ष्ण बताएं। जो आत्माएं चारों खानियों से मनुष्य योनि में आती हैं उनके अलग-अलग लक्ष्ण बताएं?''

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास! ध्यान लगाकर सुनों

मैं तुम्हें चारों खानियों के गुणों को बताता हूँ। चारों खानियों में भटकने के बाद जीव को मनुष्य की देह मिलती है। मनुष्य देह मिलने से पहले वह जो देह छोड़कर आता है उसी के अनुसार उसे ज्ञान होता है। अब मैं तुम्हें पहले जन्म की देही के अनुसार मिले मनुष्य देही के गुण व अवगुण बताऊँगा।''

अंडज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचानः

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! मैं सबसे पहले अंडज खानि से आए जीवों के बारे में बता रहा हूँ। इन जीवों में आलस्य, नींद, काम, क्रोध, गरीबी आदि होती है। ये मैले वस्त्र पहनते हैं और स्नान नहीं करते। इनकी आँखों में कीचड़ भरा होता है और मुख से लार टपकती है। इनका मन जुआ खेलने में लगता है। इनको चोरी करना व चंचलता अच्छी लगती है। इनमें माया की इच्छा होती है। इनको चुगली निन्दा करना अच्छा लगता है। ये खुद के घर में स्वयं ही आग लगाते हैं। ये कभी रोते हैं कभी खुशी के गीत गाते हैं। ये भूतों-प्रेतों की सेवा करते हैं। जब किसी को दान देता देखते हैं तो मन में दुखी होते हैं। ये बहस करते हैं और ज्ञान-ध्यान को मन में नहीं आने देते। ये किसी गुरु या सतगुरु को नहीं मानते, वेद-शास्त्रों को दूर फैंक देते हैं। ये गुरु चरणों की महानता कभी नहीं समझते। इनका सिर झुका होता है इनकी टाँगे लम्बी होती है और ये अक्सर सोते रहते हैं।

उष्मज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचानः

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें उष्मज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान बताता हूँ। ये शिकार करके जीवों को मारते हैं ऐसा करने में इन्हें बहुत आनन्द मिलता है; ये जीवों को मारकर घर लाते हैं और उन्हें पकाकर खाते हैं। ये नाम और ज्ञान की निन्दा करते हैं। ये

शब्द-गुरु, पूजा-पाठ आदि की निन्दा करते हैं। ये सभा में जाकर झूठ बोलते हैं। इनके मन में दया व धर्म नहीं होता। ये टेढ़ी पगड़ी बाँधकर उसका एक छोर लटकता हुआ छोड़ते हैं। ये माथे पर तिलक व चंदन लगाते हैं और सुंदर कपड़े पहनकर बाजार में घूमते हैं। इनके हृदय में पाप होता है लेकिन ऊपर से दया दिखाते हैं। इनके दाँत लम्बे, मुख भयानक और आँखे पीली व गहरी होती हैं। ऐसे जीव यम के हाथों में पड़ते हैं।

उदभिज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचानः

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें उद्भिज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान बताऊंगा। आत्मा पूर्व जन्म के जामें के अनुसार शरीर धारण करती है। ऐसे जीवों की बुद्धि चलायमान होती है; ये विचार बदलते देर नहीं लगाते। ये लम्बे कुर्ते, कमरबन्द और सिर पर पगड़ी बाँधते हैं। ये राजदरबार में सेवा पसंद करते हैं। घोड़े की सवारी करते हैं और अपनी कमर में तीन तलवारे बाँधकर रखते हैं। ये आँखों के इशारों से अपने आपको व्यक्त करते हुए दूसरे आदमियों की पत्नियों के साथ प्रणय चेष्टा करते हैं। ये बहुत ही मिठास से बोलते हैं इनके अंदर काम होता है। ये दूसरों के घरों में झाँकते हैं जब पकड़े जाते हैं तो इन्हें राजा के पास लाया जाता है। जब लोग इन पर हँस रहे होते हैं तब भी इन्हें शर्म महसूस नहीं होती।

ये एक क्षण भक्ति और दूसरे ही क्षण सेवा करने लगते हैं। ये एक क्षण बड़े ध्यान से धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं और दूसरे ही क्षण नाचना शुरू कर देते हैं। एक क्षण बहुत हिम्मत वाले होते हैं दूसरे ही क्षण डरपोक बन जाते हैं। ये एक क्षण बहुत ईमानदार होते हैं और दूसरे ही क्षण दूसरों के ऊपर बहुत से आरोप लगाने शुरू कर देते हैं। एक क्षण धार्मिक

होने का नाटक करते हैं दूसरे ही क्षण बुरे कर्म करते हैं। ये भोजन करते हुए माथे पर खुजली करते हैं और बाँहो व जाँघों को रगड़ते हैं। ये भोजन करने के बाद सो जाते हैं अगर कोई इन्हें उठाता है तो उसे मारने के लिए दौड़ते हैं। इनकी आँखें हमेशा लाल रहती हैं।

धर्मदास! इन योनियों से आने वाले जीवों का मन कभी भी स्थिर नहीं रहता। ये जो कुछ भी हासिल करते हैं उसे एक क्षण में गँवा देते हैं। ऐसे जीव जब सतगुरु से मिलते हैं तो सतगुरु उनके पिछले जन्मों के सब असर खत्म कर देता है। जब ये जीव गुरु के चरणों में अपने आपको समर्पित कर देते हैं तो गुरु इन्हें सतलोक भेज देता है।

पिण्डज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! अब तुम पिण्डज खानि से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान सुनो। ये सन्यासी की तरह चुप रहते हैं और धार्मिक किताबों को पढ़ने के बाद ही धार्मिक कार्य करते हैं। ये धार्मिक स्थानों पर जाकर समाधि लगाते हैं। ये वेदों और पुराणों की बातें करते हैं और लोगों के समूह में बैठकर अच्छी बातें करते हैं। ये राज सुख व पत्नी सुख भोगते हैं। इनके मन में संदेह नहीं होता। इन्हें दौलत की खुशी पसंद होती है। ये आरामदायक बिस्तर पर सोते हैं। इन्हें अच्छा खाना पसंद होता है अक्सर लौंग और पान खाते हैं। ये अपना बहुत सा पैसा दान करने में खर्च करके अपने ह्रदय को पवित्र करते हैं। इनकी आँखें चमकीली व शरीर मजबूत होता है। ये हमेशा ही मूर्तियों के सामने झुकते हैं। ये बहुत ही नम्रता वाले जीव होते हैं। ये रात-दिन सतगुरु के चरणों में ध्यान लगाकर 'शब्द' के रास्ते पर चलते हैं।

इंसानी जामें से इंसानी जामें में आए जीवों की पहचान:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब उन जीवों के के बारे में सुनो जो इंसानी जामें से इंसानी जामें में आते हैं।'' धर्मदास ने कहा, ''हे मेरे स्वामी! मेरे मन में एक संदेह आ गया है आपने पहले बताया था कि चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद इंसानी जामा मिलता है। अब आप यह नई बात कह रहे हैं मुझे इसका भेद बताएं कि यह कैसे संभव हैं? यह कहकर धर्मदास ने कबीर साहब के चरण पकड़ लिए।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! जो इंसान अपने समय से पहले मर जाता है वह इंसानी जामें में दोबारा से आता है। जो मूर्ख इस बात को नहीं समझते वे इसे जलते दीपक की बत्ती से समझ सकते हैं अगर तेल से भरा हुआ दीपक आंधी के झोंके से बुझ जाए तो उसे दोबारा से जला दिया जाता है। इसी तरह से आत्मा दोबारा से इंसानी जामें में आती है। मैं तुम्हें ऐसे जीवों के लक्षण बताता हूँ।

ऐसे इंसान दूसरे इंसानों से बहादुर होते हैं, भय कभी भी इनके पास नहीं आता। ये माया और सांसारिक चीजों की तरफ आकर्षित नहीं होते। इन्हें देखते ही इनके दुश्मन काँपने लग जाते हैं। ये सच्चे शब्द में विश्वास रखते हैं इन्हें निन्दा के बारे में कोई ज्ञान नहीं होता। ये हमेशा ही सतगुरु के लिए प्यार रखते हैं और दीनता से बोलते हैं। ये ज्ञान की खोज करते हैं और लोगों को जाहिर नहीं होने देते। ये लोगों को सच्चे 'नाम' के बारे में बताते हैं। धर्मदास! जिस इंसान में ऐसे लक्षण हों उसे इंसानी जामें से आया हुआ समझो।

जो 'शब्द' प्राप्त कर लेता है वह जन्म-मरण के बंधन से मुक्त हो जाता है। जो जीव नाम का सिमरन करता है वह सीधा सतलोक जाता है। जो जीव गुरु के शब्द में पूर्ण विश्वास कर लेता है वह अमृत की तरह अमूल्य हो जाता है। जिस

आत्मा पर 'नाम' की छाप होती है उसे काल नहीं रोकता।

चौरासी लाख योनियों की धारा बनने के कारण:

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु! आपने मुझे चार खानियों से आए जीवों के बारे में बता दिया है। अब मैं जो कुछ भी पूछूँ कृपया उसके बारे में बताएं कि चौरासी लाख योनियों की धारा किस कारण बनाई गई है? क्या यह मनुष्य के लिए बनाई गई है या दूसरे जीवों के कर्मों का भुगतान करने के लिए बनाई गई है? हे साहब! कृपा करके मुझे शीघ्र ही सब कुछ बताएं?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! इंसानी जामा बहुत ही अच्छा है। सिर्फ इंसानी जामें में ही गुरु भक्ति की जा सकती है। चौरासी लाख योनियों को भुगतने के बाद ही इंसानी जामा मिलता है फिर भी यह मूर्ख अपनी पिछली योनियों की आदतों को नहीं छोड़ता, सच्चे नाम की तरफ नहीं लगता लगातार काल के मुँह में जाता है। इसे हर बार समझाया जाता है लेकिन यह फिर चौरासी लाख की धारा में चला जाता है अगर इंसानी जामें में 'शब्द-नाम' को प्राप्त कर ले तो अपने निज-धाम वापिस जा सकता है।''

अगर जीव आदिनाम शब्द को मजबूती से हृदय में धारण कर ले तो इस जामें से ऊपर उठकर सिमरन के प्रसाद को प्राप्त कर ले तो गुरु की कृपा से सतलोक के मार्ग पर चल पड़ता है। यह कौवे की चाल छोड़कर हंस की चाल को पाकर दूध और पानी को अलग कर लेता है अर्थात सत्य असत्य को समझ जाता है। इस तरह की आत्मा सच्चे गुरु को पहचान लेती है। धुनात्मक शब्द ही सार है जो वर्णात्मक नाम से प्राप्त होता है; धुनात्मक शब्द पाँच तत्वों से अलग है यही सत्य है।

काल द्वारा जीवों के लिए भ्रम जाल की रचना:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! वह दिन मेरे लिए बहुत शुभ था जिस दिन मुझे आपके दर्शन हुए। इस दास पर दया करें और मुझे वरदान दें कि मैं दिन-रात आपके चरणों में ही लगा रहूँ, एक क्षण के लिए भी मेरा मन न भटके। आपके सुंदर चरणों की धूल से पापी पवित्र हो जाते हैं। हे दया के सागर! आप अंतर्यामी हैं आपने मेरे ऊपर बहुत दया की है मैं अपने-आपको आप पर कुर्बान करता हूँ। हे साहब! अब आप मुझे आगे की कथा समझाकर कहिए कि चार खानियाँ बनाने के बाद काल ने क्या किया?''

कबीर साहब कहते हैं सुनो धर्मदास! काल का खेल इस तरह का है जिसे पंडित और काज़ी भी नहीं समझ पाए, वे काल को ही परमात्मा कहते हैं; अमृत छोड़कर विष पीते हैं। चारों (अध्या, ब्रह्मा, विष्णु और महेश) ने मिलकर इस सृष्टि की रचना की और जीवों को कच्चे रंग में रंग दिया। जीव के अंदर पाँच तत्व और तीन गुण हैं इसके साथ चौदह यम रहते हैं; इस तरह इंसानी जामें की रचना हुई। काल जीव को मारकर खाता है फिर जीवों को पैदा करता है।

ओंकार ही वेदों की जड़ है। सारा संसार ओंकार में ही भूला हुआ है, ओंकार ही निंरजन है। सतपुरुष और उसका नाम गुप्त है। ब्रह्मा ने अठ्ठासी हजार सन्तान पैदा की जिनका विस्तार काल की देखभाल में हुआ। ब्रह्मा से जो सन्तान हुई उन्होंने अनेक स्मृति, शास्त्र और पुराणों की रचना करके जीवों का उनमें उलझा दिया। ब्रह्मा ने जीवों को भटकाकर काल की भक्ति में लगा दिया। सभी जीव वेदों की शिक्षाओं के भ्रम के पड़ गए और सतपुरुष के भेद को नहीं जान सके।

पहले राक्षस, देवी-देवता, ऋषि-मुनि बनाए फिर काल खुद अवतार लेकर उनका रक्षक बनता है और राक्षसों को

मारता है। इस तरह काल जीवों को बहुत सारी लीलाएं दिखाकर अपनी महिमा दिखाता है। यह देखकर जीव उस पर विश्वास करते हैं कि यही हमारा रक्षक है। काल अपना नाटक दिखाते हुए अन्त में जीवों को खा जाता है।

ब्रह्मा ने अड़सठ तीर्थ, कर्म, पाप और पुण्य बना दिए। बारह राशियां, सत्ताइस नक्षत्र, सात दिन और पन्द्रह दिन का एक पक्ष आदि बनाए फिर चार युगों का निर्माण किया। फिर उसने घड़ी (दिन-रात में 32 घड़ी होती है), दंड (24 मिनट का समय) और श्वांस आदि नाप बनाए। कार्तिक और माघ के पवित्र महीने बना दिए; यह सब काल का खेल है इसको कोई विरला ही समझ सकता है।

तीर्थों व पवित्र स्थानों की महानता बना दी ताकि जीव भ्रम में पड़ा रहे आत्मज्ञान को प्राप्त न कर सके। जीव को पाप और पुण्य के जाल में फँसाकर उलझन में डाल दिया। जीव सच्चे शब्द के बिना बच नहीं सकता और यम के मुँह में चला जाता है। जीव डर के कारण पुण्य करता है लेकिन उसे कोई फायदा नहीं होता उसकी तृष्णा नहीं मिटती।

जब तक जीव सतपुरुष की डोरी नहीं पकड़ते चौरासी लाख योनियों में भटकते रहते हैं। काल जीवों को अनेक प्रकार के भ्रमों में डालता है इस कारण जीव सतपुरुष का भेद नही पा सकते। जीव अपने फायदे के लिए लोभ में फँसे हुए हैं। काल जीवों को आशाओं में बाँधकर नचाता है।

सबसे पहले सतयुग के रीति-रिवाज सुनो जिसमें काल आत्माओं को खा जाता है। काल बहुत ही विशाल और क्रूर कसाई है। काल हर रोज एक लाख आत्माओं को खाता है। इसके पास एक पत्थर है जो दिन-रात गर्म रहता है। यह जीवों को उस गर्म पत्थर पर डाल देता है; जीवों को जलाकर कष्ट

देता है, उन्हें चौरासी लाख योनियों में धकेल कर अलग-अलग शरीरों में भटकने के लिए मजबूर कर देता है।

तप्त शिला पर कष्ट पाकर जीवों की पुकार:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! जीवों ने अनेक प्रकार से पुकार की कि हे सतगुरु! यह काल हमें बहुत कष्ट दे रहा है। अब हमसे काल का कष्ट सहा नहीं जा रहा आप हमारी मदद करें।

जब सतपुरुष ने जीवों की दुख भरी दशा देखी तो उसे बहुत दया आई। तब दया के सागर सतपुरुष ने मुझे बुलाया और अनेक प्रकार से समझाया और मुझे जीवों को चेताने की आज्ञा देकर कहा, ''तुम्हारे दर्शन करते ही जीवन शीतल हो जाएंगे और उनका कष्ट दूर हो जाएगा।''

मैंने सतपरुष के आदेशों को मानकर उनके शब्दों को अपने सिर का ताज बनाया। मैं उसी क्षण सतपुरुष के आगे सिर झुकाकर वहाँ से चल पड़ा। मैं वहाँ आया जहाँ काल जीवों को कष्ट दे रहा था। मुझे देखते ही जीवों ने पुकार की, ''हे साहब हमें बचा लो।'' तब मैंने सतशब्द का उच्चारण किया और सतपुरुष के शब्द की सहायता से जीवों को छुड़वा लिया।

जीवों द्वारा प्रार्थना:

कबीर साहब कहते है, हे धर्मदास! तब सब जीवों ने प्रार्थना की, ''हे सतपुरुष! आप धन्य हैं आपने हमारे कष्टों को दूर किया है। हे अंतर्यामी प्रभु! हम पर दया करो हमें काल से छुड़वा दो।''

तब मैंने जीवों को समझाकर कहा, ''अगर मैं तुम्हें जबरदस्ती छुड़ाऊँगा तो सतपुरुष के वचन की पालना नहीं होगी। जब तुम्हें इंसानी जामा मिले तो तुम शब्द से प्यार करना।

सतपुरुष का नाम अर्थात 'शब्द-नाम' लेकर शब्द-नाम की कमाई करना तो तुम हंस बनकर सतलोक को जाओगे।''

जहाँ आसा तहाँ वासा:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! मैंने जीवों को समझाया, ''हे जीवो! तुम वचन और कर्म से मन में जो आशा रखकर कर्म करोगे वहीं जाकर समा जाओगे। इस संसार में इंसानी जामा लेकर तुम जो आशा करोगे, अंत काल में तुम्हारा वहीं जन्म होगा अगर इंसानी जामें में सतपुरुष को भूल जाओगे तो काल तुम्हें खा जाएगा।''

जीवों ने कहा, ''हे सनातन पुरुष! इंसानी जामें में आने के बाद हमें यह ज्ञान भूल जाएगा। हम सतपुरुष जानकर काल की भक्ति करेंगे क्योंकि वेद ऐसा ही कहते हैं। हम वेदों-पुराणों पर विश्वास करके उसी काल से प्यार करेंगे। मनुष्य, मुनि और तैंतीस करोड़ देवी देवता सभी काल की डोरी से बँधे हुए हैं; जिस कारण हमने उन शिक्षाओं पर विश्वास किया लेकिन अब हमें काल के जाल का पता लग गया है।''

कबीर साहब ने जीवों से कहा, ''हे जीवो सुनो! यह सब काल का छल है इसने जीवों को फँसाने के लिए अनेक प्रकार के कर्मकांड बनाए हुए हैं। काल ने अपने कौतुक से जीवों के लिए बहुत से आनन्द के साधन बनाए हैं। इस संसार में तीर्थ, व्रत और योग के अनेकों जाल फैलाए हुए हैं जिनमें फँसकर जीव को रास्ता नहीं मिलता। काल अपना ही अवतार धारण करके अपनी ही पूजा करवाता है।

काल बड़ा भयानक है, जीव इसके काबू में है। सतनाम को प्राप्त किए बिना जीव इस भवसागर में एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेकर सजा भोगते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! जीवों को जगाकर उन्हें थोड़ा सुख देकर मैंने उन्हें यह ज्ञान समझाया, ''जब तुम इंसानी जामा धारण करके संसार में आओगे तब मैं तुम्हें 'शब्द' का भेद दूँगा और जब तुम नाम की डोरी पकड़ोगे मैं तुम्हें भ्रम से आजाद करवा दूँगा।'' जीवों को यह उपदेश देकर मैं सतपुरुष के पास गया और सतपुरुष को जीवों के दुःखों के बारे में बताया। सतपुरुष दया के स्वामी हैं उनके चरणों में ही हमारी सुरक्षा है। सतपुरुष ने मुझे अनेक प्रकार से समझाया और जीवों को 'शब्द-नाम' देकर वापिस लाने की आज्ञा दी।

जीवों की रक्षा का उपायः

धर्मदास ने इस प्रकार विनती की, ''हे ज्ञानी! मुझे बताओ वह कौन सा शब्द है जिससे जीवों की रक्षा होती है ?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! सतपुरुष ने मुझे जीवों को 'शब्द-नाम' देकर वापिस लाने के लिए अनेक प्रकार से समझाया। सतपुरुष ने मुझे वह भेद बताया जो गुप्त वस्तु है। वह देहरहित नाम मुक्ति देने वाला है। सतपुरुष ने मुझे वह अधिकार और चिह्न दिया जिससे जीवों को उससे जोड़ा जा सकता है। वहाँ बिना जीभ के धुन होती है लेकिन एक पूर्ण सन्त की मदद से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। पाँच शब्द अमृत के समान हैं जिससे जीव गर्भ में आने से बच जाता है। जो आत्मा नाम ले लेती है उसके इकहत्तर वंश तर जाते हैं। ऐसा जीव नाम की डोर से सतलोक चला जाता है उसे देखकर धर्मराय भी डरता है।''

सतपुरुष ने मुझसे कहा, ''तुम ऐसे जीवों को शिष्य बनाकर उन्हें काल से मुक्त कर दो। जैसे मैंने तुम्हें 'शब्द' का ज्ञान दिया है वैसे ही तुम अपने शिष्यों को ज्ञान दो।''

गुरु की महिमा:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! गुरुमुख के शब्द को हमेशा अपने हृदय में रखना चाहिए और दिन-रात नाम के अमृत का पान करना चाहिए। जिस तरह पत्नी अपने पति से प्यार करती है उसी तरह शिष्य को गुरु के स्वरूप से प्यार करना चाहिए। उसे हर क्षण गुरुमुख की सुंदरता को देखना चाहिए। शिष्य चकोर के समान हो और गुरु चन्द्रमा के समान शान्ति देने वाला हो। जिस तरह से एक पतिव्रता स्त्री हमेशा अपने पति के चरणों में लगी रहती है वह सपने में भी किसी और आदमी के बारे में नहीं सोचती, वह दोनों ही कुलों का नाम रोशन करती है। उसी तरह शिष्य को सन्तमत पर चलना चाहिए और अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए।''

हे धर्मदास! गुरु से बड़ा कोई नहीं है। भ्रम को छोड़कर सतगुरु की भक्ति करो। जो लोग तीर्थों, मन्दिरों और देवताओं की पूजा अपने शीश को चढ़ाकर भी करते हैं इससे उनको कोई फायदा नहीं होता। यह संसार भ्रम में भूला हुआ है।

हे धर्मदास! गुरु भक्ति अटल और महान है। गुरु भक्ति से अच्छा और कुछ भी नहीं है। जप-तप, योग, व्रत, दान और धार्मिक कर्म गुरु भक्ति की तुलना में तुच्छ हैं। जिस सन्त पर सतगुरु की दया होती है उसी के हृदय में गुरु भक्ति आती है। तुम मेरी वाणी को खुशी से अपने हृदय में धारण करो ताकि तुम्हारा मोह रूपी अंहकार नष्ट हो जाए।

हे सन्त धर्मदास! तुम सतगुरु रूपी ज्ञान के दीपक से प्रकाश के दर्शन करो क्योंकि सतगुरु की दया से ही महान मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

गुरुविहीन मुनि शुकदेव का उदाहरण व सच्चा गुरु:

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! शुकदेव मुनि गर्भ में

ही तप करके योगेश्वर बन गए थे। वह अपने तप के तेज से जब विष्णु लोक गए तो विष्णु ने पूछा, ''हे ऋषि! तुम यहाँ कैसे आए हो? गुरुविहीन व्यक्ति मुझे अच्छा नहीं लगता, ऐसा व्यक्ति बार-बार जन्म लेता और दुख पाता है तुम वापिस जाओ और पूर्ण गुरु को धारण करो तभी तुम्हें यहाँ स्थान मिलेगा।'' यह सुनकर शुकदेव वापिस आ गए। शुकदेव मुनि विदेहराज जनक को गुरु धारण करके बहुत प्रसन्न हुए।

ब्रह्मा का पुत्र नारद बहुत बड़ा ज्ञानी था, उसकी कथा संसार में प्रसिद्ध है। देवता, ऋषि, मुनि जिन्होंने भी गुरु धारण किया वे ही भवसागर को पार कर सके। गुरु ही सत्य का मार्ग बताता है और सत्य व असत्य की पहचान करवाता है।

गुरु सतपुरुष का संदेश देता है और जन्म-मरण के दु:खों को दूर करता है। गुरु पाप व पुण्य की आशा नहीं देता और अक्षय वृक्ष की छाया में रहता है। जिस गुरु के पास भृंगी कीट जैसा गुण होता है वही सच्चा गुरु है।

हे धर्मदास! जो सतलोक ले जाकर निजघर दिखा देता है वही सच्चा गुरु है। जो तीनों खण्ड - पिण्ड, अण्ड और ब्रह्माण्ड को छोड़कर चौथे पद सतलोक ले जा सकता है उसी के वचनों को सत्य मानो। यह काया पाँच तत्व व तीन गुणों के आधीन है लेकिन 'शब्द' देह रहित है।

हे धर्मदास! गुरुमत की यह सच्चाई है कि गुरु इस देही में धुनात्मक शब्द अर्थात सत स्वरूप के दर्शन करवा देता है। इस इंसानी जामें का यही फल है कि गुरु धुनात्मक शब्द में ध्यान लगावा दे जिसमें समाकर आवागमन के चक्कर से मुक्ति हो जाए अगर ऐसा गुरु मिल जाए तो फिर इस संसार में जन्म नहीं होता।

कबीर साहब का आगमन

कबीर साहब का आगमन व धर्मराय से मुलाकात:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! मैं बहुत नसीब वाला हूँ जिसे आपने अपना दर्शन दिया और मेरा जीवन सफल कर दिया। मैं आपकी महानता का वर्णन नहीं कर सकता। मैं अनजान जीव था आपने मुझे जगा दिया है। मुझे आपके अमृत से भरे शब्द बहुत अच्छे लगते हैं। आपके वचन सुनते ही मेरे अंदर से मोह व अंहकार भाग गए। मुझे आप यह बताएं कि आप इस संसार में पहली बार कब आए?''

कबीर साहब ने कहा कि हे धर्मदास! तुमने मुझसे पूछा है तो अब मैं तुम्हें हर युग में आने की कथा बताऊँगा। जब सतपुरुष ने मुझे आज्ञा दी तो मैं जीवों के लिए इस पृथ्वी पर आया। सतपुरुष को प्रणाम करने के बाद मैंने चलना शुरू किया और धर्मराय के दरबार में पहुँचा।

पहली बार जब मैं जीवों के कारण सतपुरुष का तेज सिर पर धारण करके चला उस समय मेरा नाम 'अचिंत' था। सतपुरुष की आज्ञा से जीवों के लिए आते समय मैं अन्यायी काल से मिला, उसने मेरे साथ झगड़ा किया और गुस्से से उत्तेजित होकर मुझसे पूछा, ''जोगजीत! तुम यहाँ क्यों आए हो? क्या तुम मुझे मारने आए हो? अगर सतपुरुष की कोई आज्ञा है तो मुझे बताओ?''

जोगजीत ने कहा, ''हे धर्मराय! मैं संसार में जीवों के लिए जा रहा हूँ। तुम बहुत चालाक हो तुमने आत्माओं को बहुत धोखे दिए हैं। तुम लगातार आत्माओं को परेशान करते हो। तुमने सतपुरुष के भेद को गुप्त कर दिया है। तुम तप्त शिला पर जीवों को तपाकर खा जाते हो इसलिए सतपुरुष ने

मुझे आज्ञा दी है कि मैं जीवों को जगाकर उन्हें सतलोक वापिस ले जाऊँ। मैं संसार में जाकर आत्माओं को परवाना देकर सतलोक भेज दूँगा।'' यह सुनकर काल ने भंयकर रूप धारण कर लिया और मुझे डराने की कोशिश की।

धर्मराय ने कहा, ''हे जोगजीत! मैंने सत्तर युग तपस्या की जिस कारण सतपुरुष ने मुझे यह राज्य दिया है फिर मैंने चौंसठ युगों तक तपस्या की तो मुझे मानसरोवर - सृष्टि के आठ खंड दिए। तुमने मुझे मारकर वहाँ से निकाल दिया था; अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।''

जोगजीत ने कहा, ''हे धर्मराय सुनो! मैं तुमसे नहीं डरता। मेरे पास सतपुरुष की ज्योति और बल है फिर मैंने सतपुरुष की ज्योति का सिमरन किया और शब्द के हथियार से काल पर हमला किया। जब मैंने काल की तरफ देखा तो उसका माथा काला पड़ चुका था। उस समय काल की स्थिति एक पर कटे पक्षी की तरह थी। वह बहुत ही गुस्से में आ गया पर कुछ नहीं कर सका और मेरे चरणों में गिर गया।''

निरंजन ने कहा, ''सुनो ज्ञानी! मैं तुमसे विनती करता हूँ तुम मेरे भाई हो फिर भी मैंने तुम्हारा विरोध किया, यह मेरी गलती है। मैं तुम्हें सतपुरुष के बराबर मानता हूँ। मेरे अंदर तुम्हारे लिए और कोई विचार नहीं है। तुम सब कुछ जानने वाले सतपुरुष हो। अब मेरे ऊपर माफी का छाता फैला दो जैसे सतपुरुष ने मुझे यह राज्य दिया तुम्हें भी मुझे एक तोहफा देना चाहिए। आप सोलह बेटों में सबसे महान, ज्ञानी और सतपुरुष के समान हैं।''

ज्ञानी ने कहा, ''सुनो धर्मराय! तुम वंश के कलंक हो। मैं जीवों को लेने के लिए जा रहा हूँ। मैं जीवों को सतनाम और 'सतशब्द' में दृढ़ कर दूँगा। मैं सतपुरुष की आज्ञा से

जीवों को भवसागर से मुक्त करने आया हूँ। इस बार मैं सतपुरुष के शब्द से तुम्हें एक क्षण में बाहर कर दूँगा।''

तब धर्मराय ने विनती, ''मैं आपका दास हूँ आप मुझे गैर न समझें। हे ज्ञानी! यह मेरी विनती है कि आप ऐसा कुछ मत करें कि जिससे मेरा नुकसान हो। सतपुरुष ने मुझे यह राज्य दिया है, आप भी मुझे कुछ देकर मेरा कार्य सफल करें। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। अब आप मुझसे आत्माओं को ले जा सकते हैं।

हे भाई! अब मैं आपसे एक विनती और करता हूँ कि आप मेरी यह बात सत्य मानना कि जीव आपकी बात नहीं मानेंगे मेरे पास ही आएंगे। मैंने ऐसा मजबूत जाल बिछाया है जिसमें जीव उलझकर रह जाएंगे। मैंने वेद-शास्त्र, स्मृतियाँ और बहुत तरह के साधन बनाए हुए हैं। सतपुरुष की पुत्री अद्या को तीनों देवताओं का प्रधान बनाया है और इन तीनों देवताओं ने अनेकों जाल बना रखे हैं, वे अपने मुखों से मेरा ही ज्ञान देते हैं और जीवों से मन्दिरों, देवताओं, पत्थरों की पूजा करवाते हैं। वे जीवों को व्रत, तीर्थ-यात्रा, जप और तप में लगाए रखते हैं। सारा संसार बलि चढ़ाकर परमात्मा की पूजा करता है। मैंने जीवों को इन कर्मकांडो में लगा रखा है और यज्ञ, हवन, नित-नियम आदि के अनेकों जाल बिछा रखे हैं। इसलिए ज्ञानी! अगर आप संसार में जाएंगे तो जीव आपकी बात नहीं मानेंगे।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे अन्यायी धर्मराय सुनो! जो जीव मेरे 'शब्द' को ग्रहण कर लेंगे वे तुम्हारे फंदों से मुक्त हो जाएंगे। जब जीव 'शब्द' को पहचान लेगा तो तुम्हारे सारे भ्रमों को छोड़ देगा और तुम्हारे संसार से ऊपर उठ जाएगा। मैं जीवों को सतनाम का 'शब्द' देकर तुम्हारे सारे जालों को काटकर

उन्हें मुक्त करके सतलोक ले जाऊँगा।''

मैं जिन जीवों को दयावान सतपुरुष के शब्द के साथ जोड़ दूँगा। वे अपनी आत्मा की पूजा करेंगे और उनमें अपार सद्‌गुणों का वास होगा। वे सतपुरुष के शब्द का सिमरन करके अविचल नाम का गुणगान करेंगे। मैं तुम्हारे सिर पर अपना पैर रखकर आत्माओं को वापिस सतलोक भेज दूँगा।

हे धर्मराय सुनो! मैं 'नाम' का अमृत फैलाकर आत्माओं को जगा दूँगा, वे तुम्हारे घमंड को चकनाचूर कर देंगी। ऐसी आत्माएं भक्ति में निपुण होकर परवाना प्राप्त कर लेंगी। मैं उन्हें सतपुरुष के नाम के साथ जोड़ दूँगा उनके पास काल की कोई ताकत नहीं आएगी। जब काल उनको सतपुरुष के शब्द के साथ जुड़ा हुआ देखेगा तो उसे शीश झुकाना होगा।

यह सुनकर काल डर गया और हाथ जोड़कर विनती करने लगा, ''हे साहब! दया के देने वाले मुझ पर कृपा करो। सतपुरुष ने मुझे ऐसा श्राप दिया था कि मैं रोज एक लाख जीवों को खाऊँगा अगर सारे जीव सतलोक चले जाएंगे तो मेरी भूख कैसे मिटेगी? सतपुरुष ने मुझ पर दया करके मुझे भवसागर यह राज्य दिया है। आप भी मुझ पर दया करें मैं आपसे जो भी माँगूं, मुझे वरदान के रूप में दीजिए। सतयुग, द्वापर और त्रेता इन तीनों युगों में थोड़े ही जीव सतलोक जाएं। जब चौथा युग कलियुग आए तब बहुत सारे जीव आपकी शरण में जाएं मुझे ऐसा वचन देकर आप संसार में जाएं।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे काल! तुम बहुत ही धोखेबाज हो। तुमने बहुत छल करके तीन युगों में जीवों को दुःखों में डाल दिया। मैं तुम्हारी विनती को समझ गया हूँ। तुमने मुझसे भी धोखा किया है। मैंने तुम्हारी विनती को स्वीकार कर लिया है। जब चौथा युग कलियुग आएगा तो मैं अपना अवतार भेजूँगा।

सबसे पहले सतपुरुष के आठवे शब्द 'सुरति' से सुकृत अंश (धर्मदास) संसार में आएगा। उसके बाद धर्मदास के घर नौतम अंश का जन्म होगा, उससे जीवों के लिए सतपुरुष के ब्यालिस अंश आएंगे जो कलियुग में सन्तमार्ग चलाकर जीवों को सतलोक भेजेंगे। वे जिसको 'सतशब्द' देंगे मैं सदा उसके साथ रहूँगा और यम उस जीव के पास नहीं आएगा।''

काल निरंजन द्वारा बारह पंथ चलाने की विनती:

धर्मराय ने कहा, ''हे साहब! आप अपना पंथ चलाकर जीवों को मुक्त करके सतलोक ले जा सकते हैं। मैं जिस जीव पर आपकी लगाई हुई छाप देखूंगा उसके आगे अपना सिर झुका दूँगा।

हे ज्ञानी! मैंने सतपुरुष की आज्ञा को मान लिया है। अब मैं आपसे एक विनती करता हूँ कि आप अपना पंथ चलाकर जीवों को सतलोक भेजेंगे तो मैं भी आपके नाम से बारह पंथ चलाऊंगा। मैं संसार में बारह यमदूतों को भेजूँगा जो कि आपके नाम से पंथ चलाएंगे। मेरा एक दूत 'मृत्यु-अंधा' सुकृत के घर जन्म लेगा; पहले मेरा दूत जन्म लेगा उसके बाद आपका अंश प्रकट होगा। इस तरह मैं सतपुरुष के नाम पर जीवों को भ्रम में डालूंगा जो जीव इन बारह पंथो में आएंगे, वे मेरे मुँह में आ जाएंगे। मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपा करके मुझे यह दें और क्षमा करें।

जगन्नाथ स्थापना का वरदान:

धर्मराय ने कहा कि जब कलियुग का पहला भाग आएगा उस समय मैं एक साधु का रूप धारण करूँगा फिर मैं जगन्नाथ नाम धारण करके राजा इंद्रदमन के पास जाऊँगा। राजा मेरा मन्दिर बनवाएगा जो कि बार-बार सागर के पानी से तबाह हो

जाएगा। मेरा पुत्र विष्णु वहाँ आएगा सातों सागर उससे अपना बदला लेंगे इसलिए वह मन्दिर नहीं बचेगा सागर की लहरें मन्दिर को डुबो देंगी। हे ज्ञानी! सबसे पहले आप उस महासागर के किनारे पर आना; आपको देखकर सागर मन्दिर को डुबो नहीं पाएगा पीछे हट जाएगा इस तरह से मैं वहाँ पर स्थापित हो जाऊँगा। इसके बाद आप वहाँ अपना अंश भेज सकते हैं फिर आप भवसागर में अपना पंथ चलाकर सतपुरुष के शब्द से जीवों को बचाना। सतपुरुष के नाम का भेद देकर मुझे वह मोहर छाप बता देना जो जीव बिना मोहर छाप के होंगे वे कभी भी आपके रास्ते को नहीं पा सकेंगे।

जोगजीत ने कहा, ''हे धर्मराय! तुम जो कुछ मुझसे माँग रहे हो मैं उसे अच्छी तरह से समझता हूँ। तुम बारह पंथो को बनाकर अमृत की जगह विष दोगे। फिर मैंने सोचा! सतपुरुष ने जो कहा है वह भी व्यर्थ नहीं हो सकता इसलिए हे अधर्मी! मैं तुम्हें बारह पंथ बनाने की इज़ाज़त देता हूँ। पहले तुम्हारा दूत प्रकट होगा फिर मेरा अंश प्रकट होगा। मैं सागर के किनारे जाकर जगन्नाथ मन्दिर की स्थापना करवाऊंगा फिर मैं अपना पंथ चलाकर जीवों को सतलोक वापिस ले जाऊँगा।''

धर्मराय का गुप्त भेद पूछना:

धर्मराय ने कहा, ''हे ज्ञानी! आप मुझे मोहर छाप की निशानी बता दें जो जीव मुझे वह निशान दिखा देंगे मैं उनके नजदीक नहीं जाऊगा।''

जोगजीत ने कहा, ''अगर मैं तुम्हें उस मोहर छाप की निशानी बता दूँगा तो तुम जीवों के लिए पीड़ा का कारण बन जाओगे। मैंने तुम्हारा छल जान लिया है अब तुम यह खेल नहीं खेल सकते। हे धर्मराय! मैं तुम्हें साफ-साफ बता रहा हूँ कि मैंने नामदान को गुप्त रखा है। मैं जिसको भी 'नामदान'

दूंगा तुम उस आत्मा से दूर हो जाना अगर तुम ऐसी आत्माओं को रोकने की कोशिश करोगे तो तुम बच नहीं सकोगे।''

धर्मराय ने कहा, ''हे ज्ञानी! अब आप संसार में जाएं और जीवों को नाम के द्वारा वापिस ले जाएं। जो आत्माएं आपका गुणगान करेंगी मैं उनके नजदीक नहीं जाऊँगा। जो आत्माएं भवसागर पार करके आपकी शरण में आ जाएंगी मैं उनके पैरों पर अपना शीश रखूँगा। मैं जिद्दी हो गया था आपको पिता मानते हुए मैंने एक बच्चे की तरह जिद्द की अगर बच्चा करोड़ों गलतियाँ भी करता है तो पिता एक भी गलती अपने दिल पर नहीं लेता। पिता बेटे की रक्षा नहीं करेगा तो उसकी रक्षा और कौन करेगा? धर्मराय ने उठकर अपना सिर झुकाया, तब ज्ञानी इस संसार की ओर चल पड़े।'

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''जब मैंने धर्मराय को डरा हुआ देखा तो मैं वहाँ से चल पड़ा फिर मैं चलकर भवसागर में आ गया।''

ब्रह्मा से भेंट:

फिर मैं ब्रह्मा से मिला मैंने उसे शब्द के बारे में बताया। ब्रह्मा ने मेरी बात को बहुत ध्यान से सुना और सतपुरुष की पहचान के बारे में कई सवाल पूछे। तब काल निरंजन ने सोचा कि ब्रह्मा मेरा बड़ा पुत्र है; वह मन में रहता है इसलिए उसने ब्रह्मा की बुद्धि को ही बदल दिया।

ब्रह्मा ने कहा, ''परमात्मा निर्गुण निराकार व अविनाशी है। वह सुन्न मंण्डल में ज्योति स्वरूप विराजमान है। वेद उसका वर्णन सतपुरुष के रूप में करते हैं और मैं वेदों की आज्ञा का पालन करता हूँ।''

विष्णु से भेंट:

जब मैंने ब्रह्मा को काल के वश में देखा तो मैं विष्णु के पास चला गया। मैंने विष्णु को सतपुरुष का संदेश दिया उसने भी काल के वश में होकर मेरी बात को नहीं सुना। विष्णु ने कहा, ''मेरे समान कौन है? मेरे पास चार पदार्थ-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है; मैं ये जिसे चाहूँ उसे दे सकता हूँ।''

जोगजीत ने कहा, ''हे विष्णु! तुम्हारे पास मोक्ष कहाँ है? मोक्ष तो अक्षर (सुन्नमण्डल) के पार है। जब तुम खुद ही स्थिर नहीं हो तो दूसरों को स्थिर कैसे कर सकते हो? तुम झूठ बोलकर अपना ही गुणगान क्यों करवा रहे हो?''

शेषनाग से भेंट:

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, मेरी ऐसी निडर बाणी सुनकर विष्णु को बहुत ही शर्म महसूस हुई। वह अपने आपसे डर गया तब मैं नागलोक में शेषनाग के पास गया। मैंने शेषनाग से कहा, ''सतपुरुष के भेद को कोई नहीं जानता, सब काल की शरण में हैं; तुम रक्षक को पहचानो जो तुम्हें काल से बचा ले।'' शेषनाग ने कहा, ''जिसका ध्यान ब्रह्मा, विष्णु और महेश करते हैं, वेद भी दिन-रात उसका गुणगान करते हैं वही पुरुष मेरा रक्षक है वह तुम्हारी भी रक्षा करेगा।'' मैंने उससे कहा, ''रक्षक तो कोई और है अगर तुम मुझमें विश्वास करो तो मैं तुम्हें उससे मिलवा सकता हूँ। जहर की वजह से शेषनाग का स्वभाव बहुत गर्म था। उसने मेरे शब्दों को अपने दिल में नहीं लिया।''

हे सुंदर लक्षणों वाले चतुर धर्मदास! तब मैं भवसागर से मृत्युलोक में आया। मैंने सतपुरुष का कोई भी जीव नहीं देखा। सबने यम के वस्त्र पहने हुए थे। वे उसी को मान रहे थे जो उन्हें खा जाता है फिर मैंने सतपुरुष के शब्द में ध्यान लगाया कि मोह के वश में होकर जीव मुझे नहीं पहचान रहे है। मेरे

मन में विचार आया कि मैं काल के भ्रम को मिटाकर जीवों के सामने काल को प्रकट कर दूं फिर जीवों को यम से बचाकर उन्हें अमर लोक भेज दूँ।

फिर मैंने सोचा! सतपुरुष की ऐसी आज्ञा नहीं है। सतपुरुष की आज्ञा तो यह है कि मैं सिर्फ उन जीवों को वापिस ले जाऊँ जो 'शब्द' को पहचानकर उसे दृढ़निश्चय से पकड़ते हैं। हे धर्मदास! इसके बाद जो हुआ मैं तुम्हें बताता हूँः

हे धर्मदास! ब्रह्मा, विष्णु, महेश और सनकादि आदि सबने मिलकर सुन्नमण्डल में समाधि लगाई और निरंजन से पूछा, ''हे कर्ता पुरुष! हम किस तरह से आपका सिमरन और ध्यान करें?'' सब सुन्नमण्डल में ऐसे ध्यान लगाए बैठे थे जैसे सीप स्वाति नक्षत्र की बूँद में ध्यान लगाती है। तब निरंजन ने एक उपाय सोचा! उसने अपने सुन्नमण्डल से इस शब्द का उच्चारण किया '**ररां**'। यह शब्द कई बार गूँजा और माया (अद्या) ने '**मा**' शब्द निकाला। दोनों शब्दों को जोड़कर उन्हें 'राम' नाम दे दिया गया। फिर सारा संसार 'राम' नाम में समा गया। कोई भी काल के इस जंजाल को नहीं समझ पाया। इस तरह से राम के नाम की उत्पत्ति हुई।

सतयुग में सतसुकृत के रूप में अवतारः

धर्मदास ने कहा, हे पूर्ण सतगुरु! आपके ज्ञान के प्रकाश से मेरा अंधकार दूर हो गया है। माया और मोह के कारण जीव अंधकार से बाहर नहीं निकल सकता। आपने मेरे अंदर सच्चा ज्ञान प्रकट कर दिया है 'शब्द' को पहचानकर मेरा मोह दूर हो गया है। मैं बहुत ही भाग्यवान हूँ कि आप मुझे मिले और आपने मुझ पापी को जगा दिया। अब मुझे वह कथा बताएं कि आपने सतयुग में कौन-कौन से जीवों को मुक्त किया?

धोंधल राजा की कथाः

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत था। मैंने सतयुग में सतपुरुष की आज्ञा से जिन जीवों को नामदान दिया उसकी कथा सुनो।''

मैं राजा धोंधल के पास गया। राजा धोंधल एक सज्जन सन्त था। उसने मेरे सत्य-शब्द को मान लिया और मैंने उसे नामदान दिया। उसने मेरे शब्द को ग्रहण किया और शान्ति प्रदान करने वाले प्रसाद को लेकर मेरे चरणों को जल से धोया। उसके सारे भ्रम दूर हो गए, उसने सार-शब्द को पहचान लिया और अपने ध्यान को सतगुरु के चरणों में लगा लिया।

खेमसरी की कथा:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! राजा धोंधल को 'शब्द-नाम' में जगाकर मैं मथुरा शहर में आया। वहाँ खेमसरी अपनी पत्नी, माता-पिता और बालको के साथ भागता हुआ मेरे पास आया। खेमसरी ने कहा, ''हे पुरातन पुरुष! आप कहाँ से आए हैं?'' मैंने उसे शब्द, सतपुरुष और यम के छल के बारे में उपदेश दिया।

जब खेमसरी ने यम के छल के बारे में सुना तो उसके अंदर प्यार प्रकट हो गया लेकिन उसके मन में एक संदेह था कि वह सतलोक देखकर ही विश्वास करेगा। मैं उसके शरीर को वहीं छोड़कर उसकी आत्मा को एक क्षण में सतलोक ले गया। उसे सतलोक दिखाने के बाद मैं उसकी आत्मा को वापिस ले आया।

अपने शरीर में वापिस आने के बाद खेमसरी को पछतावा हुआ। उसने कहा, ''हे साहब! मुझे उस देश में वापिस ले चलो, यहाँ काल बहुत कष्ट देता है।'' तब मैंने उससे कहा, ''मेरे वचनों को सुनो! मैं तुम्हें जो कहूँ उसकी पालना करो।

जब तक तुम्हारे प्रालब्ध कर्म पूरे नहीं होंगे तब तक तुम 'नाम' में लीन रहो तुम्हें सतलोक के दर्शन हो चुके हैं अब तुम दूसरे जीवों को उपदेश दो।''

जो जीव सतपुरुष की शरण में आता है वह जीव सतपुरुष को अच्छा लगता है। जिस तरह कोई मनुष्य शेर के मुँह में जाती हुई गाय को बचा लेता है तो सभी उसकी तारीफ करते हैं कि इसने गाय को शेर से बचा लिया है। जिस तरह गाय को शेर का डर होता है ठीक उसी तरह जीव काल के मुँह में होता है जो किसी जीव को भक्ति में लगा देता है उसे करोड़ों गायों का पुण्य मिलता है।

खेमसरी ने मेरे चरणों में गिरकर कहा, ''हे साहब! आपने मुझे बचा लिया है। आपने मेरे ऊपर दया करके ज्ञान का प्रकाश कर दिया है; अब मैं काल के फँदे में नहीं फँसूंगा।''

सत्तसुकृत ने कहा, ''हे खेमसरी सुनो! यह काल का देश है। नाम के बिना काल का डर नहीं मिटता। जीव सतपुरुष के शब्द की डोरी को पकड़कर यम जाल के तिनके को तोड़ देता है। जिस जीव को सतपुरुष का 'शब्द-नाम' मिल जाता है वह जीव वापिस इस भवसागर में नहीं आता।''

खेमसरी ने कहा, ''हे प्रभु! मुझे नामदान देकर काल से छुड़वाकर अपना बना लीजिए। मेरे घर चलकर मेरे परिवार के सब सदस्यों को भी मुक्ति का संदेश दीजिए।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! फिर खेमसरी के घर सतसंग हुआ। खेमसरी ने सबको समझाया अगर आप लोग मुक्ति चाहते हैं तो सतगुरु से 'शब्द-नाम' लें, मेरी बात का यकीन करें; यह हमें काल से छुड़ाने आए हैं।'' सब जीवों को विश्वास हो गया वे सब मेरे चरणों में गिरकर कहने लगे,

''हे साहब! हमें मुक्ति प्रदान करें जिससे हमें यम कष्ट न दे और हमारे जन्म-जन्म के दु:ख दूर हो जाएं।''

जब मैंने मनुष्यों और स्त्रियों को अपने प्रति वशीभूत देखा तो मैंने उनसे कहा कि जो जीव मेरे उपदेश को मानेगा मैं उसके काल के कष्टो को दूर कर दूंगा। जो सतपुरुष का नाम-शब्द ले लेता है यमराज उसके नज़दीक नहीं आता।

सत्तसुकृत ने खेमसरी से कहा, ''तुम जाकर आरती का सामान लेकर आओ ताकि मैं तुम्हारे दिल से काल का भय दूर कर दूं।'' खेमसरी ने कहा, ''हे प्रभु! मुझे समझाइए मैं आरती के लिए क्या सामान लेकर आऊँ?'' सत्तसुकृत ने कहा कि खेमसरी! आरती के लिए मिठाईयाँ, पान, कपूर, केला व आठ तरह के सूखे मेवे, पाँच प्रकार के बर्तन, सफेद कपड़े का एक टुकड़ा, केले के सात पत्ते, एक नारियल और एक सफेद फूल लाओ फिर चंदन से सफेद चौका बनाओ। थोड़ी सी सुपारी लाकर शब्द का चौका बनाओ और गाय का शुद्ध घी ले आओ।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''मेरे वचनों को सुनकर खेमसरी जल्दी ही सब कुछ ले आया। उसने सफेद पंडाल तान दिया और आरती करने की सारी विधि को पूर्ण कर लिया। सतपुरुष की मौज से पाँच पवित्र शब्द गूँजने लगे; वहाँ भक्ति और गुरु का ज्ञान आ गया। तब मैं चौके पर जाकर बैठ गया और भजन में अंखड शब्द की धुन बजने लगी। इस अंखड शब्द की धुन को दुनियां में कोई नहीं रोक सकता।

मैंने सही समय पर चौके की रस्म को पूरा किया और नामदान दिया अखंड ज्योति का प्रकाश प्रकट हो गया। जब शब्द की मदद से चौके की रस्म पूरी हुई। जब नारियल को पत्थर की शिला पर पटका तो काल का सिर फूट गया और सारे दर्द दूर हो गए। नारियल के फूटने पर जो खुशबू आई

उसने सतपुरुष का संदेश दिया। मैंने उन्हें पाँच शब्द बताए। सबने उन शब्दों का सिमरन किया और उन सबको सतपुरुष का नाम मिल गया।

हे भाई! सतपुरुष वहाँ आकर बैठ गए। सब लोगों ने खड़े होकर आरती की फिर घर में दोबारा से आरती की गई। काल का तिनका तोड़कर उनको जल का आचमन कराया। मैंने उन्हें ध्यान की विधि बताई और कहा कि ध्यान से ही आत्मा काल से मुक्त होगी। नाम के सिमरन से आत्मा अपने निज घर सतलोक जाएगी।

इस प्रकार बारह आत्माओं को ज्ञान देकर मैं सुख के सागर सतलोक को चला गया। मैंने वहाँ जाकर सतपुरुष के चरण कमलों को स्पर्श किया। सतपुरुष ने मुस्कुराकर मुझे अपनी गोद में बिठा लिया और मुझसे अनेक प्रकार की कुशलता पूछी। मैं वहाँ की शोभा देखकर बहुत खुश हुआ।

हे धर्मदास! वहाँ आत्मा की शोभा के प्रकाश का वर्णन नहीं किया जा सकता। सतलोक में एक आत्मा का प्रकाश सोलह सूरज के प्रकाश के समान होता है। मैं कुछ दिन सतलोक में रहा।

त्रेता युग में मुनीन्द्र के रूप में अवतार:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! सतयुग बीत गया, त्रेता युग में मैंने मुनीन्द्र के नाम से आकर जीवों को समझाया। जब मैं जीवों को समझाने आया तो काल के मन में बहुत डर हुआ; काल ने सोचा! यह मेरे भवसागर को उजाड़कर जीवों को सतलोक ले जाएगा। मैंने बहुत छल करने की कोशिश की लेकिन मैं ज्ञानी के आगे ठहर नहीं सका क्योंकि ज्ञानी के पास सतपुरुष का तेज है इसलिए वह मेरे जाल में नहीं आता।

हे धर्मदास! सतनाम के प्रताप से आत्माएं अपने निज घर सतलोक वापिस चली जाती हैं जिस तरह शेर को देखकर हाथी का दिल कांप जाता है। सतपुरुष के नाम के प्रताप को शेर के समान और काल को एक हाथी के समान समझो। जीव नामदान लेकर सतलोक पहुँच जाता है। सतगुरु के शब्द से लीन रहो और जो गुरु कहता है वही करो। सब कर्म, भ्रम और मनमत को छोड़कर सदा नाम में लिव लगानी चाहिए।

मैं त्रेता युग में मृत्युलोक में आया। मैंने अनेक जीवों से कहा कि आओ! मैं तुम्हें काल के जाल से छुड़ा दूँ लेकिन जीव भ्रम के वश में होने के कारण बोले कि हमारा कर्ता पुरातन पुरुष है; विष्णु ही हमें बचाने वाला है वही हमें काल से छुड़ाएगा। कोई शिव की पूजा करता है तो कोई चण्डी माता के गुण गाता है। जीव पराएवश हो गए है वे मालिक को छोड़कर काल के जाल में पड़े हैं। काल ने इन्हें कर्मों के भँवर में डाल दिया है, काल अपने जाल में फँसाकर जीवों को मारता है। जीव उसी की पूजा करते हैं जो उनका भक्षक है और अनजाने में ही उसके मुँह में जा रहे हैं।

मैंने सोचा कि मैं सतपुरुष से आज्ञा ले लूँ तो काल को मारकर सब जीवों को छुड़ाकर ले जा सकता हूँ अगर मैं अपने बल का प्रयोग करूँगा तो सतपुरुष का वचन नहीं रहेगा। इसलिए मैं जीवों को समझाकर धीरे-धीरे ले जाऊँगा।

लंका के विचित्र भाट की कथा:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! मैं चारों और घूमकर लंका में आया। मैं वहाँ विचित्र भाट से मिला उसने मुझ पर विश्वास किया। उसने मुझसे मुक्ति का संदेश पूछा; मैंने उसे ज्ञान का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर विचित्र भाट का भ्रम दूर हो गया और वह वशीभूत होकर मेरे चरणों में गिर पड़ा

और कहने लगा, ''हे स्वामी! आप मुझे अपनी शरण में ले लें। आप सुखों को देने वाले सतपुरुष हैं।'' मैंने उसे खेमसरी की तरह आरती के बारे में बताया। वह प्यार से आरती का सामान ले आया। आरती से शब्द-नाम की ध्वनि गूँजने लगी मैंने उसका काल से तिनका तोड़कर उसे नामदान दे दिया। उसे सिमरन और ध्यान बताया। उसे सतपुरुष की डोरी पकड़ा दी और उससे कुछ नहीं छिपाया लेकिन उसके घर में ओर किसी ने मुझे नहीं पहचाना।

विचित्र भाट की पत्नी महल में गई और उसने मंदोदरी रानी को बताया, ''एक बहुत ही सुंदर योगी आया है जो बहुत ही ज्ञानी है। मैं उसकी महानता का वर्णन नहीं कर सकती। वह अच्छे गुणों से परिपूर्ण है। उसने सफेद वस्त्र पहन रखे हैं मैंने उस जैसा कोई दूसरा नहीं देखा। मेरे पति ने उसकी शरण लेकर अपना जन्म सफल बना लिया है।''

मंदोदरी की कथा:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! विचित्र भाट की पत्नी की बात सुनकर मंदोदरी रानी भी दर्शनों के लिए तड़प उठी। वह अपनी सेविका के साथ सोना और रत्न लेकर आई। उसने अपना सिर मेरे चरणों में झुकाया और आशीर्वाद लिया।''

मंदोदरी ने कहा, ''आज शुभ दिन है। मैं हाथ जोड़कर आपसे भीख माँगती हूँ कि मैंने आप जैसा तपस्वी पहले कभी नहीं देखा। आपका शरीर और आपके कपड़े पवित्र हैं। आप मुझे बताएं कि मेरी आत्मा का उद्धार किस तरह हो सकता है? आप मुझे बुरे कुल का समझकर दूर मत कीजिए। हे सर्वशक्तिमान! मुझे अपनी शरण में लेकर सनाथ कर दीजिए। आप मुझे इस भवसागर में डूबती हुई को हाथ पकड़कर बचा लीजिए। आप मुझे बहुत प्यारे लगते हैं, आप दयालु हैं आपके

दर्शन से मेरे सारे भ्रम दूर हो गए।''

मुनीन्द्र ने मंदोदरी से कहा, ''हे रावण की प्रिय पत्नी सुनो! नाम की महिमा से यम की बेड़ी कट जाती है। तुम अपने ज्ञान की नजरों से देखो मैं तुम्हे सच और झूठ के बारे में बता रहा हूँ। सतपुरुष अजर-अमर हैं। वह इन तीनों लोकों से अलग हैं। जो उसका सिमरन करता है वह आवागमन के चक्कर से छूट जाता है।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! मेरे वचनों को सुनकर रानी का भ्रम दूर हो गया। उन वचनों को स्वीकार करके उसके दिल में प्यार जागृत हो गया। मैंने उसे नामदान देकर सतपुरुष की डोरी पकड़ा दी। वह नाम-शब्द की डोरी पकड़कर ऐसे खुश हुई जैसे किसी गरीब को करोड़ों रूपये की सम्पत्ति मिल गई हो। रानी ने मेरे चरणों में मस्तक झुकाया, इसके बाद मैं महल में गया।''

विचित्र वधु की कथा:

विचित्र की पत्नी ने रानी मंदोदरी की बात मानकर 'नामदान' प्राप्त किया और अपने भ्रम को दूर किया।

मुनीन्द्र का रावण के पास जाना:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तब मैं रावण के पास गया और दरबान से कहा, ''राजा को बुला लाओ।'' दरबान ने बहुत ही नम्रता से उत्तर दिया, ''राजा रावण बहुत ही शक्तिशाली हैं, शिव की शक्ति की वजह से वह किसी से नहीं डरते; किसी की बातों को नहीं मानते। वह बहुत ही घमंडी और क्रोधी हैं अगर मैं उनसे जाकर कहूँगा तो वे मुझे एक ही क्षण में मार डालेंगे।''

मैंने दरबान से कहा, ''मेरे वचन मानों। रावण तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।'' तभी दरबान रावण के पास गया। हाथ

जोड़कर रावण के सामने खड़ा होकर बोला, ''एक सिद्ध पुरुष आया है उसने मुझसे कहा है कि मैं आपको बुलाकर लाऊँ।'' यह सुनकर रावण गुस्से में आ गया और बोला, ''हे दरबान! तुम मूर्ख हो, तुम मुझे बुलाने आए हो? मेरा दर्शन तो शिव के पुत्र भी नहीं कर सकते। हे दरबान! मुझे बताओ कि सिद्ध कैसा है उसने कैसे कपड़े पहने हुए है?''

दरबान ने कहा, ''हे महाराज रावण! उसका रूप सफेद है उसके गले में सफेद हार है। उसका तिलक बहुत सुंदर है। उसका रूप चन्द्रमा के समान सुंदर है। उसके पास सब कुछ सफेद ही है।''

मंदोदरी रानी ने कहा, ''हे महाराज! सतपुरुष की सुंदरता ऐसी ही होती है अगर आप जल्दी से जाकर उनके चरणों को पकड़ लो तो आपका राज्य अटल हो जाएगा। आप मान-बड़ाई छोड़कर उनके चरणों में अपना सिर झुका दें।''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! यह सुनकर रावण क्रोधित हुआ और अपने हाथ में तलवार लेकर कहने लगा, ''मैं अभी जाकर उसका मस्तक काट डालूँगा, वह भिखारी मेरा क्या कर सकता है?'' रावण मुनीन्द्र के पास आया उसने अपनी तलवार से सत्तर बार हमले किए। मुनीन्द्र ने एक तिनके की ओट कर ली। रावण को बहुत घमंड था। मुनीन्द्र ने तिनके की ओट की ताकि रावण को लज्जा आए।

मंदोदरी ने कहा, ''हे राजन! आप अहंकार और लज्जा को छोड़ दें। आप महापुरुष के चरणों में सिर झुकाएं जिससे आपका राज्य अटल हो जाए।'' रावण ने कहा, ''मैं शिव की भक्ति करूँगा जिसने मुझे यह अटल राज्य दिया है। मैं केवल उन्हीं के चरणों में दंडवत प्रणाम करूंगा।''

मुनीन्द्र ने कहा, ''हे रावण! तुम बहुत घमंडी हो। तुमने

मेरे भेद को नहीं समझा। रामचन्द्र आएंगे तब तुम उन्हें अपनी तलवार के करतब दिखाना। रामचन्द्र तुम्हें मार डालेंगे और कुत्ते भी तुम्हारा माँस नहीं खाएंगे।'' मैं रावण की बेइज्जती करके अवध नगर की तरफ चल पड़ा।

मधुकर की कथा:

जब मैं अवध नगर जा रहा था तो रास्ते में मुझे मधुकर नाम का एक ब्राह्मण मिला। उसने मेरे पैरों को छुआ और अपना सिर मेरे आगे झुका दिया। उसने मुझे अपने घर आने की प्रार्थना की। उस गरीब ब्राह्मण ने अंदर के ज्ञान को समझ लिया और मुझसे बहुत ज्यादा प्यार किया।

सतपुरुष के संदेश को सुनकर वह इस तरह खुश हुआ जिस तरह पानी के बिना अंकुर जल जाते हैं और पानी मिलने पर फिर हरे हो जाते हैं उसी तरह से मधुकर 'नामदान' पाकर खुश हो गया। सतपुरुष के बारे में सुनकर उसने खुशी से कहा, ''हे सन्त! मुझे सतलोक दिखा दो।''

मुनीन्द्र ने कहा, ''आओ! मैं तुम्हें सतलोक दिखा देता हूँ। सतलोक दिखाने के बाद मैं तुम्हे वापिस ले आऊँगा।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! मैं उसकी देह से आत्मा को ऊपर सतलोक ले गया। सतलोक की महिमा को देखकर मधुकर बहुत खुश हुआ और मधुकर को मेरे ऊपर भरोसा आ गया।'' मधुकर ने मेरे चरणों में गिरकर कहा, ''हे साहब! आपने मेरी प्यास को शान्त कर दिया है। अब आप मुझे वापिस संसार में ले चलें। जो जीव मेरे घर आएंगे मैं उन जीवों को उपदेश दूँगा।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! मैं मधुकर की आत्मा को वापिस इस संसार में ले आया और जब आत्मा देह

में आई तो ब्राह्मण जाग गया। मधुकर के घर में सोलह आत्माएं रह रही थीं, जिनको मैंने सतपुरुष का संदेश दिया। सबने मधुकर के वचनों को मान लिया और उन सबने नामदान लेकर मुक्ति को प्राप्त किया।''

मधुकर ने कहा, ''हे अंतर्यामी! सबको सतलोक में निवास दें। यम की इस धरती पर इतना दु:ख-दर्द है कि कोई भी जीवों को नाम का पानी पिलाकर प्यास नहीं बुझाता।

हे अंतर्यामी! मुझ पर और सब जीवों पर दया करो। यह काल का महा भयानक देश है। काल जीवों को अनेक प्रकार के कष्ट देता है फिर जन्म-मरण के चक्कर में डालता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और माया बहुत बलवान हैं ये देवताओं, मुनियों सबमें समाए हुए हैं। इन्होंने करोड़ो जीवों का विनाश कर दिया है। हमारे ऊपर से काल के दु:खों को उतारकर हमें अपने देश ले चलिए।

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! जब मैंने उनको अपने प्रति वशीभूत देखा तो मैंने चौका करके सोलह जीवों को नामदान दिया और उन्हे सतलोक भेज दिया। यम के दूत उन्हें इस तरह देख रहे थे जैसे अखाड़े में हारे हुए पहलवान खड़े हों। आत्माओं को सतपुरुष के दरबार में पहुँचाकर अपार खुशी हुई उन जीवों ने सतपुरुष के चरणों को छूकर कहा, ''हे प्रभु! आपने हमारे जन्म-मरण की पीड़ा को खत्म कर दिया है।'' सतपुरुष ने सबकी कुशलता पूछी तब मधुकर ने कहा, ''यहाँ आकर कुशलता हो गई है।''

हे धर्मदास! यह बहुत अचरज भरी बात है कि जो गुप्त भेद को अपने अंदर जान लेता है वही ज्ञानी होता है। आत्माओं को अमरता के वस्त्र पहनाए गए और वे अमर देही पाकर बहुत प्रसन्न हुई। वहाँ आत्मा का प्रकाश सोलह सूरज का

होता है। वहाँ आत्माएं अमृत का भोजन करती हैं, अमरता पाकर उनके शरीर तृप्त हो गए।

द्वापर युग में करुणामय के रूप में अवतार:

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! त्रेता के बाद द्वापर युग आया और फिर से काल का प्रभाव बढ़ गया। तब सतपुरुष ने मुझे फिर से बुलाया और कहा, ''हे ज्ञानी! संसार में जाकर आत्माओं को काल से बचाओ। काल जीवों को कष्ट दे रहा है। काल को मारकर जीवों को ले आओ।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे सतपुरुष! आप मुझे आज्ञा दीजिए।''

सतपुरुष ने कहा, ''हे योग सन्तायन! तुम 'शब्द-नाम' देकर ही जीवों को मुक्त करो अगर हम अन्यायी काल से जबरदस्ती करते हैं तो हे पुत्र! उसको दिया हुआ मेरा वचन नहीं रहता। अब ये जीव काल के फँदे में पड़ गए हैं कोई भी तरीका अपनाकर उन्हें परमानंद में ले आओ।

जब जीवों को काल के चरित्र का पता लग जाएगा तो वे आकर तुम्हारे चरण पकड़ लेंगे। तुम संसार में जाकर सहज रूप में प्रकट हो जाओ और जीवों को जगाओ। जो जीव तुम्हें पहचान लेगा वह मुझे पा लेगा जो तुममें विश्वास करेगा उन्हें यम नहीं खा सकेगा। जाओ और जीवों को काल के जाल से बाहर निकाल लाओ तुम्हारे ऊपर मेरी दया का तेज है। तुममें और मुझमें कोई अंतर नहीं है। जो तुममे और मुझमे अंतर समझेंगे उनके दिल में यम का निवास होगा। जल्दी से संसार में जाकर आत्माओं को भवसागर से पार उतारो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि हे धर्मदास! तब ज्ञानी ने अपने सिर को झुकाया और सतपुरुष की आज्ञा से इस संसार की ओर चल पड़ा। जब इस संसार में सतपुरुष की

आवाज गूँजनी शुरू हुई तब पापी धर्मराय ने आकर मेरे चरण पकड़ लिए। मेरी शरण में आने के बाद धर्मराय ने मुझसे अनेक प्रकार से विनती की, ''आप सारे संसार को मत जगा देना। आप मेरे बड़े भाई हैं और मैं आपका छोटा भाई हूँ।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे धर्मराय सुनो! विरले जीव ही मुझे पहचानेंगे। तुमने जीवों के साथ ऐसा छल किया है कि कोई भी शब्द की बात पर विश्वास नहीं करेगा।''

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! यह कहकर मैं मृत्युलोक में आ गया फिर मैंने परमार्थ के शब्द का प्रचार किया और जीवों को सतशब्द के बारे में बताने लगा। जब मैं द्वापर युग में आया था तो मैंने अपना नाम करुणामय रखा था। मेरी आवाज को किसी ने नहीं सुना क्योंकि वे सब काल की विष रूपी भ्रम की बेड़ी में जकड़े हुए थे।

रानी इन्द्रमती की कथा:

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! फिर मैं गिरिनार गढ़ आया वहाँ राजा चन्द्र विजय राज्य करता था। उसकी रानी बहुत ही समझदार थी वह साधुओं की महिमा को समझती थी। वह महल के ऊपर चढ़कर साधुओं का इंतजार किया करती थी। मुझे रानी के प्यार के बारे में पता था इसलिए मैं उस रास्ते पर चल पड़ा। जब रानी ने मुझे देखा तो उसने अपनी दासी से कहा, ''तुम जल्दी से उस साधु को बुला लाओ।'' दासी ने आकर मेरे चरण पकड़ लिए और कहा, ''हे महात्मा! रानी ने आपको बुलाया है, वह आपके दर्शन करना चाहती है। रानी ने कहा है कि आप दीनों पर दया करने वाले हैं, मुझे दर्शन दीजिए। आपके दर्शन करने से सारे दुःख दूर हो जाएंगे।''

करूणामय ने कहा, ''मैं तो एक साधु हूँ। मैं राजा-महाराजा के घर नहीं जाता; राजाओं का काम मान-बड़ाई

देना है।'' दासी ने वापिस जाकर रानी के सामने हाथ जोड़कर कहा कि साधु ने मेरी प्रार्थना नहीं मानी। यह सुनते ही रानी इन्द्रमति दौड़ते हुए मेरे पास आई और सिर झुकाकर मुझे प्रणाम किया। रानी इन्द्रमती ने कहा, ''हे साहब! मुझ पर दया करें कृपा करके अपने चरण मेरे घर में डालिए।''

कबीर साहब कहते हैं कि हे धर्मदास! मैं रानी की प्रीत देखकर राजा के घर गया। रानी ने मुझे सिंहासन पर बिठाया। मेरे चरणों को धोकर अगोंछे से पोंछा फिर उसने मेरे चरणों को धोकर चरणामृत लिया और कहा, ''आपके दर्शन से मेरा मन सुखी हो गया है।'' फिर इन्द्रमती ने भोजन तैयार करने की आज्ञा माँगी और कहा, ''हे प्रभु! आप मेरे घर भोजन ग्रहण करें; मैं उस जूठन का प्रसाद ग्रहण करूँगी।''

करुणामय ने कहा, ''हे रानी! मुझे भूख नहीं लगती मेरा भोजन नाम का अमृत है। पाँच तत्वों से बने हुए जीवों को ही भूख लगती है। मेरी देह पाँच तत्वों से अलग है। तत्व और प्रकृति काल की रचना है। काल ने पिच्चासी प्रकार की पवन बनाई हैं और पाँच तत्वों का नाशवान शरीर बनाया है उसके अंदर एक मुख्य पवन है। आत्मा 'सोहंग' कहलाती है जीव सतपुरुष का अंश है, काल ने जीवों को लोभ में फँसा रखा है।

मैं इस संसार में जीवों को तारने के लिए आया हूँ जो मुझे पहचान लेता है मैं उसे मुक्त कर देता हूँ। धर्मराय ने ऐसा छल किया है कि जीवों को अनेक तरह से धोखे में डाल दिया है। काल ने नकली पानी और हवा बनाए हैं जब उनका विनाश होता है तो जीव की बहुत बुरी हालत होती है लेकिन मेरा शरीर इन चीजों से अलग है क्योंकि मेरे शरीर को काल ने नहीं बनाया मेरी देह असीम शब्द से बनी है।

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! मेरे वचनों को सुनकर

रानी ने आश्चर्य चकित होकर कहा, ''हे भगवान! मैं हैरान हूँ कि आप जैसा और कोई नहीं है। मुझ पर दया करके मुझे सारा भेद खोलकर समझाएं? हे प्रभु! विष्णु के समान मुनि शिव और ब्रह्मा भी नहीं फिर आप इन सबसे अलग कैसे हो गए? अपनी पहचान देकर मेरी प्यास बुझाएं। आप कौन है और कहाँ से आए हैं? आपको यह आलौकिक शरीर कहाँ से मिला है? हे गुरुदेव! आपका नाम क्या है? मैं आपके भेद को समझ नहीं पाई इसलिए मैं आपसे ऐसे प्रश्न पूछ रही हूँ।''

करुणामय ने कहा, ''हे इन्द्रमती! मैं तुम्हें पवित्र गुणों वाली कथा समझाता हूँ। मेरा देश पाताल, मृत्युलोक और स्वर्गलोक से अलग है। वहाँ यम का प्रवेश नहीं वह आदि पुरुष का देश है। वह सुंदर देश सतलोक है। वहाँ सतनाम ग्रहण करके ही पहुँचा जा सकता है।

सतपुरुष का शरीर एक अद्भुत ज्योति का है। वहाँ आत्माओं की शोभा बहुत सुंदर है। सतपुरुष की महिमा इतनी है कि तीनों लोकों में ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसका मैं उदाहरण दे सकूँ? सतपुरुष की शोभा इतनी अधिक है कि उसके एक बाल के प्रकाश के आगे करोड़ो चन्द्रमा भी लज्जित होते हैं।

अब मैं तुम्हें आत्माओं की शोभा के बारे में बताऊँगा। एक आत्मा का प्रकाश सोलह सूरज के प्रकाश के बराबर है। वह आत्माएं अमृत की खुशबू से संतुष्ट रहती हैं। वहाँ पर कभी रात नहीं होती। सतपुरुष के शरीर का प्रकाश सदा रहता है। बहुत ही भाग्यशाली आत्माएं वहाँ पहुँचती हैं। मैं उस देश से चलकर आया हूँ मेरा नाम करुणामय है। मैं सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में भी आया। मैं हर युग में आता हूँ, जो जीव जाग जाते हैं; मैं उन्हें सतलोक भेज देता हूँ।

रानी इन्द्रमती ने कहा, ''हे प्रभु! आप दूसरे युगों में भी

आए उन युगों में आपके क्या नाम थे?'' करुणामय ने कहा, ''सतयुग में मेरा नाम सत्तसुकृत था। त्रेता में मेरा नाम मुनीन्द्र था। हर युग में मेरे अलग-अलग नाम थे। जिन्होंने मुझे पहचान लिया उन्हें मैंने सतलोक भेज दिया।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, हे धर्मदास! मैंने इन्द्रमति को सतयुग और त्रेता की कहानी सुनाई जिसे सुनकर उसे बहुत जिज्ञासा हुई और उसने अनेक प्रश्न पूछे। तब मैंने उसे उत्पत्ति और प्रलय और यम के छल की सब बातें बताई कि किस तरह सोलह पुत्र प्रकट हुए? किस तरह कूर्म का पेट फाड़ा गया? किस तरह अद्या को निगल लिया गया फिर वह किस तरह बाहर आई? किस तरह धरती और आकाश की रचना हुई? किस तरह से तीनों पुत्रों ने सागर मंथन किया आदि सब पिछली कथाएं बताई।

मैंने उसे यह भी बताया कि किस तरह काल ने जीवों को ठग रखा है? ये सब सुनकर उसके सारे भ्रम दूर हो गए, रानी ने खुश होकर मेरे चरण पकड़ लिए और हाथ जोड़कर कहा, ''हे प्रभु! मुझे यम से छुड़ा लीजिए। मैं यह सारा राजपाट आपके ऊपर न्यौछावर करती हूँ। आप मुझे अपनी शरण में लेकर यम से मेरा बंधन छुड़वाकर मुझे सुखी कर दीजिए।''

करुणामय ने कहा, ''हे इन्द्रमती! मेरी बात सुनो। मैं निश्चय ही तुम्हें काल के बंधन से मुक्त कर दूँगा। मुझे पहचानो और मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हें नामदान दूँगा। आरती करो और नामदान लो फिर काल दूर भाग जाएगा। आरती के लिए जरूरी सामान ले आओ। मुझे तुम्हारे राजपाट की कोई जरूरत नहीं। मुझे धन-दौलत अच्छा नहीं लगता। मैं इस संसार में जीवों को जगाने के लिए आया हूँ।

सब जीव सतपुरुष के हैं लेकिन मोह के वश होकर भ्रम

में पड़े हुए हैं यह यमराज का छल है। उसने संसार में भ्रमजाल को फैला रखा है। जीव काल के वश में होने के कारण मुझसे लड़ते हैं और भ्रम के वश में होने के कारण मुझे नहीं पहचानते। जीव अमृत को छोड़कर विष से प्यार करते हैं और घी छोड़कर पानी पीते हैं। विरले जीव शब्द-नाम लेकर मुझे पहचान लेते हैं वे अपने पिता सतपुरुष से मिल जाते हैं और काल के जाल से छूट जाते हैं।''

इन्द्रमती ने करूणामय के अनमोल वचन सुनकर ज्ञान की मीठी वाणी से भरे हुए वचन बोले, ''हे प्रभु! आपने मुझ पापी को सुख दिया है, आपने मेरा उद्धार किया है। मेरे हृदय में यह विश्वास आ गया है कि आपसे बड़ा कोई नहीं है। आपकी कृपा से मुझे अगम परमात्मा का ज्ञान हो गया है; आप ही सतपुरुष हैं। अब आप मुझे आरती के बारे में बताएं।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''हे धर्मदास! जिस प्रकार मैंने खेमसरी को बताया था वैसा ही इन्द्रमति को बताया कि चौका बनाकर तैयार करो फिर मैं तुम्हें नामदान दूँगा।'' रानी ने सब सामान मँगवा लिया, चौके पर शब्द-नाम लेने बैठ गई। आरती करके उसे शब्द-नाम दिया फिर उसे सतपुरुष के सिमरन और ध्यान के बारे में बताया। नाम प्राप्त करने के बाद रानी ने अपना सिर झुकाया और उठ गई; तब रानी ने राजा को समझाया अगर आप मुक्ति चाहते हैं तो सतगुरु की शरण ले लें, ऐसा मौका दोबारा नहीं मिलेगा।

राजा चन्द्र विजय ने कहा, ''हे रानी! तुम मेरी पत्नी हो। हमारी भक्ति अलग-अलग नहीं है। मैं तुम्हारी भक्ति के प्रताप को देखूँगा कि तुम किस प्रकार मुझे मुक्त करवाओगी? मैं सतलोक कैसे पहुँचूँगा मेरे सब दुःख-दर्द कैसे दूर होंगे?''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, हे धर्मदास! रानी फिर

लौटकर मेरे पास आई। मैंने उसे काल के चरित्र बताए।

करूणामय ने कहा ''हे रानी सुनो! काल छल करके धोखा देता है। काल एक साँप के रूप में आकर तुम्हें डस लेगा। मैंने तुम्हें अपना शिष्य बनाया है यह जानकर काल तक्षक नाग बनकर तुम्हें डसेगा। मैंने तुम्हें दुःख दूर करने वाला उत्तम शब्द दिया है जिससे तुम पर काल के विष का असर नहीं होगा। फिर यम तुम्हारे साथ दूसरा छल करेगा, यम छल-कपट से तुम्हारे पास आएगा। वह मेरे जैसा सुंदर रूप बनाएगा और तुमसे कहेगा, हे रानी! तुम मुझे पहचानो मैं काल को मारने वाला ज्ञानी हूँ। इस तरह से काल तुम्हें धोखा देने के लिए आएगा लेकिन मैं तुम्हें बता देता हूँ कि तुम उसे कैसे पहचानोगी? काल का मस्तक छोटा होगा उसकी आँखों की पुतलियां मणके की तरह लाल और पीले रंग की होगी उसके अन्य अंग सफेद होंगे।''

इन्द्रमती ने चरण पकड़ लिए और कहा, ''हे प्रभु! यह देश तो यम का है आप मुझे सतलोक ले चलिए ताकि मेरे सारे संकट दूर हो जाएं।''

करूणामय ने रानी को समझाकर कहा, हे रानी! मेरी बात ध्यान से सुनो। अब तुम्हारा भ्रम दूर हो चुका है। काल से तुम्हारा नाता टूट चुका है, तुम्हें ज्ञान मिल चुका है। दिन-रात मेरे नाम का सिमरन करो दुष्ट काल तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। जब तक तुम्हारे प्रालब्ध कर्म पूरे नहीं हो जाते तब तक तुम नाम से लौ लगाए रखो।

रानी इन्द्रमती ने कहा, ''हे साहब! मैंने आपको पहचान लिया है और आपके वचनों को सिर पर धारण कर लिया है। आप अंतर्यामी हैं फिर भी मैं आपसे एक विनती करती हूँ कि जब काल नाग बनकर मुझे डसेगा और आपके रूप में आकर

मुझे भ्रम में डालने की कोशिश करेगा तब आप मेरे पास आना और मेरी आत्मा को सतलोक ले जाना।''

करूणामय ने कहा, ''हे रानी सुनो! मैं तुम्हें एक बात साफ-साफ बता रहा हूँ कि काल बहुत सी चालों के साथ आएगा। मैं उसके सभी प्रकार के मान को तोड़कर उसे अपमानित कर दूँगा। मुझे देखकर काल भाग जाएगा। उसके बाद मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हारी आत्मा को सतलोक भेज दूँगा। मैंने तुम्हे नामदान दिया है तुम दिन-रात नाम का सिमरन करो।''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! यह कहकर मैं वहाँ से गुप्त हो गया। तब काल नाग के रूप में आया। आधी रात बीतने पर रानी राजा की सेवा करके अपने महल में आई, अपने पलंग पर लेटी तो नाग ने उसके मस्तक पर डस लिया।

इन्द्रमती ने आवाज देकर कहा कि नाग ने मुझे डस लिया है। यह सुनकर राजा घबरा गया और जल्दी से रानी के पास आया। उसने शीघ्रता से वैद्य और गारूड़ी को बुलाया। राजा ने कहा, ''जो नाग का जहर निकालकर मेरी प्रिया को बचा लेगा उसे मैं कई गाँवो का राज्य दूँगा।''

इन्द्रमती ने राजा से कहा, ''हे राजा! वैद्य और गारूड़ी को दूर कर दो लेकिन आप दूर मत जाना। मुझे सतगुरु ने मंत्र दिया है जिसके प्रभाव से मुझ पर जहर का असर नहीं होगा।'' फिर रानी पवित्र शब्द को जपने लगी और उसने अपनी सुरत को सतगुरु के चरणों में लगा दिया। जिस तरह सूरज की रोशनी से अंधेरा दूर हो जाता है। थोड़ी देर बाद रानी उठकर खड़ी हो गई, उसे देखकर राजा बहुत खुश हुआ और जहर निकालने वाले को वापिस भेज दिया गया।

यमदूत ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश के पास जाकर कहा, ''रानी पर नाम के प्रभाव के कारण विष ने काम नहीं किया।'' विष्णु ने कहा, ''सुनो यमदूत! तुम अपना रूप सफेद बना लो और रानी को धोखा देकर यहाँ लाओ।'' उस दूत ने अपने पूरे शरीर को सफेद कर लिया और पूरे जोश के साथ रानी के पास गया।

यमदूत ने रानी के पास जाकर कहा, ''हे रानी! तुम उदास क्यों हो? तुम मुझे क्यों नहीं पहचानती? मेरा नाम ज्ञानी है, मैंने ही तुम्हें दीक्षा और मंत्र दिया था। जब काल नाग बनकर तुम्हें डसने आया तो मैंने ही तुम्हें बचाया था। मैं काल को मार डालूंगा। अब तुम उठकर मेरे पैर पकड़ लो। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। अब मैं तुम्हें सतपुरुष के दर्शन करवाऊँगा।''

इन्द्रमति ने उन निशानों को देखकर पहचान की जो उसे सतगुरु ने बताए थे। उसकी आँखे लाल व पीली, शरीर सफेद और मस्तक छोटा था। तब उसे सतगुरु के वचन पर भरोसा हुआ कि यह तो धोखा है। रानी ने कहा, ''हे दूत! अपने देश वापिस चले जाओ मैंने तुम्हारे वेश को पहचान लिया है अगर एक कौआ हंस का रूप धारण कर ले तो भी वह हंस जैसा सुंदर नहीं बन सकता; मेरा गुरु समर्थ है।''

यह सुनकर यमदूत को बहुत क्रोध आया उसने इन्द्रमती से कहा, ''मैं तुम्हें बार-बार समझा रहा हूँ पर तुम समझती नहीं हो। तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।'' यह कहकर यमदूत ने रानी के मुँह पर थप्पड़ मारा रानी धरती पर गिर पड़ी।

इन्द्रमती ने सिमरन करते हुए कहा, ''हे ज्ञानी! मेरी मदद करो। काल मुझे कई तरीकों से परेशान कर रहा है। मुझे यम के जाल से बचाओ।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! जब रानी ने मुझे बुलाया तो मैं उसकी आवाज सुनकर दूर नहीं रह सका, एक क्षण में ही वहाँ पहुँच गया। मुझे देखकर रानी बहुत खुश हुई उसके मन से काल का डर दूर हो गया। मेरे पहुँचते ही काल वहाँ से चला गया और रानी का शरीर पवित्र हो गया।''

इन्द्रमती ने हाथ जोड़कर कहा, ''हे प्रभु! मेरी एक विनती सुनिए। मुझे काल की तकलीफ का पता चल गया है। अब मैं इस देश में और नहीं रहना चाहती। यहाँ काल के बहुत कष्ट हैं; मुझे अभी सतपुरुष के पास ले चलो।''

कबीर साहब ने धर्मदास ने कहा, मैंने सबसे पहले काल के कठिन कष्ट काटकर रानी को साथ लिया। रानी की प्रालब्ध को पूर्ण करके मैं उसे मानसरोवर लेकर पहुँचा जिसे देखकर वह बहुत हैरान हुई। मैंने उसे अमृत सरोवर में से अमृत पिलाया। फिर उसको कबीर सागर में ले गया। उसके आगे सुरति सागर था जहाँ पहुँचकर रानी परम पावन हो गई।

जब मैंने रानी को सतलोक के द्वार पर खड़ा किया तो वह सुख से भर गई। वहाँ आत्माओं ने उसे गले लगाया शुभ गीत गाए और आरती की। सभी आत्माओं ने उसका आदर-सत्कार करते हुए कहा, ''तुम एक बहुत ही भाग्यशाली आत्मा हो जिसने सतगुरु को पहचान लिया है। तुम काल के जंजाल से मुक्त हो गई हो। अब तुम्हारा दर्द और पीड़ा खत्म हो गई है। हे आत्मा! हमारे साथ चलकर सतपुरुष के दर्शन करो और उनके आगे अपना सिर झुकाओ।''

फिर मैंने सतपुरुष से प्रार्थना की, ''हे दीन दयाल मुक्तिदाता! जो आत्माएं आपके पास आई हैं, आप इन्हें दर्शन दें।'' तभी पुष्प खिल गया और यह शब्द सुनाई दिया, ''हे ज्ञानी! योग सन्तायन आत्माओं को ले आओ और इन्हें दर्शन

करवाओ।'' तब ज्ञानी ने आत्माओं को सतपुरुष के दर्शन करवाए। सतपुरुष के दर्शन पाकर आत्माओं की शोभा बढ़ गई। सतपुरुष ने सब आत्माओं को अमृत के फल दिए। उन आत्माओं ने सिर झुकाकर अपना ध्यान सतपुरुष में लगा दिया। जिस तरह कमल का फूल सूरज की रोशनी पाकर खिल जाता है उसी तरह सतपुरुष के दर्शन करने के बाद आत्माओं की जन्म-जन्मांतर की पीड़ा खत्म हो जाती है।

सतलोक में इन्द्रमती को आश्यर्चः

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! जब इन्द्रमती ने सतपुरुष के अद्भुत सौन्दर्य को देखा तो खुश होकर उनके चरणों से लिपट गई। सतपुरुष ने अपने दोनों हाथ उसकी आत्मा पर रख दिए। वह इस तरह खुश हो गई जैसे कमल का फूल सूरज की रोशनी में खिल जाता है फिर सतपुरुष ने कहा, ''जाओ और करुणामय को बुलाकर लाओ।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''वह मेरे पास आई और मेरे रूप को देखकर हैरान हो गई।'' रानी ने कहा, ''यह तो बहुत ही आश्चर्य की बात है कि मुझे सतपुरुष और करुणामय में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। जो गुण मैंने सतपुरुष में देखे हैं वही गुण करुणामय में भी हैं। हे प्रभु! अब मैं आपको पहचान गई हूँ। आप ही सतपुरुष हैं। आप अपने आपको सेवक कहते हो, आपने अपनी महिमा क्यों छिपाई? मैं आपकी जय-जयकार करती हूँ। हे दया के सागर! आप महान् हो। आपका नाम सारे दुःखों, चिंताओं को दूर करता है, आप बहुत ही पवित्र, महिमामयी, कभी न खत्म होने वाले हो। आप इस संसार का सहारा हो। हे भगवान! आप ही सबकी रचना करने वाले हो। आप ही मुझे अपना समझकर काल के जाल से छुड़ाकर सुख-सागर में लाए हो।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि तब कमल बंद हो गया और सारी आत्माएं अपने-अपने दीप को चली गई। ज्ञानी ने रानी से कहा, ''हे आत्मा! अब तुम्हारे सब दुःख और भ्रम मिट गए हैं। तुम्हारा रूप सोलह सूर्य जैसा हो गया है। सतपुरुष ने तुम पर दया करके तुम्हारे भ्रम को मिटा दिया है।''

इन्द्रमती द्वारा अपने पति के लिए विनती:

रानी इन्द्रमती ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, ''हे साहब! मेरी एक विनती है कि मैं अपनी अच्छी किस्मत की वजह से ही आपके चरणों में पहुँची हूँ, यहाँ आकर मैंने सतपुरुष का दर्शन पाया है। अब मेरा शरीर सुंदर हो गया है फिर भी मेरे मन में एक चिन्ता है कि मेरे पति राज्य के मोह में बंधे हुए हैं। हे आत्माओं के स्वामी! उन्हें यहाँ ले आओ नहीं तो मेरा पति काल के मुँह में चला जाएगा।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे चतुर आत्मा! अब तुम्हें हंस का रूप मिल चुका है तुम राजा को क्यों बुला रही हो? उसने नामदान नहीं मिला है, वह सच के बिना ही संसार में भटक रहा है।''

इन्द्रमती ने कहा, हे प्रभु! मैंने संसार में रहकर बहुत तरीकों से आपकी भक्ति की है। राजा मेरी भक्ति के बारे में जानता था, उसने मुझे कभी नहीं रोका। इस संसार की प्रकृति बहुत कठिन है अगर पत्नी पति को छोड़कर कहीं जाती है तो सारा संसार उसे गालियां देता है। यह सुनकर पति पत्नी को मार डालता है। राजा का काम मान, बड़ाई, पाखंड, क्रोध, चतुराई आदि होता है। जब मैं साधु-सन्तों की सेवा करती थी तो राजा खुश होता था अगर राजा मुझे भक्ति करने की इजाजत न देता तो मैं भक्ति कैसे कर पाती?

मैं राजा की अति प्रिय थी। राजा ने मुझे कभी भक्ति के लिए नहीं रोका। मैंने हमेशा साधुओं की सेवा की जिससे

मुझे शब्द का रास्ता मिला अगर राजा ने मुझे रोका होता तो मैं आपके चरणों में कैसे पहुँचती? मैं नाम नहीं पा सकती थी। वह बुद्धिमान राजा बहुत ही महान् है। आप उसकी आत्मा को ले आओ कृपा करके राजा के बंधन भी काट दो।

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! यह सुनकर ज्ञानी हँस पड़े और बिना विलम्ब किए गिरिनार गढ़ आ गए। राजा की मृत्यु का समय नजदीक था। यमराज ने राजा को घेर रखा था और बहुत तकलीफें दे रहा था। वहाँ पहुँचकर सतगुरु ने उसे पुकारा लेकिन यमराज ने राजा को नहीं छोड़ा। हे भाई! बिना भक्ति के ऐसा ही होता है। जब आयु का समय पूरा हो जाता है तो काल बहुत तकलीफ देता है। मैंने जल्दी से राजा का हाथ पकड़ा और उसे सतलोक लेकर आ गया। राजा को देखकर रानी ने राजा के पैर छुए।

इन्द्रमती ने कहा, ''हे राजा! मुझे पहचानो मैं तुम्हारी पत्नी हूँ।'' राजा ने कहा, ''हे हंस! तुम्हारी सुन्दरता तो सोलह सूरज और चन्द्रमा जैसी है। तुम्हारा प्रत्येक अंग चमक रहा है। मैं तुम्हें अपनी पत्नी कैसे कहूँ? तुमने खुद भक्ति की और मुझे भी बचा लिया। वह गुरु धन्य हैं जिन्होंने तुम्हे भक्ति में लगाया तुम्हारी भक्ति से ही मैं सतलोक पहुँच सका हूँ। मैंने करोड़ों जन्मों में अच्छे कर्म-धर्म किए होंगे इसलिए मुझे तुम जैसी अच्छी पत्नी मिली। मैंने अपने मन को राज्य के कामों में ही लगाए रखा इसलिए मैं सतगुरु की भक्ति को प्राप्त नहीं कर सका अगर तुम मेरी पत्नी नहीं होती तो मैं नर्कों में जाता। मैं तुम्हारे गुणों का वर्णन नहीं कर सकता। सतगुरु का धन्यवाद है जो मुझे ऐसी पत्नी मिली।''

यह वचन सुनकर ज्ञानी ने हँसकर राजा चन्द्र विजय से कहा, ''हे राजन! तुम एक समझदार राजा हो। तुम्हारी आत्मा

ने मेरे शब्द को मान लिया है। जो जीव सतपुरुष के दरबार में आ जाता है, वह फिर लौटकर संसार में नहीं जाता। जो जीव मेरी बात मान लेते हैं वे हंस का रूप धारण कर लेते हैं।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! राजा ने सतपुरुष के स्वरूप का ध्यान किया उसे सतपुरुष के दर्शन हो गए। हंस का रूप लेकर वह बहुत ही सुंदर हो गया। राजा को सोलह सूरज और चन्द्रमा की सुंदरता भी मिल गई। उस औरत की विवेकशीलता बहुत महान है जिसने अपने पति को भी वहाँ बुला लिया और उसका आवागमन मिट गया।''

सुपच सुदर्शन की कथा:

धर्मदास ने कहा, हे प्रभु! इसके बाद आपने क्या किया? हे हंसो के पति! फिर आप भवसागर में कैसे आए मुझे बताएं?

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! रानी के पति को सतलोक ले जाकर मैं फिर काशी नगर में आया। मैंने वहाँ सुपच सुदर्शन को नाम देकर उसकी आत्मा को जगाया।

काशी नगर में सुपच सुदर्शन रहता था। मैंने उसे शब्द-नाम में लगाया। वह एक विवेकशील और सुंदर सन्त था। उसने शब्द को ग्रहण किया और शब्द के साथ जुड़ गया। उसने मेरे वचनों पर पूर्ण विश्वास किया और उसका मोह खत्म हो गया। मैंने उसे नाम का पान करवाकर मुक्ति का संदेश दिया और काल द्वारा दिए जाने वाले सारे कष्टो को खत्म कर दिया। उसने नाम का सिमरन पूरी एकाग्रता से किया, पूरे हृदय से सतगुरु की भक्ति की। उसके माता-पिता बहुत खुश हुए वे उसे दिल से प्यार करते थे।''

हे धर्मदास! यह सारा संसार अंधकार में है। ज्ञान के बिना जीव यम के दास बनते हैं। सुपच सुदर्शन के माता-पिता

उसकी भक्ति को देखकर बहुत प्रसन्न हुए लेकिन उन्होंने मुझसे नामदान नहीं लिया। यह जीव सामने देखकर भी नहीं समझता और काल के फंदे में पड़कर कष्ट भोगता है जिस प्रकार कुत्ता अपने आपको गंदगी में फंसाए रखता है उसी प्रकार इस संसार के लोग अमृत को छोड़कर विष को पीते हैं।

हे धर्मदास! द्वापर युग में युधिष्ठिर एक राजा था वह अपने भाइयों को मारकर कलंकित हो चुका था इसलिए उसने यज्ञ करवाने का विचार किया। जब उसे कृष्ण से यज्ञ की आज्ञा मिल गई तो पांडव यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री ले आए। दूर और पास के सभी साधुओं को बुलाया गया।

कृष्ण ने पांडवों से कहा, ''तुम्हारा यज्ञ तभी पूर्ण माना जाएगा जब आकाश से घंटे की आवाज सुनाई देगी।'' बहुत से सन्यासी, बैरागी, ब्राह्मण और ब्रह्मचारी आए। उन्हें बहुत प्यार से भोजन खिलाया गया लेकिन जब आकाश से घंटे की आवाज नहीं आई तो युधिष्ठिर हैरान हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि सभी ऋषियों के भोजन करने के बाद भी घंटा क्यों नहीं बजा? तब सभी पांडव कृष्ण के पास गए और उन्होंने कृष्ण से अपने संदेह के बारे में पूछा?

युधिष्ठिर ने कहा, ''हे कृष्ण! कृपा करके बताएं कि घंटा क्यों नहीं बजा?'' भगवान कृष्ण ने कहा, ''एक ऐसा साधु है जिसने भोजन नहीं किया।'' पांडवों ने हैरान होकर कहा, ''करोड़ों साधुओं ने भोजन किया है। हे नाथ श्रीकृष्ण! अब हम उस साधु को कहाँ ढूँढें जिसने भोजन नहीं किया?

कृष्ण ने कहा, ''आप लोग सुपच सुदर्शन को लाकर आदर सहित भोजन करवाएं, वही एक साधु है जिसने भोजन नहीं किया; उसके भोजन करने पर ही तुम्हारा यज्ञ पूर्ण होगा।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! जब पांडवों को कृष्ण से यह हुक्म मिला तो पांडव आदर सहित सुपच सुदर्शन को लेकर आए उसने भोजन गृहण किया तो नाम की महिमा से आकाश में घंटा बजने लगा फिर भी पांडवों को सतगुरु के शब्द की पहचान नहीं हुई क्योंकि उनकी बुद्धि तो काल के बाजार में बिक चुकी थी।''

काल अपने भक्त जीवों को भी कष्ट देता है। जो उसकी भक्ति करते हैं या नहीं वह सबको खा जाता है। पहले कृष्ण ने पांडवों को उपदेश दिया तो उन्होंने अपने ही भाइयों को मार डाला फिर पांडवों को इसका दोषी ठहराया और इस दोष को दूर करने के लिए उनसे यज्ञ करवाया। उसके बाद भी पांडवों को बहुत दुःख दिया और उन्हें हिमालय में भेजकर गला दिया। चारों भाई और द्रौपदी हिमालय में गल गए लेकिन युधिष्ठिर सत्य के बल पर बच गया।

कृष्ण को अर्जुन से प्यारा कोई नहीं था उसके साथ भी यही व्यवहार किया गया। राजा बली, सत्यवादी हरिश्चन्द्र और कर्ण बहुत बड़े दानी थे लेकिन काल ने उन्हें भी नहीं छोड़ा।

हे धर्मदास! ये अज्ञानी जीव काल को अपना रक्षक समझते हैं लेकिन यह उन्हें ही खा जाता है। काल सबको नचाता है, उससे कोई नहीं बच सकता। जो अपने रक्षक की खोज नहीं करते वे अनजाने में ही यम के मुँह में चले जाते हैं।

हे धर्मदास! मैंने जीवों को बार-बार समझाकर परमार्थ का ज्ञान देकर चेतावनी दी लेकिन काल ने सब जीवों की बुद्धि को अपने जाल में फँसा लिया। जीव शब्द की परख नहीं करते और यम के वश में होकर मेरे साथ लड़ते हैं। जब तक सतपुरुष का नाम नहीं मिलता तब तक जन्म-मरण नहीं मिटता। जब वे सतपुरुष के नाम को पा लेते हैं तो वे काल को जीतकर सतलोक

चले जाते हैं।

हे धर्मदास! आत्माएं सतनाम के प्रताप से मुक्त होकर सतलोक चली जाती हैं, अपने जन्म-मरण के कष्टों से छुटकारा पा लेती हैं फिर दोबारा भवसागर में नहीं आती। जब आत्माएं सतपुरुष के स्वरूप को देखती हैं तो इस तरह आनन्द प्राप्त करती हैं जैसे चन्द्रमा को देखकर कमल खिल उठता है।

हे धर्मदास! जब सुपच सुदर्शन का प्रालब्ध पूरा हो गया तो मैं उस बहादुर आत्मा को सतलोक में ले गया। वहाँ उसने सुंदरता और शोभा को देखा तो उसे दूसरे हंसों के साथ मिलकर खुशी हुई। उसे सोलह सूर्य के प्रकाश का रूप मिल गया और वह सतपुरुष के दर्शन करके अन्य आत्माओं में मिल गया।

कलियुग में कबीर साहब के रूप में अवतार:

धर्मदास ने कहा, ''हे साहब, मालिक और मुक्तिदाता! मैं आपसे विनती करता हूँ कि भक्त सुपच सुदर्शन को सतलोक भेजने के बाद आप कहाँ गए? हे सतगुरु! मुझे सब हाल बताएं ताकि आपके अमृत वचनों को सुनकर मेरे संदेह दूर हो जाएं।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम मुझे बहुत प्रिय हो। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा। द्वापर युग के बाद कलियुग का प्रवेश हुआ। मैं फिर जीवों को उपदेश देने के लिए चल पड़ा। जब धर्मराय ने मुझे आते हुए देखा तो वह उदास हो गया।

धर्मराय ने कहा, ''आप मुझे इतना दु:ख क्यों देते हैं, आप मेरा भोजन सतलोक क्यों भेज देते हैं? आप तीनों युगों में संसार में आए और आपने मेरा भवसागर उजाड़ दिया। सतपुरुष ने मुझे वचन दिया था फिर भी आप जीवों को छुड़ाकर ले जाते हैं अगर कोई और भाई आता तो मैं उसे मार डालता और एक क्षण में खा जाता लेकिन आप पर मेरा कोई जोर

नहीं चलता। आपकी ताकत से आत्माएं अपने घर चली जाती हैं।

अब आप फिर से संसार में जा रहे हैं लेकिन कोई भी आपके शब्द को नहीं सुनेगा क्योंकि मैंने ऐसे कर्म और भ्रम पैदा किए हैं कि उनमें से किसी भी जीव को बचने का रास्ता नहीं मिलेगा। मैंने हर घर में भ्रम के भूत पैदा किए हैं जिससे जीवों को धोखा देकर नचाता हूँ लेकिन जो आपको पहचान लेते हैं; उनके भ्रम दूर हो जाते हैं। सब इंसान माँस खाते हैं और शराब पीते हैं। मैंने स्वयं के पंथ चलाए हैं मैं जीवों से देवियों, योगिनों और भूतों की पूजा करवाता हूँ; मैंने संसार को इसी भ्रम में डाल रखा है। मैं जीवों को जाल के फँदों में बाँधकर अंत समय में सब कुछ भुला देता हूँ। हे भाई! आपकी भक्ति कठिन है, कोई आपका कहना नहीं मानेगा।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे धर्मराय! तुमने बहुत धोखे किए हैं अब मैं तुम्हारे सब धोखों को पहचान गया हूँ। सतपुरुष का वचन टल नहीं जा सकता इसलिए तुम जीवों को खा रहे हो अगर सतपुरुष मुझे आज्ञा दें तो सारे जीव 'नाम' से प्यार करने लग जाएं। मैं आसानी से जीवों को जगाकर उन्हें मुक्त कर दूँ। तुमने जीवों को फँसाने के लिए करोड़ों फंदे बना रखे हैं, वेदों और शास्त्रों को रचकर उनमें अपनी ही महिमा लिख दी है अगर मैं इस संसार में पूर्ण रूप से प्रकट हो जाऊँ तो सब जीवों को मुक्त कर दूं।

अगर मैं ऐसा करता हूँ तो सतपुरुष का वचन टूटता है। सतपुरुष का वचन बदला नहीं जा सकता। सतपुरुष का वचन अखण्ड, अटल व अमोलक है। जिन जीवों में मूलभूत शुभ गुण होंगे वे मुझे पहचान लेंगे। मैं ऐसे जीवों के फंदे काटकर उन्हें सतलोक ले जाऊँगा वे तुम्हारे भ्रमों को नहीं मानेंगे। मैं उन

सबको 'सत्य-शब्द' में दृढ़ करके उनके सारे भ्रम तोड़ डालूंगा।

जो जीव मेरे वचनों को सत्य मानकर मुझे पहचान लेंगे मैं उन्हें 'सत्य-शब्द' के साथ जोड़ दूँगा। तब जीव तुम्हारे सिर पर पैर रखकर अमर लोक पहुँच जाएंगे। ऐसी समझदार आत्माएं तेरे घमंड को तोड़कर 'सत्य-शब्द' का नामदान प्राप्त करके बहुत सुख प्राप्त करेंगी।''

धर्मराय ने कहा, ''हे जीवों को खुशी देने वाले! जो आत्माएं आपका ध्यान लगा लेती हैं उन्हें मेरे दूत नहीं ले जा सकते। मेरे दूत हारकर मेरे पास लौट आते हैं। भाई! मुझे यह बात समझ नहीं आई कृपया इसका भेद समझा दीजिए।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे धर्मराय सुनो! तुमने जो मुझसे पूछा है मैं उसका सब हाल तुम्हें बता देता हूँ। 'सत्य-शब्द' ही मुक्तिदाता है। सतपुरुष का नाम-शब्द ऐसी छिपी हुई ताकत है जिसे मैं आत्माओं में सतनाम के रूप में प्रकट कर देता हूँ। जो आत्मा मेरे नाम को ग्रहण कर लेती है वह भवसागर से पार हो जाती है। जब आत्मा मेरे नाम को लेती हैं तो तुम्हारे दूत की शक्ति कम हो जाती है।''

धर्मराय ने कहा, ''हे अंतर्यामी! मुझ पर दया करें और मुझे बताएं कि कलियुग में आपका क्या नाम होगा? आप मुझे उस गुप्त भेद निशान को बताकर ध्यान लगाने का तरीका बताएं? आप संसार में क्यों जा रहे हैं? मुझे वह भेद समझा दीजिए मैं भी जीवों को 'शब्द-भेद' देकर उन्हें सतलोक भेज दूंगा। मुझे अपना दास जानकर सार-शब्द दे दीजिए।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे धर्मराय! तुम कितने धोखेबाज हो तुम ऊपर से मेरे दास बनते हो लेकिन अंदर छल रखते हो। मैं तुम्हें गुप्त भेद नहीं दूँगा क्योंकि सतपुरुष ने ऐसा करने की आज्ञा नहीं दी। कलियुग में मेरा नाम कबीर होगा। जो आत्मा

कबीर नाम कहेगी यम उसके निकट नहीं आएगा।''

धर्मराय ने कहा, ''अगर आप मुझसे छिपाएंगे तो मैं भी एक चाल चलूंगा। मैं अपनी बुद्धि से ऐसा छल करूँगा जिससे बहुत सी आत्माएं मेरे पास आ जाएंगी। मैं आपके नाम से ही पंथ की स्थापना करके आत्माओं को धोखा दूँगा।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे काल! तुम सतपुरुष के विरोधी हो। तुम मुझे अपने धोखों के बारे में क्या बताओगे? परख करने वाली आत्माएं मुझे पहचान लेंगी; तुम्हारे धोखे उन आत्माओं का कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। मैं जिन्हें नाम दूँगा उन्हें तुम्हारे धोखों के बारे में समझा दूँगा।''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! यह सुनकर धर्मराय चुप हो गया वहाँ से अपने घर चला गया। काल की चाल बहुत बुरी और कठोर है। काल जीवों की बुद्धि को छल कर उन्हें फँसा लेता है।

जगन्नाथ पुरी की स्थापना की कथा:

धर्मदास ने कबीर साहब से कहा, ''हे प्रभु! आगे जो कुछ हुआ वह सब मुझे समझाकर बताएं?''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! उस समय उड़ीसा का राजा इन्द्रदमन था। जब कृष्ण ने देह त्याग किया तो इन्द्रदमन को स्वप्न आया; स्वप्न में कृष्ण ने कहा, ''हे राजा! तुम मेरे मंदिर की स्थापना करो।'' राजा ने उसी समय मंदिर का काम शुरू कर दिया, जगन्नाथ मंदिर बनकर तैयार हो गया तो सागर ने मंदिर को डुबो दिया। राजा ने दोबारा से मंदिर बनवाया तो सागर उमड़कर आया उसने एक ही क्षण में सब कुछ डुबो दिया और जगन्नाथ का मंदिर टूट गया।

इस तरह राजा ने छह बार मंदिर बनवाया। हर बार सागर

उमड़कर आता और उसे डुबो देता। कई बार कोशिश करने के बाद राजा थक गया कि मंदिर का निर्माण नहीं हो सकता। मंदिर की यह दशा देखकर मुझे अन्यायी काल को दिया हुआ वचन याद आया। मैं वचन का बंधा हुआ वहाँ गया। मैंने सागर के तट पर अपनी कुटिया बनाई और वहाँ बैठ गया।

इन्द्रदमन को फिर स्वप्न आया, ''हे राजा! मेरे वचनों पर विश्वास करके मंदिर बनवाने का काम फिर से शुरू करो।'' राजा ने काम शुरू करवा दिया और मंदिर बन गया। मंदिर को देखकर सागर की लहरें बड़ी तेजी से उमड़कर आई ऐसा लग रहा था कि पुरुषोत्तम का मंदिर नहीं बचेगा। आसमान तक उठती हुई लहरें मेरी कुटिया के पास आई, तब सागर ने मेरा दर्शन किया तो वह भयभीत होकर वहीं रूक गया।

हे धर्मदास! फिर सागर ने एक ब्राह्मण का रूप धारण किया और मेरे पास आया। उसने मेरे चरण पकड़कर कहा, ''मुझे आपके भेद का पता नहीं था।

सागर ने कहा, ''हे स्वामी! मैं यहाँ जगन्नाथ मंदिर डुबोने के लिए आया था। आप मेरे अपराध को क्षमा करें। अब मुझे आपके भेद का पता चल गया है। हे प्रभु! मुझे रघुपति से बदला लेने की आज्ञा दें। जब रामचन्द्र लंका गए थे तब वे मेरे ऊपर बाँध बनाकर युद्ध के मैदान में गए थे,मैंने बदला लेने का कारण आपको बता दिया है।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे सागर! मैं तुम्हारे बदले के कारण को समझता हूँ। तुम द्वारका नगर को डुबो दो। सागर की लहरे उमड़कर आई और द्वारका नगर को डुबो दिया।''

हे धर्मदास! मंदिर का काम पूरा हुआ और मंदिर में हरि की स्थापना हुई तब हरि ने पण्डो को यह स्वप्न दिखाया कि

जिसने सागर के तट पर अपनी कुटिया बनाई है। उस कबीर दास को मैंने भेजा है। कबीर के दर्शन करते ही सागर की लहरें शान्त हुई और मेरा मंदिर बच सका।

पण्डे के पाखंड को दूर करना:

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! पण्डे लोग सागर के किनारे स्नान करके मंदिर में गए। एक पण्डे के मन में ऐसा पाखंड आया कि मुझे कुटिया के पास एक नीच जाति पुरुष के दर्शन हुए हैं इसलिए मुझे हरि के दर्शन का फायदा नहीं हुआ। हे धर्मदास! मैंने फिर एक कौतुक किया जब पण्डा मंदिर में गया तो उस पण्डे को मंदिर की सारी मूर्तियाँ कबीर के रूप में दिखाई दी। यह कौतुक देखकर पण्डे को समझ आई तो पण्डे ने मेरे पास आकर सिर झुकाया और कहा, ''हे प्रभु! मैं आपके भेद को नहीं समझ पाया इसलिए आपने मुझे यह कौतुक दिखाया है। मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे पापों को क्षमा करें।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे ब्राह्मण! तुम मेरी बात ध्यान देकर सुनो। तुम द्वैत भावना छोड़कर ठाकुर जी की पूजा करो। जो जीव भ्रम का भोजन करता है वह अगले जन्म में अंगहीन हो जाएगा; जो छुआछूत में विश्वास करता है वह अगले जन्म में पागल होगा। हे धर्मदास! तुम ध्यानपूर्वक सुनों, मैं भ्रम को हटाने का ज्ञान देकर उस जगह से चला आया।''

धर्मदास ने कहा, ''हे पूर्ण सतगुरु! इसके बाद आप कहाँ गए? कलियुग में आपने किन आत्माओं को जगाया? हे गुरुदेव! मुझे बताऐं कि किन-किन जीवों ने आपकी सेवा की।''

चार गुरुओं की स्थापना का वृतान्त:

कबीर साहब कहते हैं, हे सन्त! सुंदर ज्ञान को सुनो।

मैंने गजथल देश के राजा को ज्ञान दिया।

राय बंके जी: उस राजा का नाम राय बंके जी था मैंने उसे सत-शब्द का ज्ञान दिया। मैंने उसे जीवों को चेताने के लिए गुरुआई का काम सौंपा। उसने बहुत से जीवों को नाम दिया।

सहते जी : फिर मैं शिलमिली दीप गया वहाँ मैंने एक सन्त सहते जी को 'नामदान' दिया। जब उसने मुझे पहचाना तो मैंने उसे भी गुरुआई का काम सौंप दिया।

चतुर्भुज : हे धर्मदास! मैं वहाँ से दरभंगा देश गया वहाँ राजा चतुर्भुज रहता था। सत्य का साथी होने की वजह से उसने मुझे पहचान लिया। जब मैंने देखा कि वह पूरी तरह से मेरी शरण में है तो मैंने उसे भक्ति करने का तरीका बताया। उसकी दृढ़ता को देखकर मैंने उसे 'नामदान' दिया क्योंकि वह भ्रम को छोड़कर मुझसे मिला था। मैंने उसे भी जीवों के उद्धार करने का कार्य दिया। चतुर्भज ने शब्द-नाम का कार्य बड़े प्यार से स्वीकार किया।

धर्मदास: हे धर्मदास! ज्ञान को अपनाकर जीव हंस रूप हो जाते हैं। नाम को ग्रहण करके जीव जाग जाता है और परिवार के सुखों को छोड़कर अच्छे गुणों को धारण कर लेता है। चतुर्भुज, बंके जी, सहते जी और चौथे धर्मदास तुम हो। तुम चारों आत्माओं के मुक्तिदाता हो। तुम्हारी बाँह पकड़कर जम्बू दीप की आत्माएं मुझसे मिल सकती हैं। जो अपने प्रिय गुरु के वचनों को मजबूती से ग्रहण करेंगे काल उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।

धर्मदास की कथा एवं वंश का वर्णन

पूर्व जन्मों की कथाएं:

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु! आप धन्य हैं, आपने मुझे इतना ज्ञान देकर काल के जाल से छुड़ा लिया है। मैं आपका दास हूँ और आपके दासों का भी दास हूँ। मैं आपके गुणों का वर्णन नहीं कर सकता। मेरे हृदय में बहुत खुशी है जो जीव आपके वचनों पर विश्वास करते हैं वे भाग्यशाली हैं। मैं पापी, कुटिल और कठोर हूँ मेरा मन भ्रम में डूबा हुआ था मैंने ऐसा कौन सा तप किया था कि मुझे आपके दर्शन हुए? आप इस भूले जीव को समझाकर कहिए ताकि आपकी वाणी रूपी सूर्य से मेरा मन रूपी कमल खिल जाए?''

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! अब मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊंगा अब तुम पिछली बातें सुनो। मैं यह सब बातें तुम्हें विस्तार से समझा रहा हूँ। द्वापर युग में सन्त सुपच सुदर्शन हुआ था जिसकी कथा मैंने तुम्हें पहले भी सुनाई है। जब मैं सुपच को सतलोक ले गया तो उसने मुझसे विनती।

सुपच सुदर्शन ने कहा, हे सतगुरु! मेरे माता-पिता को भी मुक्त कीजिए। आप जाकर उन्हें काल की कैद से छुड़वाएं; वे यम के देश में बहुत दु:ख सह रहे हैं। मैंने अपने माता-पिता को अनेक प्रकार से समझाया था। उन्होंने बालक समझकर मुझ पर विश्वास नहीं किया लेकिन उन्होंने मुझे भक्ति करने के लिए कभी नहीं रोका। मेरे माता-पिता मुझे भक्ति करते हुए देखकर खुश होते थे। हे प्रभु! इसलिए मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप उन्हें 'सतशब्द' देकर काल की कैद से मुक्त करवा दें।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि जब सुपच सुदर्शन ने मुझसे विनती की तो मैंने उसके वचनों को मान लिया। इसी वजह से मैं फिर दोबारा संसार में आया और कलियुग में मुझे कबीर नाम से जाना गया। सुपच सुदर्शन की माता का नाम लक्ष्मी और पिता का नाम नरहर था। उन दोनों ने सुपच शरीरों को छोड़कर दोबारा मनुष्य जन्म लिया।

पहला जन्म - कुलपति और महेश्वरी की कथा:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! सन्त सुपच सुदर्शन के प्रताप से दोनों का एक ब्राह्मण परिवार में जन्म हुआ और भाग्य ने उन्हें फिर से पति-पत्नी बनाया। ब्राह्मण कुलपति के नाम से और स्त्री महेश्वरी के नाम से जानी गई। महेश्वरी को पुत्र की बहुत इच्छा थी इसलिए वह सूर्य देवता को खुश करने के लिए व्रत रखती थी। एक बार वह अपना आँचल फैलाकर रो-रोकर पुत्र के लिए प्रार्थना कर रही थी उसी समय मैं एक बच्चे का रूप धारण करके आया। मुझे देखकर वह बहुत खुश हुई और अपने घर ले गई। उसने सोचा! भगवान ने मुझ पर दया की है और सूर्य देवता ने व्रत रखने का फल दिया है। मैं कई दिनों तक उनके घर पर रहा। पति-पत्नी ने मेरी सेवा की।

वे बहुत गरीब और दुःखी थे इसलिए मैंने अपने मन में सोचा कि सबसे पहले मैं इनकी गरीबी दूर करूँ फिर इन्हें भक्ति और मुक्ति की बात बताऊँ। वे जब मुझे पालने में एक झूला देते तो उन्हें एक तोला सोना मिल जाता; जिससे वे अमीर होकर सुखी हो गए फिर मैंने उन्हें अनेक प्रकार से 'सत्य शब्द' की बातें समझाई लेकिन उनके हृदय में विश्वास नहीं आया। उन्होंने बच्चे के ज्ञान पर विश्वास नहीं किया, मुझे नही पहचाना इसलिए मैं उस देह को छोड़कर गुप्त हो गया।

दूसरा जन्म - चन्दन साहु और ऊदा की कथा:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! ब्राह्मण, ब्राह्मणी-कुलपति और महेश्वरी शरीर छोड़ गए उन्होंने मेरे दर्शन किए थे इसलिए उन्हें फिर से मनुष्य का तन मिला। दोनों फिर से इकट्ठे हुए और चंदवारा शहर में रहने लगे तब औरत का नाम ऊदा और आदमी का नाम चन्दन साहु पड़ा। मैं फिर महान सतगुरु के पास से चलकर चंदवारा में प्रकट हुआ। मैंने वहाँ बालक का रूप बनाया और तालाब में कमलदल पर आसन लगाकर आठ पहर तक रहा। ऊदा तालाब पर स्नान करने आई और सुंदर बालक को देखकर आकर्षित हुई। मैंने ऊदा को बालक के रूप में दर्शन दिए, वह मुझे अपने घर ले आई।

चन्दन साहु ने कहा, ''हे स्त्री! मुझे बताओ कि तुम्हें यह बालक कहाँ से मिला है और तुम इसे यहाँ क्यों लाई हो?'' ऊदा ने कहा, ''मुझे यह बालक तालाब से मिला है इसकी सुंदरता देखकर यह मुझे अच्छा लगा।'' चन्दन साहु ने कहा, ''हे मूर्ख स्त्री! जल्दी जाकर इस बालक को वहीं छोड़ आओ। जाति, कुटुम्ब के सब लोग हँसेंगे तो मुझे बहुत दुःख होगा।''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! चन्दन साहु बहुत क्रोधित हुआ तो ऊदा अपने पति से डर गई। चन्दन साहु ने दासी से कहा, ''इस बालक को उठाकर तालाब में फैंक आओ।'' जब दासी बालक को उठाकर तालाब की तरफ जाने लगी मैं दासी के हाथों से गायब हो गया तब दोनों व्याकुल होकर रोने लगे और मुझे ढूंढ़ने लगे। वे दोनों इतने अचम्भित थे कि उनके मुख से बोल नहीं निकल रहा था।

तीसरा जन्म - नीरू और नीमा की कथा:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! इस तरह बहुत समय बीत गया। उन्होंने शरीरों को छोड़कर फिर मनुष्य जन्म पाया।

संयोग से इस बार चन्दन साहु ने काशी नगर में नीरू नाम के जुलाहे के रूप में जन्म लिया। वह अपनी पत्नी नीमा का गौना करवाकर ला रहा था, उस दिन ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा थी। रास्ते में उसकी पत्नी पानी पीने के लिए तालाब पर गई। मैं तालाब में कमलदल पर बालक बनकर लेट गया और बालक के स्वभाव के कारण कौतुक करने लगा।

नीमा की मुझ पर नज़र पड़ी। मुझे देखकर उसके मन में ऐसी खुशी हुई मानों! सूर्य को देखकर कमल खिल गया हो या जिस प्रकार गरीब को धन मिल गया हो। उसने दौड़कर बालक को उठा लिया और उसे नीरू के पास ले आई। तब नीरू जुलाहे ने क्रोध में आकर कहा, ''जल्दी से इस बालक को फैंक आओ।

नीमा बहुत खुश थी और मन में विचार करने लगी। तब मैंने उससे कहा, ''हे नीमा! मेरी बात ध्यान से सुनो! पिछले प्यार के कारण मैं तुम्हें दर्शन देने के लिए आया हूँ, तुम मुझे अपने घर ले चलो अगर तुम मुझे पहचानकर अपना गुरु बनाओगी तो मैं तुम्हें नामदान दूँगा जिससे तुम काल के जाल में नहीं पड़ोगी।'' मेरे ऐसे वचन सुनकर नीमा नीरू के डर को भूल गई, मुझे काशी नगर अपने घर ले आई।

नीमा ने किसी की परवाह नहीं की, वह मुझे इस प्रकार अपने घर ले गई जैसे गरीब धन मिलने पर उसे अपने घर ले आता है। जब नीरू जुलाहा ने नीमा के मोह को देखा तो उसने भी उस बालक को घर लाने की इजाजत दे दी। मैं बहुत दिनों तक उनके घर रहा लेकिन दोनों ने बालक जानकर मुझ पर विश्वास नहीं किया।

चौथा जन्म - धर्मदास और आमिन की कथा:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! बिना विश्वास के मुक्ति नहीं होती, सोच विचारकर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए। जब जुलाहों के जन्म का समय खत्म हो गया तो उनका जन्म मथुरा में हुआ फिर मैंनें उन्हें वहाँ जाकर दर्शन दिए तो उन्होंने मुझे पहचान लिया, पति-पत्नी ने 'नाम' लेकर भक्ति की। मैंने उन्हें सतलोक में जगह दी। उन्होंने अपना मन सतपुरुष के चरणों में लगा लिया।

सुकृत अंश धर्मदास का काल जाल में फँसना:

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! सतलोक में आत्माएं हंस रूप धारण करके सतपुरुष के चरणों में मन लगाए रखती हैं। उन हंस रूप आत्माओं को देखकर सतपुरुष बहुत प्रसन्न होते हैं। एक बार सतपुरुष ने सुकृत अंश को प्यार से कहा, ''हे सुकृत! तुम बहुत समय से सतलोक में रह रहे हो, काल जीवों को कष्ट दे रहा है। तुम संसार में जाकर जीवों को सतलोक का संदेश दो; नाम देकर जीवों को मुक्त कराओ। यह सुनकर सुकृत खुश हो गया और वह तभी सतलोक से रवाना हो गया।''

सुकृत को देखकर काल बहुत खुश हुआ कि इसे मैं अपने जाल में फंसा लूँगा। काल ने अनेक तरकीबों से सुकृत को अपने जाल में फंसा लिया जब बहुत दिन बीत गए एक भी आत्मा काल को जीतकर सतलोक नहीं पहुँची तब जीवों की पुकार सतलोक में सुनाई दी फिर सतपुरुष ने मुझे बुलाया।

उस समय सतपुरुष की आवाज आई, ''हे ज्ञानी! संसार में जाओ। मैंने जीवों के लिए अपनी अंश सुकृत को संसार में भेजा था, मैंने उसे आदेश दिया था कि तुम नाम के सहारे जीवों

को भवसागर पार करवाकर अपने घर वापिस लाना। यह सुनकर वह चला तो गया लेकिन अब तक लौटकर सतलोक वापिस नहीं आया है। सुकृत भवसागर में काल के जाल में फँसकर भूल गया है, हे ज्ञानी! तुम जाकर उसे जागृत करो ताकि मुक्ति का पंथ आगे चले। सुकृत के घर में मेरे ब्यालिस अंशों का अवतार होगा। हे ज्ञानी! जल्दी जाकर काल के बंधनों को काट दो।''

कबीर साहब कहते हैं, हे धर्मदास! मैं सतपुरुष के आगे सिर झुकाकर चल पड़ा और अब तुम्हारे पास आया हूँ। हे धर्मदास! अब तुम नीरू का अवतार हो और आमिन नीमा की अवतार है; तुम मेरी बहुत ही प्रिय आत्माएं हो। मैं तुम्हारे लिए बहुत चिन्तित हूँ। मैं सतपुरुष की आज्ञा से तुम्हारे पास आया हूँ और मैंने तुम्हें पिछली सारी बातें याद दिलाई हैं। मैंने संयोग से तुम्हें कई बार दर्शन दिए हैं। हे धर्मदास! तुमने इस बार मुझे पहचान लिया है। मैं तुम्हें सतपुरुष का शब्द बताऊँगा, ''शब्द को पहचानो और उसमें पूरा विश्वास करो।''

धर्मदास की भावुकता:

धर्मदास दौड़कर कबीर साहब के चरणों में गिर पड़ा उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बहुत उत्साहित होकर बोला, हे प्रभु! आपने मेरी आत्मा का भ्रम दूर कर दिया है। वह रो रहा था और कुछ भी नहीं बोल रहा था। मेरे चरणों से उसका ध्यान एक क्षण के लिए भी नहीं हटा। वह बहुत ज्यादा भावुक होने की वजह से शान्त था और अपनी आँखे नहीं खोल रहा था।

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! आप धन्य हैं आपने मुझे मुक्ति देने के लिए यह शरीर धारण किया। अब मुझ पर ऐसी दया करो कि मैं आपको एक क्षण के लिए भी न भूलूँ। मुझे यह

वरदान दो कि मैं दिन-रात आपके चरणों में रहूँ।''

कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास! अब तुम प्रेम और विश्वास के साथ नाम को ग्रहण करो। मुझे पहचानकर तुम्हारा भ्रम दूर हो गया है। तुम हमेशा प्यार में पक्के रहोगे। जो जीव गुरु के दिखाए हुए मार्ग पर नहीं चलता वह दुःख पाता है। गुरु कुमार्ग और सुमार्ग को समझाता है। तुम मेरा अंश हो। बहुत सारी आत्माओं को सतलोक लेकर जाओगे। मैंने जो चारों को गुरुआई दी थी तुम उन सबमें मुझे ज्यादा प्यारे हो। तुममें और मुझमें कोई फर्क नहीं है।

अपने अंदर देखो और शब्द की पहचान करो। मन, वचन और कर्म से अपना ध्यान मेरी तरफ लगाओ। मैंने तुम्हारे हृदय में अपना निवास करके तुम्हें अपना बना लिया है। तुम अपने दिल में कोई भी भ्रम मत लाओ। मैं तुम्हें अविचल नाम देकर तुम्हारी आत्मा का उद्धार करूँगा। तुम जम्बू दीप की आत्माओं को मुक्ति देने वाले होओगे। जो तुम्हारे दिए नाम का सिमरन करेगा वह सतलोक जाएगा।''

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु ! आप धन्य हैं, आपने मुझे अपना बनाकर ज्ञान दिया। आपने मुझे अपने चरण कमलों में लगा लिया है यह दिन मेरे लिए शुभ है। हे दुःखों को दूर करने वाले! अब मेरे ऊपर ऐसी दया करें कि काल निरंजन कभी मुझे जाल में न जकड़े; मुझे सार-शब्द दीजिए।''

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! तुम सुकृत के अंश हो। अब तुम नामदान लेकर अपनी चिंताओं से मुक्त हो जाओ। अब मैं तुम्हें चौका बनाकर नाम का परवाना दूँगा। तुम तिनका तोड़कर अर्थात काल से संबन्ध तोड़कर नाम का परवाना लो जिससे काल का अभिमान दूर हो जाएगा। तुम शालिग्राम अर्थात ठाकुर जी की मूर्ति से आशा छोड़कर सत-शब्द को लो। दसों

अवतार, देवताओं की माया को तुम काल का ही रूप समझो। तुम संसार में आत्माओं को जगाने के लिए आए थे लेकिन तुम स्वयं ही काल के फंदों में पड़ गए।

हे धर्मदास! अब तुम जाग जाओ और सतपुरुष के शब्द को प्रकट करो। तुम नाम का अधिकार लेकर जीवों को जगाकर उन्हें काल के फंदे से मुक्त करो। तुम इसी काम के लिए संसार में आए हो। अब तुम अपने मन में दूसरें विचारों को मत आने दो।

हे धर्मदास! चतुर्भुज, बंके जी, सहते जी और चौथे तुम हो। तुम चारों इस संसार को तारने वाले गुरु हो। मेरा यह वचन सत्य है, ये चारों अंश जीवों के लिए संसार में प्रकट किए हैं। मैंने इन्हें अपना ज्ञान दे दिया है जिससे काल दूर भाग जाएगा। हे धर्मदास! चारों गुरुओं में से तुम जम्बू दीप के गुरु हो। तुम्हारे ब्यालिस अंशों की शरण लेकर आत्माएं मुक्ति प्राप्त करेंगी।

चौका का साज व धर्मदास को नामदानः

धर्मदास ने प्रेमपूर्वक मेरे चरण पकड़कर कहा, ''हे प्रभु! आपने मुझे सौभाग्यशाली बना दिया है। मेरे पास वह जुबान नहीं जिससे मैं आपके अमृत जैसे गुणों का वर्णन कर सकूँ। हे स्वामी! आपकी महिमा अपार है। मैं हर तरह से अयोग्य हूँ लेकिन आपने मुझ पापी को बचा लिया है।''

हे प्रभु! अब मुझे चौका का भेद बताइएं, हे सुखों के धाम! तिनका कैसे टूटेगा और काल से संबन्ध कैसे दूर होगा? आप जो कहेंगे मैं वही करूंगा इसमें कोई कमी नहीं रखूंगा।

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! तुम आरती की विधि का वर्णन सुनो जिसके करने से यमराज भाग जाता है। सात

हाथ के नाप का वस्त्र ले आओ। एक सफेद मंडप बनाओ। घर और आँगन को साफ कर दो फिर चौका बनाकर उस पर चंदन का छिड़काव करो उस पर आटे का चौरस बनाओ। सवा सेर चावल, सफेद मिठाई, पान, सफेद सुपारी, लोंग, इलायची और कपूर रख दो। केले के पत्तों के ऊपर आठ तरह के सूखे मेवे रख दो और नारियल लाकर सब चीजें अच्छी तरह सजा दो। इस मथुरा नगर में रतना नाम की एक मिठाईवाली है उसकी दुकान से मिठाई और गुड़ लेकर आओ।

धर्मदास कबीर साहब को शीश झुकाकर चल पड़ा लेकिन वह नहीं जानता था कि रतना की दुकान कहाँ पर है? वह बाजार पहुँचकर इस सोच में था कि रतना की दुकान के बारे में किससे पूछे। इतने में रतना हाथ में मिठाई लेकर धर्मदास के पास आई और कहने लगी, ''हे धनी धर्मदास! मेरा नाम रतना है यह मिठाई ले जाओ।'' धर्मदास को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने कहा, ''हे माता! यह बड़े आश्चर्य की बात है आपको यह सब कैसे पता चला।'' रतना ने कहा, ''हे धर्मदास! यह सब सतगुरु की लीला है। तुम शीघ्र सामान लेकर जाओ और सतगुरु से 'नाम' लो।''

उस समय सतगुरु शिष्य को पूरा तैयार करके ही नाम देते थे। कबीर साहब ने धर्मदास को रतना के पास इसलिए भेजा था कि धर्मदास को कबीर साहब में और अधिक दृढ़विश्वास हो जाए और उसके दिल में नामदान लेने के लिए पूरी लगन पैदा हो जाए।

कबीर साहब ने जो भी आज्ञा दी धर्मदास सब कुछ ले आया। फिर धर्मदास ने यह विनती की कि हे समर्थ पुरुष! मुझे मुक्ति का तरीका बताओ? यह सुनकर सतगुरु ने प्रसन्न होकर कहा, ''हे धर्मदास! तुम धन्य हो तुम्हारे मन ने मुझे स्वीकार किया है।''

कबीर साहब विधि पूर्वक चौका बनाकर आसन पर बैठ गए। धर्मदास ने परिवार में सभी बड़े और छोटों को बुला लिया। दोनों स्त्री और पुरुष ने एकमत होकर हाथों में नारियल लिया और गुरु को भेंट किया और सतगुरु को मस्तक झुकाया।

धर्मदास ने कहा, हे सतगुरु! आपके चरण चाँद और मेरा मन चकोर की तरह है। मेरे मन में आपकी भक्ति के कारण मेरा सब संदेह दूर हो गया है।

कबीर साहब ने जब चौका बनाकर नामदान दिया तो मृदंग की ताल और झांझर की झंकार की धुन बजने लगी। धर्मदास का काल से तिनका टूट गया ताकि अब उसे काल न पकड़ पाए। कबीर साहब ने सतनाम को प्रकट कर दिया और धर्मदास ने उसी क्षण नाम-शब्द को ग्रहण कर लिया। धर्मदास ने नाम का परवाना लेकर कबीर साहब को सात बार दंडवत प्रणाम किया। फिर सतगुरु ने अपना हाथ उसके सिर पर रखकर उसे उपदेश देकर उसके जीवन को सफल बना दिया।

धर्मदास को उपदेश:

कबीर साहब ने कहा, ''सुनो धर्मदास! मैंने तुम्हें 'नामदान' का अनुभव दे दिया है और काल के जाल को नष्ट कर दिया है। अब तुम रहनी और गहनी अर्थात चाल-चलन की मर्यादा सुनो इसे पालन किए बिना मनुष्य भटक जाता है; तुम सदा मन लगाकर भक्ति करना और मान-बड़ाई को छोड़कर साधुओं की सेवा करना। सबसे पहले कुल की लोकलाज छोड़कर निडर होकर भक्ति करो। सभी पूजा-पाठ छोड़कर गुरु की सेवा करो; सिमरन करना ही गुरु की पूजा है। जो जीव गुरु से चालाकी करता है गुरु से किसी बात का पर्दा रखता है वह भवसागर में भटकता रहता है। मोह माया को छोड़कर सदा गुरु के वचनों में मन लगाओ।''

हे धर्मदास सुनों! तुम मजबूती से केवल 'नाम' की ही आशा रखो। काल ने इस संसार में अनेक प्रकार के दुःखों के जाल फैला रखे हैं, सतपुरुष के नाम से सदबुद्धि आती है। जहाँ सब स्त्री-पुरुष मिलकर नाम गृहण करते हैं वहाँ भंयकर काल नहीं रहता।

हे धर्मदास! तुम्हारे घर के जितने जीव बच गए हैं उन्हें बुला लो। तुम सतगुरु के चरणों में मजबूती से ध्यान लगाओ ताकि काल का फंदा कभी न पड़े।

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! आप मेरे जीवन के सहारे हैं। आपने मेरे सब दुःख-दर्द दूर कर दिए हैं। मेरा एक पुत्र नारायण है उसे भी 'नामदान' दीजिए। यह सुनकर सतगुरु हँस दिए पर उन्होंने अपने भाव प्रकट नहीं होने दिए और उन्होंने कहा, ''तुम जिसका भी भला चाहते हो उन सबको बुला लो। जो समर्थ सतगुरु के चरणों को पकड़ लेंगे वे फिर इस भवसागर में जन्म नहीं लेंगे।''

यह सुनकर बहुत से जीव सतगुरु के चरणों में आ गए लेकिन नारायण दास नहीं आया। धर्मदास ने मन में सोचा कि मेरा समझदार पुत्र क्यों नहीं आया!

नारायण दास द्वारा कबीर साहब की अवज्ञाः

धर्मदास ने कहा, हे दास दासिओ! मेरा पुत्र नारायण दास कहाँ है? उसे ढूंढ़कर लाओ ताकि वह भी गुरु जी के पास आए। वह गुरु रूपदास पर भरोसा करता है वहाँ गीता का पाठ कर रहा होगा शीघ्र जाओ उससे कहो कि उसे बुलाया गया है। यह सुनते ही संदेशवाहक वहाँ गया जहाँ नारायण दास था।

संदेशवाहक ने नारायण दास के पास जाकर कहा कि शीघ्र चलो देर मत करो तुम्हें धर्मदास ने बुलाया है।

नारायण दास ने कहा, ''मैं अपने पिता के पास नहीं जाऊँगा। वह बूढ़े हो गए हैं उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। इसलिए उन्हें वह जुलाहा अच्छा लगता है। हरि समान दूसरा कर्ता कौन है? मैं किसी और की पूजा क्यों करूँ? मैं मन से विष्णु को अपना गुरु मानता हूँ।'' संदेशवाहक लौटकर धर्मदास के पास आया और उसने कहा कि नारायण दास नहीं आएगा। यह सुनकर धर्मदास अपने बेटे के पास गया।

धर्मदास ने नारायण दास से कहा, ''हे पुत्र! आओ हम घर चलें वहाँ सतपुरुष आए हुए हैं। तुम विनती करके सतगुरु के चरणों को छूना ताकि तुम्हारे सारे कर्म कट जाएं। आओ और अपना घमंड त्यागकर सतगुरु को स्वीकार कर लो। यह मौका दोबारा नहीं आएगा। हे पुत्र! मैंने पूर्ण गुरु को पाकर भ्रम के फंदो को कटवा लिया है तुम भी शीघ्र चलो जिससे तुम्हारा भी जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो जाए।''

नारायण दास ने कहा, ''पिता जी! आप पागल हो गए हो जीवन के तीसरे पड़ाव में आकर आपने एक जीवित गुरु को धारण किया है। राम नाम के बराबर कोई देव नहीं ऋषि-मुनि भी उसी की भक्ति करते हैं। आपने विष्णु को छोड़कर बुढ़ापे में एक जीवित गुरु को धारण किया है।''

धर्मदास ने नारायण दास को बाँह से पकड़कर उठा लिया और सतगुरु के पास ले आए। ''हे पुत्र! सतगुरु के पैर छू लो, यह यम के फंदों से छुड़ाने वाले हैं। जो जीव नाम की शरण में आ जाता है वह फिर चौरासी लाख योनियों के कष्ट में नहीं पड़ता और सतगुरु के नाम की सहायता से संसार को छोड़कर सतलोक चला जाता है।''

फिर नारायण दास ने अपना मुँह फेर लिया और कहा, ''यह जीवित ठग कहाँ से आया है? जिसने मेरे पिता को पागल

कर दिया है। वेदों-शास्त्रों को गलत बताते हुए यह अपनी महिमा गा रहा है। जब तक यह जीवित ठग आपके साथ रहेगा तब तक मैं इस घर में नहीं रहूँगा।''

यह सुनकर धर्मदास व्याकुल हो गया कि मेरे पुत्र को क्या हो गया है ? फिर आमिन ने नारायण दास को कई तरीकों से मनाने की कोशिश की लेकिन उसने एक भी बात नहीं मानी। धर्मदास गुरु के पास आकर विनती करने लगा कि हे प्रभु! मेरे पुत्र के मन में बुरे विचार क्यों आ रहे हैं?

कबीर साहब कहते हैं कि तब सतगुरु ने मुस्कुराते हुए कहा कि हे धर्मदास! मैं तुम्हें पहले भी बता चुका हूँ अब फिर बता रहा हूँ। ध्यान से सुनो, आश्चर्यचकित मत होवो। जब सतपुरुष की आवाज उठी, ''हे ज्ञानी! तुम शीघ्र संसार में जाओ काल जीवों को बहुत कष्ट दे रहा है। तुम काल के फंदे काट दो। उसी समय ज्ञानी सतपुरुष को शीश झुकाकर वहाँ आए जहाँ अन्यायी धर्मराय था।''

धर्मराय ने कहा, ''हे ज्ञानी! मैंने तपस्या करके दीपो को प्राप्त किया है। तुम भवसागर में क्यों आए हो? तुम मेरा भेद नहीं जानते, मैं तुम्हें मार डालूँगा।''

ज्ञानी ने कहा, ''हे अन्यायी! तुम मेरी बात सुनो मैं तुम्हारे डराने से नहीं डरता अगर तुम अभिमान भरे वचन बोलोगे तो मैं तुम्हें उसी समय मार डालूंगा।''

तब निरंजन ने विनती की, ''हे ज्ञानी! तुम संसार में जाकर जीवों को मुक्त करोगे। जब तुम सारे जीवों को सतलोक ले जाओगे तो मेरी भूख कैसे मिटेगी? सतपुरुष ने मुझसे कहा था कि तुम एक लाख जीवों को खाओगे तो सवा लाख जीव पैदा हो जाएंगे। जिस प्रकार सतपुरुष ने मुझे राज्य दिया था उसी तरह आपने भी मुझे वचन दिया था कि आप संसार में

आकर जीवों को काल के जाल से छुड़वाओगे। पहले तीनों युगों में बहुत कम आत्माएं सतलोक गई लेकिन कलियुग में आप बहुत बड़ा कार्य करोगे और अपना पंथ बनाकर आत्माओं को सतलोक ले जाओगे।

इतना कहकर निरंजन ने कहा मेरा तुम्हारे ऊपर जोर नहीं चलता अगर कोई और भाई आता तो मैं उसे मारकर एक क्षण में खा जाता अगर मैं आपसे विनती करूंगा तो आप नहीं मानोगे। आप संसार में जा रहे हैं मैं ऐसा उपाय करूंगा जिससे कोई भी आपके शब्द को नहीं सुनेगा मैं जीवों के लिए कर्मकांड, भ्रम और मौजमस्ती के साधन बनाऊंगा जिनमें फँसकर कोई भी सतलोक को नहीं पा सकेगा। मैं हर घर में भ्रम के भूत पैदा कर दूँगा जिससे धोखा खाकर जीव भूल में पड़ जाएंगे। मनुष्य शराब और माँस का भोजन करेंगे। हे भाई! तुम्हारी भक्ति बड़ी मुश्किल है तुम कितना भी समझाना कोई तुम्हारी बात नहीं मानेगा इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि अब तुम संसार में मत जाओ।''

कबीर साहब साहब कहते हैं उस समय मैंने काल से कहा, ''मैं तुम्हारे छल और बल को जानता हूँ मैं जीवों को सत्य शब्द मजबूती से पकड़वाकर तुम्हारे भ्रम को दूर कर दूँगा तुम्हारे लाखों छलों को बताकर नाम की ताकत से जीवों को मुक्त कर दूँगा जो जीव मन, वचन और कर्म से सिमरन करके सतपुरुष में ध्यान लगाएंगे वे तुम्हारे सिर पर पैर रखकर सतलोक को चले जाएंगे। बहादुर और बुद्धिमान आत्मा तुम्हारे भ्रम को दूर करेगी। वह आत्मा अति प्रसन्न होकर शब्द पर विश्वास करेगी।''

हे धर्मदास! यह सुनकर काल अपने आपको हारा हुआ जानकर अपने छल फैलाने पर विचार करने लगा।

धर्मराय ने कहा, ''हे सुखों को देने वाले सतपुरुष के अंश! मुझे एक बात समझाकर कहिए कि इस युग में आपका क्या नाम होगा?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मराय! इस युग में मेरा नाम कबीर होगा। कबीर का नाम लेने वाले के पास यम नहीं जाएगा।'' इतना सुनकर अन्यायी धर्मराय बोला, ''हे कबीर! मैं तुम्हारे नाम पर पंथ चलाकर जीवों को धोखा दूँगा। मैं भी बारह पंथो को चलाऊंगा, वे भी तुम्हारे नाम से उपदेश देंगे। मेरा अंश 'मृत्युअंधा दूत' सुकृत अंश धर्मदास के घर जन्म लेगा उसका नाम नारायण दास होगा।''

हे भाई! सबसे पहले मेरा अंश धर्मदास के घर अवतार हो फिर तुम्हारे अंश का अवतार हो। आप मेरी यह विनती मान लें मैं बार-बार आग्रह करता हूँ।

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! सुनो मैं उसको वचन देकर फिर संसार में आया। इस प्रकार मृत्यु-अंधा तुम्हारे घर में नारायण दास के नाम से आया है। नारायण काल का अंश है, जीवों के कारण काल ने यह फँदा बनाया है।''

हे धर्मदास! जीवों को धोखा देने के लिए वह मेरे नाम से पंथ चलाएगा, जो जीव उसके भेद को नहीं समझेंगे वे नर्कों में जाएंगे। जिस प्रकार शिकारी की बीन का नाद सुनकर हिरण उसके पास आता है और शिकारी उसे मार डालता है इसी प्रकार यम ने जाल बिछाए हैं। जो जीव जागने वाले होंगे वे ही जागेंगे। जो मेरे अंश से नाम लेंगे वे सतलोक को जाएंगे।

काल के बारह पंथों का वर्णन:

धर्मदास ने कहा, ''हे साहब! आपने जो काल को बारह पंथो का वचन दिया था, आप मुझे उन पंथों के बारे में बताइए।

मुझे हर पंथ के रीति-रिवाज के बारे में बताइए। मैं अज्ञानी हूँ; आप सतपुरुष के समान हैं मुझ दास पर दया करें। यह कहकर धर्मदास ने उठकर कबीर साहब के चरणों को पकड़ लिया।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! मैं तुम्हारे सब भ्रमों को दूर कर दूँगा। मैं तुम्हें बारह पंथों के नाम बताकर उनके रीति-रिवाज और भेदों को बताऊँगा। मैं उनकी सब बातें बताकर तेरे मन के भ्रम दूर करके तेरी चिन्ता को दूर कर दूँगा।''

(1) **मृत्युअंधा दूत का पंथ** - हे धर्मदास! विवेकबुद्धि धारण करके पहले पंथ का विवरण सुनो। मृत्युअंधा काल का बहुत बड़ा दूत है जिसने तुम्हारे घर जन्म लिया है; मैं तुम्हें बार-बार समझा रहा हूँ यह जीवों को बहुत दुःख देने वाला होगा।

(2) **तिमिर दूत का पंथ** - हे धर्मदास! दूसरा तिमिर दूत आएगा। यह अहीर जाति में जन्म लेकर अपने आपको दास कहलाएगा और तुम्हारे बहुत से धार्मिक ग्रन्थों को चुराकर अपना अलग ही पंथ चलाएगा।

(3) **अंधअचेत दूत का पंथ** - अब मैं तुम्हें तीसरे पंथ के बारे में बता रहा हूँ। यह पंथ अंधअचेत दूत चलाएगा। यह तुम्हारे पास नाई बनकर आएगा इसका नाम सुरत गोपाल होगा। यह अपना अलग ही पंथ चलाएगा और अक्षर योगों से जीवों को भ्रम में डालेगा।

(4) **मनभंग दूत का पंथ** - अब चौथे पंथ की बात सुनो। यह पंथ मनभंग दूत चलाएगा। यह उत्पत्ति की कथा लेकर अपना पंथ चलाएगा। संसार इसे मूल पंथ कहेगा। यह जीवों को *लूदी* नाम से समझाएगा और इसे ही पारस नाम कहेगा। यह झंग शब्द का सिमरन देगा इस प्रकार यह जीवों को यहाँ रखेगा।

(5) **ज्ञानभंगी दूत का पंथ** - हे धर्मदास! अब तुम पाँचवें

पंथ की बात सुनो। यह पंथ ज्ञानभंगी दूत चलाएगा। इसका पंथ टकसार है। यह देवताओं, साधुओं और वेद-शास्त्रों की बातें करेगा। जीवों को जीभ, नेत्र, और मस्तक की रेखाओं के बारे में समझाएगा। यह जीवों के तिल, मस्स के चिह्न देखकर उनको भ्रम में डालेगा। जो जीव जैसा काम करना चाहेगा, उसे वैसे ही काम में लगा देगा। यह स्त्री-पुरुषो को बंधन में डालकर चारों दिशाओं में घुमाएगा और संसार से नहीं निकलने देगा।

(6) **मन मकरंद दूत का पंथ** - हे धर्मदास! छठा पंथ कमाली नाम से होगा। यह पंथ तब शुरू होगा जब मन मकरंद दूत संसार में आएगा। यह मृत शरीर में निवास करेगा और मेरा पुत्र बनकर पंथ को चलाएगा। यह जीवों को झिलमिल ज्योति दिखाकर भ्रम में डालेगा। जब तक जीव देखेगा तब तक झिलमिल ज्योति दिखाई देगी। जिसने दोनों आँखों से झिलमिल ज्योति नहीं देखी, वह उस ज्योति को कैसे पहचानेगा; झिलमिल ज्योति को काल की ज्योति समझो।

(7) **चितभंग दूत का पंथ** - हे धर्मदास! काल निरंजन का सातवाँ दूत चितभंग होगा। यह अनेक प्रकार के रूपों और वाणियों द्वारा जीवों को अपने रंग में रंग लेगा। यह *दौन* नाम से पंथ चलाएगा। यह पाँच तत्वों और तीन गुणों की बात करेगा। यह झूठ बोलेगा कि जो शब्द यह बोल रहा है, वह सतपुरुष है। यह अपने आपको ब्रह्मा कहेगा। यह कहेगा कि राम ने वशिष्ठ को अपना गुरु क्यों बनाया? कृष्ण ने भी गुरु की सेवा की थी। ऋषियों, मुनियों का तो कहना ही क्या? नारद ने अपने गुरु को दोष दिया इसलिए उसे नर्कों में जाना पड़ा। यह दूत 'बीजक' के ज्ञान की स्थापना करेगा जैसे कि गूलर के अंदर कीड़ा रहता है। कोई भी इस पंथ से कभी भी फायदा नहीं उठा पाएगा, इस पंथ पर चलकर जीव अंत में रोएगा।

(8) **अकिल भंग दूत का पंथ** - अब मैं तुम्हें आठवें पंथ के बारे में बताता हूँ इस पंथ को चलाने वाले का नाम अकिल भंग होगा। यह इस पंथ को परमधाम ले जाने वाला बताएगा। यह कुछ कुरान और कुछ वेदों की बातों को चुराएगा फिर कुछ मेरे निर्गुण मत की बात लेगा। यह इन सबको मिलाकर एक पोथी बनाएगा। यह ब्रह्म ज्ञान का मार्ग बताएगा जिससे बहुत से जीव कर्मकांडो में लिपट जाएंगे।

(9) **विशम्भर दूत का पंथ** - हे धर्मदास! अब तुम नौवें पंथ की बात सुनो। यह पंथ विशम्भर दूत का खेल है। यह राम और कबीर के नाम से पंथ चलाएगा और निर्गुण सगुण दोनों को मिलाकर उपदेश करेगा और कहेगा कि पाप और पुण्य एक समान हैं।

(10) **नकटानैन दूत का पंथ** - अब मैं तुम्हें दसवें पंथ के बारे में बताता हूँ। इस दूत का नाम नकटानैन है। यह इस पंथ का नाम 'सतनामी पंथ' रखेगा। जिसमें यह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र चारों वर्णों के जीवों को इकट्ठा करेगा। हे भाई! ये आत्माएं सतगुरु के शब्द को नहीं पहचानेंगी और नर्क में चली जाएंगी। यह जीवों को काया के बारे में समझाएगा जिससे जीव सतपुरुष के मार्ग को नहीं पा सकेंगे।

(11) **दुरगदानी दूत का पंथ** - हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें ग्यारहवें पंथ के बारे में बता रहा हूँ। यह बहुत बड़ा दूत है जिसका नाम दुरगदानी है। यह अपना पंथ 'जीव पंथ' के नाम से चलाएगा। यह जीवों को शरीर का ज्ञान देकर बताएगा जिससे जीव भ्रम में पड़कर भवसागर से पार नहीं हो सकेंगे। घंमडी जीव इसके ज्ञान को सुनकर इससे बहुत प्यार करेंगे।

(12) **हंसमुनी दूत का पंथ** - हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें बारहवें पंथ के बारे में बता रहा हूँ। इस पंथ का खेल हंसमुनी

दूत करेगा। यह तुम्हारे घर सेवक बनकर आएगा और तुम्हारी बहुत सेवा करेगा फिर अपना पंथ चलाकर जीवों को काल के जाल में डाल देगा। यह अंश और वंश दोनों का विरोध करेगा। यह कुछ ज्ञान को मानेगा और कुछ को नहीं मानेगा। यह काल के खेल की रचना करके अपने अंश से बारहवां पंथ चलाएगा। इस तरह जीव आएंगे और जाएंगे; बार-बार संसार में जन्म लेंगे। जहाँ जहाँ यमदूत प्रकट होंगे वहाँ वहाँ जीवों को बहुत ज्ञान की बातें कहेंगे। ये अपने आपको कबीर कहेंगे और शरीर का ज्ञान भी देंगे। ये संसार में जहाँ भी जन्म लेंगे आगे चलकर पंथ का प्रचार करेंगे और जीवों को चमत्कार दिखाकर उन्हें भ्रम में डालकर नर्कों में डालेंगे।

हे धर्मदास! इस तरह बलवान काल जीवों से छल करेगा। जो मेरे वचनों को मजबूती से पकड़ेगा मैं उसे बचा लूँगा। हे अंश! तुम सतनाम शब्द का दान देकर आत्माओं को जगाओ। जो अपने हृदय में गुरु के ज्ञान को मजबूती से गृहण कर लेगा वह 'शब्द' की ताकत से यम को पहचान लेगा। तुम अपने मन को जगाते रहो। जो नाम में पूर्ण विश्वास करेगा उसके पास भ्रम नही आ सकेगा।

नौतम वंश का जन्म व वंश राज्य की स्थापना:

धर्मदास ने कहा, हे साहब! आप सब जीवों के आधार हैं; आप मेरे सारे कष्ट दूर कर दो। नारायण मेरा बेटा है मैंने उसे अपने घर से निकाल दिया है। काल का अंश मेरे घर में जन्म लेकर जीवों के लिए दु:ख का कारण बन गया है। हे सतगुरु! आप धन्य हैं आपने मुझे काल के अंश की पहचान करवा दी है। मैंने आपकी बात मानकर अपने पुत्र नारायण को त्याग दिया है। धर्मदास ने शीश झुकाकर विनती की, ''हे जीवों को सुख देने वाले साहब! मुझे यह बताओ कि किस तरह से जीव

भवसागर को पार करके सतलोक जाएंगे ? मैं पंथ को किस तरह से प्रकट करूंगा और मेरा वंश कैसे चलेगा?''

कबीर साहब ने कहा, धर्मदास! तुम शब्द के ज्ञान को समझो। मैं तुम्हें अपना प्रिय मानकर सब बता रहा हूँ। नौतम सुरति सतपुरुष का अंश है जो तुम्हारे घर में जन्म लेगा उसका नाम चूड़ामणि होगा, वही तुम्हारा वंश होगा। इस तरह तुम्हारे वंश में 'शब्द' प्रकट होगा। सतपुरुष का अंश नौतम सुरति जीवों के भ्रम को दूर करके काल के जंजाल को काट देगा।

हे धर्मदास! कलियुग में आत्माएं नाम के प्रताप से ही काल से छुटकारा पाएंगी। जो जीव मजबूती से सतनाम को ग्रहण कर लेंगे मैं उन्हें बचा लूँगा। जिन्हें तेरे वंश पर भरोसा होगा उनके पास यम नहीं आएगा; कलियुग में ऐसी आत्माएं काल के सिर पर पैर रखकर भवसागर से पार हो जाएंगी।

धर्मदास को नौतम अंश का दर्शनः

धर्मदास ने कहा, हे प्रभु! मैं दोनो हाथ जोड़कर आपसे विनती करता हूँ लेकिन यह कहते हुए डरता हूँ अगर मुझे शब्द सतपुरुष के अंश का दर्शन हो जाए तो मेरा संदेह दूर हो जाएगा। हे प्रभु! मेरी इतनी विनती मान लीजिए तब मुझे सत्य का ज्ञान होने से आपके वचनों पर विश्वास हो जाएगा।

धर्मदास के वचन सुनकर कबीर साहब ने इस प्रकार वचन कहे, ''हे मेरे अंश मुक्तामणि! धर्मदास ने बहुत दीन होकर तुम्हारे दर्शन की जिद् पकड़ी है। तुम आकर उसे दर्शन दो।'' उसी समय नौतम सुरति मुक्तामणि एक क्षण के लिए आया और उसने धर्मदास को अपने दर्शन दिए।

धर्मदास ने उनके पैरों को छूकर कहा, ''आपने मेरे दिल की इच्छा पूरी की है। आपके दर्शन पाकर मेरा हृदय आनन्दित

हो गया है। हे ज्ञानी प्रभु! अब ऐसी दया करो कि इस संसार में वचन अंश प्रकट हो जाए ताकि पंथ आगे चल सके।''

चूड़ामणि की उत्पत्ति की कथा:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास सुनो! दस महीने बाद तुम्हारे घर में चूड़ामणि की आत्मा प्रकट होगी। वह आत्माओं की खातिर संसार में देह धारण करेगा। मैं तुम्हें अपना प्रिय जानकर कहता हूँ कि मैंने तुम्हें नाम रूपी वस्तु का भंडार दिया है तुम उसे इस नाम रूपी वस्तु के भंडार को सौंप देना। तुम्हारा पुत्र मेरा ही अंश होगा।''

धर्मदास ने विनती की, ''हे प्रभु! मैंने अपनी इन्द्रियों को वश में किया हुआ है फिर आपका अंश इस संसार में कैसे जन्म लेगा? तब कबीर साहब ने धर्मदास को ध्यान से ही आमिन से सम्बंध बनाने का आदेश दिया। मैं तुम्हें पारस नाम लिखकर देता हूँ जिससे मेरा अंश जन्म लेगा। तुम पान के ऊपर सतपुरुष के नाम को लिखकर पान का परवाना अपनी पत्नी आमिन को दे दो।''

धर्मदास का संदेह दूर हो गया तब उन्होंने दृष्टिभाव से रतिक्रिया की फिर आमिन को सतगुरु के चरणों में बिठाकर पान के पत्ते पर पारस नाम लिखकर दे दिया, जिसे आमिन ने गर्भ की आशा से लिया, ध्यान से रति करने से गर्भ में चूड़ामणि का निवास हुआ। धर्मदास ने परवाना दिया। तब आमिन ने आकर कबीर साहब को दंडवत किया। जब दस मास का समय पूरा हुआ तो सतपुरुष के अंश चूड़ामणि ने जन्म लिया। मार्गशीर्ष मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी को मुक्तायन अर्थात मुक्तिदाता का जन्म हुआ। जब मुक्तायन प्रकट हुए तब खुशी में धर्मदास ने धन-सम्पत्ति आदि का दान दिया और कहा, ''मेरे धन्य भाग्य हैं जो आपने मेरे घर में जन्म लिया।''

जब कबीर साहब को पता चला कि मुक्तायन आ गए हैं तो वह तुरंत धर्मदास के घर गए और कहने लगे, ''यह मुक्तामणि मुक्ति का स्वरूप है इसने जीवों को मुक्त कराने के लिए देह धारण की है। ''

ब्यालिस वंश के राज्य की स्थापना:

कुछ दिन बीत जाने के बाद कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! चौके के लिए जरूरी सामान ले आओ। मैं ब्यालिस वंशों के राज्य की स्थापना करूँगा जिससे जीवों का काम पूर्ण हो।'' धर्मदास ने सामान मँगवाकर कबीर साहब के पास रख दिया और कहा, ''हे ज्ञानी! कुछ और सामान की जरूरत हो तो मुझे बताएं।''

कबीर साहब ने विधि पूर्वक चौका व मंडप बनवाया। चौके को अनेक तरीको से सजाकर चूड़ामणि को वहाँ पर बिठाया और कहा, ''तुम सतपुरुष की आज्ञा से इस संसार में आए हो तुम सतपुरुष की विधि से जीवों को मुक्त करा लोगे। तुम्हें बयालिस वंशों का राज्य दिया गया है जिससे तुम्हारे द्वारा जीवो का कल्याण होगा।''

चूड़ामणि को उपदेश:

कबीर साहब ने कहा, ''हे चूड़ामणि! तुमसे ब्यालिस वंश होंगे। उनसे फिर साठ शाखाएं होंगी फिर उन शाखाओं से और उपशाखाएं होंगी तुम्हारी दस हजार और उपशाखाएं होंगी वे भी वंशों के साथ चलती रहेंगी। हे भाई! उनसे संबन्ध जानकर जो जोर जबरदस्ती करेंगे मैं उन्हें सतलोक नहीं भेजूंगा। जिस प्रकार तुम जीवों को तारने के लिए गुरु बने हो वैसे ही तुम्हारी शाखाएं होंगी।''

हे बुद्धिमान सतपुरुष के अंश! तुम सतपुरुष का नौतम अंश हो जो इस संसार में प्रकट हुए हो। जीवों की बुरी हालत

देखकर सतपुरुष ने तुम्हें यहाँ भेजा है अगर कोई जीव तुम्हें दूसरे वंश का कहेगा तो उस जीव को यम खा जाएगा। हे चूड़ामणि! ज्ञान के जौहरी जीव तुम्हें सतपुरुष के वंश के रूप में पहचान लेंगे वे वंश की छाप लेंगे और हंस रूप हो जाएंगे।

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास सुनो! मैंने तुम्हें ज्ञान का भंडार सौंप दिया है, तुम उस भंडार का परिचय चूड़ामणि को करवा देना। जब चूड़ामणि पूर्ण हो जाएगा तब उसे देखते ही काल चकनाचूर हो जाएगा।''

यह सुनते ही धर्मदास उठा और उसने चूड़ामणि को अपने पास बुलाया। उसी समय चूड़ामणि को नाम का भंडार सौंप दिया गया। फिर दोनों ने आकर सतगुरु के चरणों को स्पर्श किया तो काल डर से काँपने लगा। सतगुरु चूड़ामणि को देखकर बहुत प्रसन्न हुए फिर धर्मदास से कहा, ''हे सुकृत! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो तेरे वंश इस संसार में जीवों को तारने वाले कर्णधार होंगे। जो पहले प्रकट हुआ है वह मेरा अंश है फिर इनसे बयालिस वंश होंगे; वे मेरे वचन-वंश कहलाएंगे जो बाद में संसार में आएंगे वे बिन्द-वंश होंगे।''

वंश की महानता:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! जो जीव वंश के हाथों से नामदान प्राप्त करेंगे वे निर्भय होकर सतलोक जाएंगे। चाहे काल उन्हें रोकने के लिए अट्ठासी करोड़ रास्तों में ढूंढता रहे फिर भी उनका रास्ता नहीं रोक सकेगा। चाहे उन्हें कोई दूसरा कितना ही ज्ञान समझाए लेकिन वे दिन-रात कबीर का नाम ही जपेंगे। जो ज्ञानी होकर अनेक प्रकार से बकवास करता है उससे ज्ञान रूपी व्यजंन के स्वाद पूछो? जिस तरह करोड़ कोशिश करके भोजन तैयार किया जाए लेकिन नमक के बिना सब फीका होता है।

वंश छाप का ज्ञान सत्य रस के समान है। ज्ञान चौदह करोड़ प्रकार का होता है लेकिन 'सार-शब्द' का ज्ञान इन सबसे अलग होता है। आकाश में नौ लाख तरह के तारे हैं उनको देखकर सभी खुश हो जाते हैं लेकिन जब सूर्य उदय होता है तो वह तारों की रोशनी को ढक देता है। ज्ञान को नौ लाख सितारों और 'सार-शब्द' को सूर्य के समान जानो।

जीव को चाहे करोड़ो ज्ञान समझाओ परन्तु वंश की छाप अर्थात नाम से जीव सतलोक जाता है। जिस प्रकार जहाज व उसको चलाने वाला सागर से पार हो जाता है उसी तरह शब्द जहाज है और उसको चलाने वाला केवट तुम्हारा वंश है।''

हे धर्मदास! सतपुरुष मूल आधार हैं। जो वंश को छोड़कर किसी अन्य पंथ पर चलेंगे वे यमलोक को जाएंगे। जो जीव वंश की छाप अर्थात शब्द न पाकर दूसरे शब्द का रात-दिन गुणगान करता है वह काल के फंदे में पड़ेगा; फिर मुझे दोष मत देना। जो शब्द को पहचान लेंगे वे काग की चाल छोड़कर हंसगति को प्राप्त करेंगे। सार-शब्द को गृहण करने वाले जीव को काल कभी नहीं पकड़ पाएगा।

भविष्य की कथा

धर्मदास द्वारा भावी वंशों को काल से बचाने की विनतीः

धर्मदास ने प्रार्थना की, ''हे प्रभु! मैं आप पर कुर्बान जाता हूँ। आपने मुझे यह बताया है कि जीवों के लिए संसार में ब्यालिस वंश का अवतार होगा और जो वचन वंश को पहचान लेंगे उन्हें काल की कोई ताकत नहीं रोक सकेगी। मैंने वंश के अवतार को सतपुरुष का रूप ही समझा है। नौतम अंश जो इस संसार में आएगा मैंने उसे भली प्रकार से परख लिया है फिर भी मेरे मन में एक संदेह है उसे दूर करें।

मुझे समर्थ सतपुरुष ने इस संसार में भेजा तो भी संसार में आने पर काल ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया। आप मुझे सुकृत का अंश कहते हैं फिर भी भयंकर काल ने मुझे डस लिया अगर आगे आने वाले वंशो के साथ ऐसा ही होगा तो संसार के सारे जीवों का नाश हो जाएगा। हे प्रभु! कुछ ऐसा कीजिए जिससे काल निरंजन आने वाले वंशों के साथ छल न कर सके; अब मेरी इज्जत आपके हाथ में है।''

कबीर साहब ने कहा, हे धर्मदास! तुम्हारा संदेह बिल्कुल सत्य है। भविष्य में धर्मराय एक खेल करेगा। अब मैं तुम्हें शुरू से बताता हूँ, तुम ध्यान से सुनो। जब सतपुरुष ने आज्ञा देकर मुझे संसार में भेजा, रास्ते में मेरी मुलाकात काल से हुई तो मैंने उसके साथ वाद-विवाद करके उसके घमंड को दूर कर दिया। तब उसने मेरे साथ छल किया और मुझसे तीन युग माँग लिए फिर उस अन्यायी काल ने कहा, ''हे भाई! मैं तुमसे चौथा युग नहीं माँगूगा।'' मैंने उसे तीन युग दे दिए थे इसलिए उन युगों में मैंने पंथ नहीं चलाया।

जब चौथा युग कलियुग आया तो सतपुरुष ने मुझे फिर संसार में भेजा। तब मुझे कसाई काल ने रास्ते में रोककर अनेक प्रकार से मेरी प्रशंसा की। मैंने पहले भी तुम्हें यह कथा और बारह पंथों का भेद बताया था।

काल द्वारा छल:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! काल ने मेरे साथ छल करके सिर्फ बारह पंथों के बारे में ही बताया और चार दूतों के पंथ को मुझसे गुप्त रखा। जब मैंने चार गुरुओं की स्थापना की उसने भी अपने अंशों को भेजा। जब मैंने चार गुरुओं को जीवों को निकालने का कर्णधार बनाया तो धर्मराय ने छल बुद्धि के जाल को रचा।''

हे धर्मदास! मैं तुम्हें परमार्थ का कार्य जानकर सब बता रहा हूँ; सतपुरुष ने मुझे सब कुछ बता दिया था। जिसके हृदय में नाम का निवास होगा वह इस चरित्र को समझ सकेगा।

निरंजन द्वारा अपने चार अंशों को पंथ चलाने की आज्ञा:

निरंजन ने चार अंशों को पैदा करके उन्हें अनेक शिक्षाएं दी। उसने उनसे कहा, ''हे अंशो! तुम मेरे अपने वंश हो। मैं जो कुछ भी तुम्हें कहूँ उस पर विश्वास करो और मेरी आज्ञा का पालन करो। संसार में मेरा एक दुश्मन है जिसका नाम कबीर है। वह भवसागर को मिटाकर जीवों को सतलोक ले जाना चाहता है। वह छल कपट करके जीवों को भ्रम में डालकर मेरी तरफ आने से रोकता है। वह सतनाम की आवाज लगाकर जीवों को सतलोक भेजता है। उसने मेरे संसार को उजाड़ने का निश्चय किया है इसलिए मैंने तुम्हें उत्पन्न किया है तुम मेरी आज्ञा मानकर संसार में जाओ और कबीर के नाम पर अपने पंथ बना लो।

सारे संसार के जीव भोग-विलासों में लिप्त हैं; मैं जो कहता हूँ जीव वही करते हैं। तुम संसार में जाकर चार पंथो की स्थापना करके जीवों को अपने रास्ते पर डालो। तुम चारों अपना नाम कबीर रख लो और अपने मुँह से कबीर के अलावा कुछ मत बोलना। जब जीव कबीर का नाम सुनकर तुम्हारे पास आएं तो उनके मन को अच्छे लगने वाले वचन कहना। कलियुग में जीवों को ज्ञान की समझ नहीं, वे दूसरों की देखा-देखी भेड़ चाल चलते हैं। वे तुम्हारे वचनों को सुनकर खुश होंगे और बार-बार तुम्हारे पास आएंगे। जब उनकी श्रद्धा तुम्हारे प्रति दृढ़ हो जाएंगी और उनके अंदर कबीर की भावना नहीं रहेगी फिर तुम अच्छी तरह अपना जाल डाल देना ताकि उनको कबीर के भेद का पता ही न चले।

तुम जम्बू दीप को अपना घर बनाना वहाँ कबीर का नाम गूँज रहा है। जब कबीर बांधो गढ़ में जाकर धर्मदास को अपना बना लेगा तब वह ब्यालिस वंश की स्थापना करेगा और तभी उसके राज्य का विस्तार होगा। तब मैं बारह पंथो के छल द्वारा व चौदह यमों की सहायता से जीवों का रास्ता रोकूँगा फिर भी मुझे संदेह है इसलिए मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम ब्यालिस वंशं पर हमला करके उन्हें अपनी बातों में फंसा देना। यह सुनकर दूत खुश होकर कहने लगे-हे बलशाली! हमने आपकी आज्ञा को मान लिया है।''

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा कि काल दूतों का उत्तर सुनकर बहुत खुश हुआ। काल ने उन्हें बहुत समझाया। काल ने उन्हें जीवों को धोखा देने के लिए बहुत सारे मंत्र देते हुए कहा, ''हे भाईयो! तुम चारों अलग-अलग रूप धारण करके संसार में जाओ; छोटे-बड़े किसी को मत छोड़ना। अपना जाल इस तरह फैलाना कि मेरा भोजन मेरे हाथ से न निकल जाए?''

काल के वचन सुनकर चारों दूत बहुत खुश हुए। यही दूत संसार में प्रकट होकर चार नामों से पंथ चलाएंगे। ये चारों दूत इनके मुखिया होंगे और बारह पंथों की अगुवाई करेंगे। ये चारों दूत जो पंथ चलाएगें अर्थ का अनर्थ करेंगे ये चारों पंथ काल के बारह पंथों के आधार होंगे और वचन-वंश के लिए दुःखदायी होंगे। यह सुनकर धर्मदास बहुत घबरा गया।

निरंजन के चार अंशों अर्थात चार दूतों का वर्णनः

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! अब तो मेरा संदेह और भी बढ़ गया है। अब आप मुझे उन दूतों के नाम बताएं, मुझे उनके चरित्र और वेश के बारे में बताएं कि वे संसार में कौन-कौन सा रूप धारण करेंगे, वे किस तरह से जीवों को जाल में डालेंगे और किस देश में आएंगे?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! मैं तुम्हें चारों दूतों के भेद के बारे में समझाकर बताऊँगा। सबसे पहले उनके नाम सुनोः उनके नाम -रंभ, कुरंभ, जय और विजय होंगे।''

रंभ दूत का वर्णन : कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! मैं रंभ दूत का वर्णन कहता हूँ। रंभ दूत अपने रहने का स्थान कालिंजर गढ़ को बनाएगा। यह अपना नाम भगवान भक्त रखेगा, बहुत से जीवों को अपना सेवक बनाएगा। जो आत्माएं हृदय से सच्ची होंगी वे यम के जाल को तोड़कर बच जाएंगी। रंभ बड़ा ताकतवर और विद्रोही दूत है। यह हमेशा तुम्हारे और मेरे मत का खंडन करेगा। यह आरती, नाम, सतलोक, शास्त्रों और नाम के ज्ञान का भी खंडन करेगा। यह गंभीरता से काल की रमैनी की कथा करेगा। यह मेरे वचनों पर झगड़ा करेगा बहुत से जीव इसके जाल में फंस जाएंगे। यह मेरा नाम लेकर चारों दिशाओं में पंथ चलाएगा, अपने आपको कबीर कहलाएगा और मुझे पाँच तत्वों के वश में बताएगा।

यह जीव को सतपुरुष के समान बताएगा और जीवों को धोखा देकर सतपुरुष का खंडन करेगा। यह कबीर को आत्माओं का देवता बताएगा और कर्ता को भी कबीर कहकर पुकारेगा लेकिन कर्ता तो काल है जो जीवों को दुःख देता है। काल की तरह यह दूत भी जीवों को मोह लेगा। यह कर्मकांड करने वाले जीवों को सतपुरुष बताएगा और सतपुरुष को छिपाकर खुद को प्रकट करेगा अगर यह जीव स्वयं ही सब कुछ होता फिर यह दुःखों को क्यों सहन करता।

पांच तत्वों के वश में होकर जीव दुःख पाते हैं लेकिन यह जीवों को सतपुरुष के समान बताएगा; सतपुरुष का शरीर अजर और अमर है उसके रूप की कोई बराबरी नहीं कर सकता। इस प्रकार यह दूत उसका खंडन करके जीवों को ही सतपुरुष बताएगा। वे सागर में अपनी छाया को देखकर सतपुरुष के दर्शन का धोखा खाएंगे। हे धर्मदास! पूर्ण गुरु का ज्ञान बहुत अनुपम है जिससे बिना दर्पण के ही अपना रूप दिखाई देने लगता है।''

हे धर्मदास! इस प्रकार अति बलशाली रंभ दूत आकर छल करेगा। तुम शब्द की सहायता से अपने ब्यालिस वंशो और अंशो को जागृत करना कि वे पूर्ण गुरु के ज्ञान से मेरे शब्द को पहचानकर सदा हृदय में धारण करें। धर्मराय बहुत छल करेगा तुम शब्द में विश्वास करके आत्माओं में शब्द-नाम को जागृत करो।

कुरंभ दूत का वर्णन : कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें कुरंभ दूत के बारे में बताऊँगा। यह मगध देश में प्रकट होकर अपना नाम धनीदास रखेगा। यह बहुत से जाल बिछाएगा और अपने ज्ञान से जीवों को भ्रम में डालेगा, जिनके पास कम ज्ञान होगा उन्हें अपने धोखे से नष्ट कर देगा।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब तुम कुरंभ दूत की चालबाजी सुनोः यह अपनी बातों को सच्चा बताकर मजबूत जाल बनाएगा। यह सूरज, चंद्रमा, शुभ, अशुभ लग्न का प्रचार करके राहु, केतू आदि के प्रभाव के बारे में बताएगा। यह अपनी बुद्धि के अनुसार पाँच तत्वों का वर्णन करेगा अज्ञानी जीव इसके भेद को नहीं समझ सकेंगे। यह ज्योतिष शास्त्र के पंथ को फैलाएगा और जीवों को ग्रहों की दशा के वशीभूत करके प्रभु भक्ति को भुला देगा। यह पवन और पानी का ज्ञान बताकर पवन के नामों को बताएगा। यह आरती और चौका के बहुत सारे मतलब बताकर जीवों को धोखा देकर भ्रम में डालेगा।

यह जब किसी को अपना शिष्य बनाएगा तो बहुत कुछ विशेष करेगा। यह शरीर के हर भाग की रेखाओं को पढ़ेगा। यह सिर से पैर तक परख करेगा और जीवों को कर्मों के जाल में फंसाकर भटकाएगा। जीवों को परखने के बाद यह उन्हें सूली पर चढ़ाकर खा जाएगा। यह जीवों से सोने और स्त्री की दक्षिणा लेकर भ्रम में डालेगा। पिच्चासी पवन काल की हैं। पान के पत्ते पर पवन का नाम लिखकर जीवों को खिलाएगा। पानी और पवन की बात करते हुए आरती की रस्म करेगा। काल पिच्चासी पवन के अनुसार आरती और चौका करवाएगा।''

हे भाई! यह स्त्री और पुरुष सबके शरीर पर मस्से, तिल का निशान देखा करेगा। यह सिर से पैर तक सभी रेखाओं को पढ़ेगा। काल ऐसा बुद्धि वाला है जिससे वह जीवों में भ्रम पैदा करेगा उनका बुरा हाल करेगा।

अब तुम काल का व्यवहार सुनोः दुष्ट काल समय को साठ पल(*एक पल = घड़ी का आठवां भाग = 24 सैकण्ड*) और बारह महीनों में बाँटकर शरीर में भ्रम पैदा करेगा। यह पंचामृत और

इकहत्तर नाम के सिमरन को सार शब्द बताकर गुणगान करेगा। जो कुछ जीवों के लिए बनाया है काल उसमें धोखा ही भरेगा। यह पाँच तत्वों के उपयोग को बताकर कहेगा कि यही सच्चा मार्ग है। यह पाँच तत्व, पच्चीस प्रकृति, तीन गुण और चौदह यमों को ईश्वर कहेगा।

हे भाई! यह पाँच तत्वों के जाल को बनाकर जीवों को इसमें फंसाएगा अगर जीव शरीर को धारण कर तत्वों में ध्यान लगाता है तो शरीर छोड़ने के बाद वहीं जाएगा; जहाँ उसकी आशा है। यह नाम के ध्यान को छुड़वाकर तत्वों के बंधन में रखेगा। हे धर्मदास! मैं तुम्हें और क्या कह सकता हूँ। यह कुरंभ दूत बहुत भंयकर काम करेगा। जो जीव इसके छल को समझ जाएगा वह जीव मुझे पहचानकर मुझमें मिल जाएगा। पाँच तत्व काल के अंग हैं। जो जीव इसके पीछे लगेंगे वे इसके मत पर चलकर कष्ट उठाएंगे।

हे धर्मदास! तुमने कुरंभ के छल की बानी सुन ली है ये जीवों को पकड़ने के लिए बहुत से जाल बनाएगा। यह तत्वों का मत चलाकर बहुत से जीवों को खा जाएगा। कबीर के नाम पर यह संसार में अपना पंथ चलाएगा; जो जीव भ्रम के वश में होकर इसके पास जाएंगे वे काल के मुख में पड़ेंगे।

सतपुरुष का शब्द ही सत्य है। सतपुरुष का सिमरन अमृत के समान अनमोल है। जो आत्मा मन, वचन और कर्म से इसे ग्रहण करेगी वह भवसागर से पार हो जाएगी।

जय दूत का वर्णन : हे धर्मदास! मैंने तुम्हें रंभ और कुरंभ दूतों का वर्णन किया है, अब तुम जय दूत की बात समझो। यह यमदूत बहुत भंयकर और कठोर होगा। यह झूठा दूत अपने आपको सबका मूल आधार कहेगा। यह बाँधोगढ़ के निकट कुरकुट गाँव में जन्म लेगा। यह जूते गाँठने वाले कुल में पैदा

होगा और ऊँचे कुल की निन्दा करेगा। यह अपने आपको साहब का दास कहेगा। इसके बेटे का नाम गणपत होगा। पिता और पुत्र दोनों दु:खदायी काल होंगे और तुम्हारे वंश को घेर लेंगे।

हे धर्मदास! यह कहेगा कि मूल ज्ञान हमारे पास है और तुम्हें दूर कर देगा। यह बहुत से ग्रन्थों का ज्ञान देगा और ज्ञानी पुरुष की तरह कहेगा कि मुझे सतपुरुष ने मूल ज्ञान दिया है धर्मदास को मूल ज्ञान का पता नहीं है। इस तरह काल बलशाली होकर तुम्हारे वंश के बारे में भ्रम पैदा करेगा, यह तुम्हारे वंश में अपना मत पक्का करेगा और उन पर अपने मूल ज्ञान को थोप देगा। यह अपने मूल ज्ञान से वंशों को बिगाड़ेगा जिससे पवित्र जीवों में भी काल की मत आ जाएगी।

हे भाई! यह झंग शब्द के बारे में बताएगा और सच्चे जीवों को भ्रम में डालेगा जैसे पानी से शरीर की रचना होती है यह कहकर अपने मत को थोपेगा, यह इस शरीर की रचना का मूल बीज *काम* बताएगा और नाम को गुप्त रखेगा।

जब शिष्यों को अपने वश में देखेगा फिर उन्हें ज्ञान देगा। उसके बाद उन्हें काल के पीछे लगा देगा। यह स्त्री के अंगो को पारस ज्ञान बताएगा शिष्य इसकी आज्ञा को मान लेंगे। यह सबसे पहले ज्ञान के शब्द को समझाएगा उसके बाद मूल ज्ञान का पान करवाएगा। यह जो मूल ज्ञान देगा वह नर्क की खानि है।

यह बाँका दूत जीवों को छल बुद्धि में लगाएगा। यह माया से भरपूर रचना दीप के बारे में बताएगा। यह झँग नाम का ध्यान बताएगा जिससे यमलोक का अनहद शब्द बजाकर पाँच तत्वों की शिक्षा देगा। मन रूपी गुफा से पाँचों तत्वों के अनेक प्रकार के रंग दिखाई देते हैं, इन पाँच तत्वों के प्रकाश से मन-गुफा में भारी झंग शब्द उठता है। जब सोहंग जीव शरीर

छोड़ता है तो झंग शब्द कैसे रक्षा करेगा। काल ने झंझरी दीप बनाया है। झंग और हंग काल की ही शाखाएं हैं, यह अधर्मी काल इसे अमर लोक बताएगा इसे अमर लोक बताना धर्मराय का धोखा है। यह अनेक प्रकार से आरती और चौका बताएगा। जीवों को बहकाने वाले इसके बहुत से कर्णधार होंगे। ये काल के नाम की ही दीक्षा देंगे।

हे धीरज बुद्धि वाले धर्मदास! ध्यान से सुनो। यह जगह-जगह कर्मकांड चलाएगा और मेरे नाम का अपमान करेगा। जब जीवों को इसके भेद का पता चलेगा तो उनका भ्रम दूर हो जाएगा। मैं कहाँ तक काल का वर्णन करूँ? जो ज्ञानी होगा वह अपनी विवेक बुद्धि से इसे समझेगा।

हे धर्मदास! जिसके हाथ में मेरे ज्ञान का दीपक होगा वह यमराज को पहचान जाएगा। ऐसी आत्मा काल द्वारा बनाए गए विषय-भोगों व धोखे को छोड़कर अपनी मुक्ति के कार्य को शीघ्र ही पूरा कर लेगी। जो जीव अपना ध्यान मेरे शब्द में लगाएंगे वे असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करेंगे।

हे धर्मदास! तुम इस यमदूत की छल बुद्धि को जानो। मैं आत्माओं को ऐसी पहचान बताऊंगा जिससे यम उनको रोक नहीं सकेगा। हे धर्मदास! तुम्हारा वंश अज्ञान के वश में होकर काल को नहीं पहचान सकेगा। जब तक तुम्हारा वंश सतनाम से जुड़ा रहेगा तब तक काल उसके सामने दीन बना रहेगा लेकिन काल बगुले की तरह ध्यान लगाए रहता है जैसे ही जीव सतनाम को छोड़ता है काल प्रकट हो जाता है।

जब काल अपने मूल ज्ञान से वंश पर हमला करेगा तब जीव सच्चाई को छोड़कर धोखे में पड़ जाएंगे। काल मूल ज्ञान से वंश को गिराने आएगा। वे असली वस्तु सतनाम की बजाय काल के धोखे में पड़ जाएंगे। काल आकर वंश पर हमला

करेगा और वंश सत्य वस्तु की बजाय धोखे में उलझा लेगा। यह वंश को हमसे दूर कर देगा और मूल ज्ञान के द्वारा सत्य ज्ञान के मार्ग को रोकेगा। ये नाद पुत्र से अलग रहेंगे और मेरी बानी को ग्रहण नहीं करेंगे। धर्मदास! जो रहन-सहन, गुण और ज्ञान को विचार कर शब्द के आधार से प्रकाशित रहता है, अन्यायी काल उसे नहीं खा सकता।

विजय दूत का वर्णन : हे धर्मदास! अब विजय दूत के गुणों को सुनो। यह बुदेलखंड में जन्म लेगा और अपना नाम ज्ञान रखवाएगा। यह सखा-भाव की भक्ति को चलाएगा, रास रचाएगा और मुरली बजाएगा। यह अपने साथ बहुत सी सखियों को रखकर अपने आपको दूसरा कृष्ण कहेगा। जीवों को ज्ञान नहीं इसलिए जीव इसके धोखे में आ जाएंगे।

यह कहेगा कि आँखों के आगे मन की छाया और नाक के आगे आकाश है। मन में काला व सफेद रंग दिखाकर जीवों को अपने धोखे रूपी कोहरे में डाल देगा। यह क्षण भर के लिए भी स्थिर नहीं होगा। आत्माएं इसे बाहरी आँखों से देखने की कोशिश करेंगी। काल मन की छाया को दिखाकर यह उसे मुक्ति का आधार बताएगा। यह जीवों से सतनाम छुड़वा देगा ताकि आत्माएं काल के मुख में जाएं।

हे धर्मदास! यमराज जो चरित्र करेगा मैंने तुझे समझा दिया है चारों दूत बहुत भ्रम पैदा करके आत्माओं को चुरा लेंगे।

दूतों से बचने का उपाय :

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अपने हृदय में सतगुरु के ज्ञान का दीपक मजबूती से जलाकर रखो जिससे काल कोई हानि नहीं कर सकेगा। जिस तरह मैंने इन्द्रमती को पहले ही सावधान कर दिया था और वह सावधान रही इसलिए काल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।''

धर्मदास के देह त्याग के बाद का भविष्य कथन:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! आगे जो कुछ होगा वह मैं तुम्हें बता रहा हूँ। जब तक तुम देही में रहोगे तब तक काल प्रकट नहीं होगा वह एक जगह बगुले की तरह ध्यान लगाए बैठा रहेगा जब तुम देही को त्याग दोगे तो काल आ जाएगा। तुम्हारे परिवार के सदस्यों को आपस में लड़वा देगा और वंश को अपने धोखे में डाल देगा। वंश और नाद में अनेको कर्णधार होंगे लेकिन काल तुम्हारे पारस वंश में जहर का स्वाद भर देगा।

बिंद वंश, मूल ज्ञान (दूतों के वंश) और टकसार ये सब वंश एक-दूसरे में मिल जाएंगे। जब हंग दूत उनके अंदर आकर शामिल हो जाएगा फिर वंशों में एक बड़ा छल होगा । हंग दूत अधिक प्रभाव के कारण उनमें झगड़ा करवा देगा लेकिन तुम्हारा बिंद वंश हंग दूत को नहीं छोड़ेगा। जब उसके मन में आएगा वह तभी बिंद वंश का मन भ्रम की ओर मोड़ देगा। वह मेरे अंश को न मानकर अपने पंथ को चलाएगा। वह अपना पंथ तुम्हारे वंश से ही चलाएगा। तुम्हारे वंश उसको पहचान नहीं सकेंगे फिर तुम्हारा वंश अपने अनुभव की कथाएं कहेगा और नाद-पुत्र (सन्त) की निन्दा करेगा। उन कथाओं को पढ़कर तुम्हारे वंश के कर्णधारों को अहंकार होगा वे असलियत नहीं पहचानेगे बहुत जीवों को भटका देंगे। इसलिए मैं तुम्हें सावधान करता हूँ कि तुम अपने वंश को समझा देना कि जब नाद-पुत्र पैदा हो तो उससे प्रेम के साथ मिलें।''

हे धर्मदास! तुम मेरे नादी-पुत्र हो। मैंने अपने पुत्र कमाल को मृतक से जिन्दा किया था फिर भी उसके हृदय में काल दूत समाया हुआ है। मुझे पिता जानकर भी उसने अहंकार किया इसलिए मैंने तुम्हें शब्द-नाम की पूँजी दी है। मैं तो प्रेम और

भक्ति का साथी हूँ मुझे घोड़े, हाथी नहीं चाहिए जो आत्माएं मुझे प्रेम और भक्ति से ग्रहण करेंगी वे आत्माएं मेरे हृदय में निवास करेंगी अगर मैं अहंकार से खुश होता तो मैं काज़ी या पंडित को उत्तराधिकारी बनाता।

मैंने तुम्हें प्रेम से भरा हुआ देखा उसी प्रेम के वशीभूत होकर मैंने तुम्हें 'शब्द-नाम' की पूँजी सौंपी है। तुम यह पूँजी नाद-पुत्रों को सौंपना जिससे पंथ का नाम प्रकाशमान हो। तुम्हारे वंश के लोग अहंकार करेंगे कि हम धर्मदास के कुल से हैं। जहाँ पर अभिमान होता है मैं वहाँ नहीं रहता फिर वहाँ काल रहता है। ऐसी आत्माएं सुंदरलोक नहीं पहुँचती।

ब्यालीस वंश से मुक्त होने की प्रार्थना:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! मैं आपका दास हूँ और आपके वश में हूँ। मैं कभी भी आपकी आज्ञा का उल्लंधन नहीं करूंगा। हे स्वामी! मैं नाद-पुत्र को ही शब्द नाम की पूँजी सौपूंगा; आप मेरे वंश को मुक्त कीजिए।''

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तुम अपने मन से संदेह निकाल दो तुम्हारा वंश अवश्य ही मुक्ति प्राप्त करेगा। जो जीव मजबूत होकर नाम की भक्ति करेंगे मैं उन सबको मुक्त कर दूँगा। जो मेरे वचनों को ग्रहण करके भक्ति करेंगे तो मैं ब्यालीस वंशो को भी मुक्त कर दूँगा। जो आत्मा मेरे शब्द-नाम को ग्रहण करेगी वह मुझे बहुत प्यारी होगी क्योंकि बिना 'शब्द-नाम' के आत्मा भवसागर से पार नहीं होती।''

धर्मदास ने कहा, ''हे साहब! अगर आप ब्यालीस वंशों को तारेंगे तो उनको तारने में आपकी कौन सी बड़ाई है क्योंकि वे तो आपके ही अंश हैं। जब आप ब्यालीस वंशों के आगे होने वाले अंशो को तारोगे तभी संसार में आपकी बड़ाई होगी।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम्हारे ब्यालीस वंशो को मैंने एक वचन से ही तार दिया है लेकिन उनसे जो छोटे-छोटे अंश होंगे वे 'शब्द-नाम' के बिना नहीं छूटेंगे। बिंद से ही वंश पैदा होता है लेकिन वह नाम बिना अपने घर नहीं जा सकता। समर्थ सतपुरुष ने ब्यालीस वंशों को जीवों को तारने का अधिकार दिया है। वंश व अंश दोनों के लिए एक ही वचन है। वंश ज्यादा होंगे और अंश थोड़े होंगे। अंशों में सबसे बड़ा अंश मेरे शब्द से जागेगा और छोटे वंश उसका अनुकरण करेंगे। मेरा अंश (चूड़ामणि) सत्य मार्ग पर चलता हुआ पंथ को आगे चलाएगा और भूले जीवों को समझाएगा। नाद-पुत्र व बिंद पुत्र से पंथ आगे चलेंगे और चूड़ामणि आत्माओं को मुक्त करेगा।''

हे धर्मदास! तुम्हारा वंश अज्ञानी होकर मेरे वंश की पहचान नहीं कर पाएगा; जो कुछ आगे होगा उसका हाल मैं तुम्हें समझा रहा हूँ। तुम्हारे बिंद वंश (पुत्र) सत्य ज्ञान के पथ को छोड़कर टकसारी मनमत को ग्रहण करेंगे, वे इस प्रकार से चौका विधि करेंगे जिससे अनेक जीव चौरासी लाख योनियों में चले जाएंगे। वे बड़े अहंकारी होंगे और नाद पुत्रों के पंथ में बाधा डालेंगे। तुम्हारे वंश की बुद्धि खराब हो जाएगी।

नाद वंश की बड़ाई:

धर्मदास ने कहा, ''हे सतगुरु! अब मेरा संदेह और अधिक बढ़ गया है। पहले तो आपने यह वचन कहा था कि मैं ब्यालिस वंशों को अपनी रक्षा में रखूंगा, अब आप कह रहे हैं कि वे काल के वश में हो जाएंगे; ये दोनों बातें कैसे संभव हैं?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! सावधान होकर समझो। जब काल वचन अंश पर हमला करेगा तब मैं सदा उसकी सहायता करूंगा। नाद पुत्र(सन्त)मेरा अंश होगा जिससे

पंथ प्रकाशित होगा। मैं नाद पुत्र को प्रकट करूंगा और भ्रम को दूर करके संसार को भक्ति में लगाऊँगा। वचन वंश नाद पुत्र से चेतना लेकर काल के हमले को रोकेगा। तुम्हारा बिंद पुत्र उसमें विश्वास नहीं करेगा और उसमें शब्द नहीं समाएगा। नाद पुत्र शब्द की आशा रखेगा जबकि तुम्हारा बिंद पुत्र सब भूल जाएगा, बिंद द्वारा शब्द प्रकट नहीं होगा।''

हे धर्मदास! तुम चारों युगों का इतिहास देख लो। शब्द द्वारा ही पंथ प्रकट होता है चाहे सगुण भक्ति हो, चाहे निराकार भक्ति हो लेकिन नाद के बिना पंथ (सन्त मार्ग) नहीं चलता। तुम मेरे नादी पुत्र हो इसलिए मैंने तुम्हें मुक्ति की डोरी पकड़ाई है। इसी तरह मैं ब्यालिस वंशो को तारूंगा अगर बिंद वंश नाद पुत्र का कहना नहीं मानेंगे तो काल उन्हें देखते ही पकड़ लेगा। जो वंश पुत्र नादी पुत्र में विश्वास करेंगे वे खुद मुक्त हो जाएंगे और दूसरे जीवों को भी मुक्त करवा देंगे। हे भाई! चाहे नाद पुत्र हो! चाहे बिंद पुत्र हो! नाम भक्ति के बिना सतलोक नहीं जा सकते।

हे धर्मदास! गुरु को ही श्रेष्ठ समझें और गुरु की शिक्षा को ही सत्य मानें। तुम्हारे बिंद झगड़ा करेंगे और गुरु के बिना ही भवसागर पार होना चाहेंगे लेकिन जो निगुरा संसार को समझाता है वह खुद भी डूबता है और संसार को भी डुबोता है। गुरु के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। गुरु को धारण करने वाला ही भवसागर से पार होता है।

हे धर्मदास! जब जीव पुकारेंगे तो मेरा नाद पुत्र आएगा उसको देखते ही काल भाग जाएगा। तुम अपने वंश को समझा देना अगर वे नाद पुत्रों से प्रेम करेंगे तो काल के धोखों से बचे रहेंगे। काल के दूत अनेक प्रकार के जाल बिछाएंगे उनको देखकर जीव बहुत खुश होंगे इसलिए मैं तुम्हें बता रहा हूँ,

''तुम सबको समझा देना जो जीव नाद पुत्रों व वचन वंश को पहचानकर सत्य शब्द को धारण करेंगे उन्हें यम नहीं रोक सकेगा। इस तरह बहुत सुख होगा। नाद पुत्र और बिंद पुत्रों के पास काल के दूत नहीं आएंगे।''

वंशो की मुक्ति में अहंकार की रुकावट:

धर्मदास ने विनती की, ''हे सतगुरु! मुझे समझाकर बताएं कि आपने नाद वंश की बड़ाई की है और वचन वंश को उससे नीचा बताया है। हे स्वामी! मुझे बताएं कि फिर आपने वचन वंश क्यों बनाया? जब संसार नाद वंश से ही मुक्त होगा फिर वचन वंश का क्या काम होगा?''

यह सुनकर सतगुरु हँसने लगे और आपने धर्मदास को समझाया कि बिंद पुत्र अहंकार के कारण नाद पुत्रों के वचनों को नहीं मानेंगे इसलिए मैंने बिंद पुत्रों के लिए यह निर्णय किया है; बिंद पुत्र अनेकों नामों से पंथ चलाएंगे। बिंद पुत्रों के आगे भी बिंद पुत्र ही कहलाएंगे। वचन वंश सतपुरुष के अंश हैं इनके कारण आत्माएं संसार से मुक्त होंगी। जब नाद पुत्र और बिंद पुत्र एक हो जाएंगे तब काल अपना मुँह छिपा लेगा।

सबसे पहले मैंने तुम्हें नाद और बिंद दोनों को एक करके बताया था; नाद पुत्रों के बिना बिंद पुत्रों की तरक्की नहीं होगी और बिना बिंद के नाद का उबार नहीं होगा। कलियुग में काल बड़ा कठोर होगा, यह अहंकार का रूप धारण करके सबको खा जाएगा लेकिन नाद पुत्रों में अहंकार नहीं होगा। बिंद पुत्रों को अपने बिंद पुत्र होने का अहंकार होगा। चाहे नाद पुत्र हो या बिंद पुत्र हो! अहंकार किसी के लिए भी अच्छा नहीं होता। जो अहंकार करेगा वह भवसागर में डूबकर काल के जाल में चला जाएगा। जो जीव अहंकार छोड़कर सतपुरुष की भक्ति करेगा वह हंस रूप हो जाएगा।

धर्मदास को पुत्र मोह त्यागने का उपदेश:

धर्मदास ने कहा, ''हे साहब! आपने नाद पुत्रों और बिंद पुत्रों के बारे में बताया और उनके भवसागर से पार होने का भेद भी बताया। हे अंतर्यामी! भवसागर के सब जीव तो पार हो जाएंगे लेकिन नारायण दास काल के मुख में चला जाएगा, यह तो अच्छा नहीं होगा। मुझे उसके प्रति चिंता हो रही है। वह संसार में मेरा पुत्र कहलाएगा आप उसकी भी मुक्ति कीजिए।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! मैंने तुम्हें बार-बार समझाया है फिर भी तुम्हारे हृदय में विश्वास नहीं आया। तुम नासमझ होकर ये बातें पूछ रहे हो। क्या तुम सतपुरुष की आज्ञा को मिटा देना चाहते हो। जब हृदय में मोह का अंधकार छा जाता है तो सारा ज्ञान भूल जाता है फिर परमार्थ का कार्य नष्ट हो जाता है।''

हे धर्मदास! विश्वास के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति के बिना कोई भवसागर नहीं तर सकता। तुम पर फिर काल का फंदा लग गया है क्योंकि तुम्हारे हृदय में पुत्र का मोह जाग गया है। तुमने यह प्रत्यक्ष देख लिया है कि नारायण दास काल के वश में है। तुम मेरे एक वचन को न समझकर हठ कर रहे हो। धर्मराय ने मुझसे जो कहा था उस बात का ध्यान भी तुम्हारे हृदय में नहीं रहा। तुम मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे हो। तुम गुरु पर विश्वास करो, संसार से क्यों लगाव करते हो? जो स्वयं को छोड़कर गुरु के पास जाता है वह सरलता से सत्य की सीढ़ी पर चढ़ जाता है और जो स्वयं को ही पकड़े रहता है उसमें मोह का नशा जाग जाता है, उस अभागे जीव को भक्ति और ज्ञान छोड़ जाते हैं।

हे धर्मदास! तुम सतपुरुष के अंश हो और इस संसार में जीवों को चेताने के लिए आए हो अगर तुम ही गुरु के

विश्वास को छोड़कर संसार के मोह में पड़ रहे हो तो दूसरे जीवों का तो कोई ठिकाना ही नहीं। यह स्पष्ट है जैसा तुम करोगे वैसा ही तुम्हारा वंश करेगा। वे सदा मोह की आग में जलते रहेंगे जिससे वंश में विरोध बढ़ेगा।

यह कहा जाता है कि पुत्र के बिना नाम नहीं होता और स्त्री के बिना परिवार नहीं होता, ये सब कुल के अभिमान हैं और काल के ही जाल हैं। तुम्हारा परिवार इन सबमें भूल जाएगा और सतनाम के मार्ग को नहीं पा सकेगा। इन सबको देखकर सारे जीव भी काल के जाल में फँस जाएंगे और काल के दूत बहुत खुश होंगे। तब काल के दूत ताकतवर हो जाएंगे और जीवों को काबू में करके नर्कों में भेजेंगे। वे जीवों को काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार में भुलाकर अपने जाल में फँसा लेंगे। वे गुरु में विश्वास न करके सतनाम के नाम को सुनकर जलने लग जाएंगे।

हे धर्मदास! जिनके हृदय में सतनाम होता है अब तुम उनकी पहचान सुनो। उन पर काल की किसी बात का असर नहीं होता। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नहीं होता। वे मोह, तृष्णा और आशाओं को दूर करके सदा अपने मन में सतगुरु के वचनो को धारण करते हैं। जिस तरह साँप अपने सिर पर मणि रखकर प्रकाश करता है, उसी तरह से शिष्य को भी गुरु की आज्ञा को अपने सिर पर रखना चाहिए। पुत्र, पुत्री और सब विषय-भोगों को भुलाकर हंस होकर सतपुरुष के चरणों को ग्रहण करना चाहिए। कोई विरला जीव ही सतगुरु के अमोलक वचनों को ग्रहण करता है। ऐसे जीव से मुक्ति दूर नहीं होती, वह हंस रूप होकर सतलोक को चला जाता है।

हे धर्मदास! सब भ्रमों के जाल को छोड़कर गुरु के चरणों से प्रेम करो। गुरुमुख के शब्द में विश्वास रखो।

धर्मदास को पंथ चलाने की आज्ञा:

सतगुरु के वचन सुनकर धर्मदास बहुत शर्मिन्दा हुआ और अपने मन में पछताया। वह सतगुरु के चरणों में गिर गया और बोला, ''हे प्रभु! मेरी सहायता करो। मैं अज्ञानी जीव हूँ, मुझे क्षमा कर दो। मैंने आपके वचनों पर ध्यान न देकर बार-बार कुछ न कुछ माँगा। आपका नाम पापों को दूर करने वाला है। कृपया मेरे अवगुणों पर ध्यान मत दो।''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम सतपुरुष के अंश हो। तुम नारायण दास और उसके वंश को त्याग दो। अपने हृदय में 'शब्द' की सहायता से पहचान करके देखो; मैं और तुम अलग-अलग नहीं हैं। तुम इस संसार में जीवों के लिए आए हो और अब तुम भवसागर में पंथ को चलाओ।''

धर्मदास ने कहा कि हे प्रभु! आप सुख रूपी सागर को देने वाले हैं। आपने मुझ अनाथ को सनाथ कर दिया। आपने मुझे अपना शिष्य बनाकर पक्का ज्ञान दे दिया है। आपके चरणों को पकड़कर अब मुझे संसार से लगाव नहीं है अगर मैं आपको छोड़कर किसी और की इच्छा रखूँ तो नर्क में जाऊँ।

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम धन्य हो तुमने मुझे पहचान लिया है और मेरी बात को मानकर अपने पुत्र नारायण दास को त्याग दिया है। जब सेवक के दिल का शीशा साफ होता है तभी उसे गुरु स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं। जब शिष्य अपने हृदय को गुरु के चरणों में लगाए रखता है तो गुरु काल की सभी शाखाओं को मिटा देता है। जब तक शिष्य के मन में अनेक प्रकार की इच्छाएं रहती हैं तब तक वह गुरु के दर्शन नहीं कर पाता। जब कोई शिष्य अपने ध्यान को गुरु के चरणों में लगा देता है तो वह मोह से आजाद हो जाता है और ज्ञान में जाग जाता है। जब दिल में ज्ञान का दीपक जल जाता है

तो सारे मोह और भ्रम नष्ट हो जाते हैं फिर वह भवसागर से वापिस जाकर सतपुरुष के शब्द में समा जाता है। जैसे एक बूँद सागर में गिरकर सागर बन जाती है।''

हे धर्मदास! यह गुरु चरणों का ही प्रताप होता है जिससे शिष्य के भ्रम और अहंकार छूट जाते हैं। गुरु धारण करने से शिष्य के सारे दु:ख दूर हो जाते हैं और बिना गुरु के शिष्य में उदासी रहती है। अब मैं तुम्हें जो बता रहा हूँ उसे जानने के बाद तुम्हारे सब भ्रम दूर हो जाएंगे। नारायण दास तुम पर विश्वास नहीं करेगा और वह वही करेगा जो उसके मन में आएगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि संसार में उसका पंथ भी चलेगा। मेरे अंश से जो पंथ चलेगा वह उससे झगड़ा करेगा। वह मेरे पंथ की प्रसिद्धि को सहन नहीं कर सकेगा इसलिए अपने पंथ को ऊँचा बताएगा।

नारायण दास साधु-सन्तों के साथ अभिमान से बात करेगा और नाद पुत्रों में विश्वास नहीं करेगा। वह जब तक ऐसी चाल पर चलता रहेगा तब तक उसे सत्य मार्ग नहीं मिलेगा। वचन-वंश और नाद पुत्र कर्णधर हैं। जब वह उनसे मिलेगा तभी उसका उद्धार हो सकता है। वह जब अहंकार, नाम और प्रसिद्धि को छोड़कर सच्चे शब्द को हृदय में धारण करेगा तभी मुझे पसंद आएगा।

जो अपनी जाति को त्यागकर मोह नहीं रखेगा और वंश का अंश मानेगा, अपने कुल की मर्यादा को भूलकर निश्चित रूप से वंश का अंश बन जाएगा; तब मैं उसका उद्धार करूंगा।

प्यार का सागर - ग्रन्थसार

गुरु भक्ति ही मुक्तिदाता:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! गुरु पर विश्वास के बिना जीव मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। गुरु का आदर न करने वाला जीव नर्कों में जाता है। गुरु समान कोई दाता नहीं है इसलिए तुम्हें अपने मन को सदा गुरु के चरणों में लगाए रखना चाहिए।''

हे धर्मदास! संसार में गुरु को ही मुक्तिदाता समझना चाहिए। गुरु पापों को छुड़ाकर ज्ञान को प्रकट कर देता है। नामदान देकर आत्मा को भक्ति में लगा देता है। गुरु दुष्टों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) और मित्रों (शील, क्षमा, संतोष, विवेक और दीनता) की पहचान करवाकर आत्मा को निज घर सतलोक में पहुँचा देता है।

हे धर्मदास! जो दृढ़निश्चय से गुरु और सतपुरुष में कोई भेद नहीं समझता उसको काल के सभी दु:खों से छुटकारा मिल जाता है; मुक्ति का सही दान मिल जाता है।

सगुण भक्ति करने वालों का उदाहरण:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तुम मूर्तिपूजा करने वालों की तरफ देखों वे किस मजबूती से विश्वास करते हैं। मनुष्य स्वयं ही मिट्टी लेकर आता है फिर उससे सुंदर मूर्ति घड़कर उसे कर्ता कहता है। उस मूर्ति पर चावल और फूल चढ़ाता है और अपने मन में प्रेम और विश्वास रखता है फिर यह जीव मूर्ति के प्रेम में समा जाता है अगर ऐसा ही प्यार गुरु से हो जाए तो यह जीव अमोलक हो जाता; ऐसा जीव सतगुरु को बहुत प्यारा होता है।''

हे धर्मदास! मैंने तुम्हें नाम दिया है और बताया है कि गुरु और सतपुरुष अलग-अलग नहीं लेकिन जो जीव काल के वश में रहते हैं वे गुरु पर विश्वास नहीं करते। जो गुरु की देह पर भरोसा नहीं करते अपने मन के ध्यान को शून्य में लगाते हैं ऐसे जीव अपने आपको धोखे में रखते हैं। जो दृढ़ता से गुरु पर भरोसा करता है उसकी मुक्ति को कोई टाल नहीं सकता। जो आत्मा गुरु में पूर्ण विश्वास रखती है और गुरु को छोड़कर दूसरी ओर ध्यान नहीं लगाती, ऐसी आत्मा गुरु प्रेम के रंग में अपना चोला रंग लेती है और अमोलक हो जाती है।

हे धर्मदास! शिष्य गुरु के चरणों में पक्का भरोसा करके अपने हृदय में ज्ञान का दीपक जलाकर मोह रूपी अंधकार को दूर करो। सतगुरु के चरणों की धूल के प्रताप से पाप रूपी अज्ञान का नाश हो जाता है। यह भवसागर बहुत अगम और गहरा है इससे पार होने के लिए 'नाम' को प्रेम पूर्वक मजबूती से पकड़ो। सतगुरु की दया और सतगुरु की बानी ही इस भवसागर से निकालने वाली है।

पूर्ण गुरु व पूर्ण शिष्य का सम्बन्ध:

धर्मदास ने यह विनती की, ''हे साहब! मैं आपका दास हूँ। हे गुरुदेव! आप दया करके मुझे बताएं कि गुरु और शिष्य की रहनी कैसी होनी चाहिए?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम गुरु के वचनों को मानने वाले हो। निर्गुण और सर्गुण दोनों भक्ति में गुरु ही आधार होता है। गुरु के बिना आचरण शुद्ध नहीं होता और गुरु के बिना भवसागर पार नहीं हो सकता। शिष्य सीप के समान और गुरु स्वाति नक्षत्र बूँद के समान है। गुरु पारस के समान और शिष्य लोहे के समान है। गुरु चंदन के पहाड़ के समान है और शिष्य सर्प के समान है; गुरु के स्पर्श से शिष्य

के अंग शीतल हो जाते हैं। गुरु दीपक के समान है और शिष्य पतंगे के समान है। शिष्य चकोर है और गुरु चन्द्रमा है। शिष्य पूर्ण निश्चय करके गुरु से प्यार करता हुआ, अपने हृदय में गुरु के दर्शन करता रहता है जब वह इस तरह गुरु के दर्शन करता है तो उस शिष्य को गुरु के समान ही समझो।''

हे धर्मदास! सारा संसार गुरु गुरु कहता है लेकिन तुम सच्चे व झूठे गुरु के भेद को समझो। गुरु वही है जो शब्द को प्रकट कर दे, जिससे जीव जन्म-मरण रहित हो जाए और जिसके बल से आत्मा निज घर चली जाए। ऐसे गुरु और शिष्य एक ही होते हैं।

हे धर्मदास! यह संसार विभिन्न प्रकार के मतों, कर्मों और भावनाओं में लिपटा हुआ है। जीव भ्रम में फंसा हुआ है यह नहीं जानता कि अपने निजघर वापिस कैसे पहुँचें? इस संसार में बहुत से गुरु हैं जिन्होंने नकली जाल बिछाए हुए हैं। सच्चे गुरु के बिना भ्रम नहीं मिट सकता क्योंकि काल बहुत भयंकर और ताकतवर है।

हे धर्मदास! मैं अपने सतगुरु पर बलिहार जाता हूँ जिसने अमरता का सन्देश दिया। उससे मिलकर जीव सतपुरुष में मिल जाता है।

गुरु शिष्य की रहनी:

हे धर्मदास! शिष्य को दिन-रात अपनी सुरत गुरु के चरणों में लगाए रखनी चाहिए। साधु सन्तों का सदा आदर करें। सतगुरु जिन जीवों पर दया करते हैं उसके कर्मों का जाल जल जाता है। सदा गुरु में ध्यान लगाकर भजन-अभ्यास करें तो उस शिष्य को गुरु सतलोक में पहुँचा देता है। जो शिष्य बिना आशा रखे गुरु की सेवा करता है, गुरु उसके कर्मों का जाल काट देता है।

चाहे कोई योगी कितनी भी साधना करे, बिना गुरु के भवसागर पार नहीं हो सकता। जो शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करता है, वह गुरु की दया से भवसागर पार हो जाता है। गुरु भक्त आत्मा के लिए साधु और गुरु में कोई भेद नहीं। जो सांसारिक लोग, गुरु शिष्य और साधु के जीने के तरीके को नहीं समझते उन्हें काल के फंदे में फंसा हुआ समझो।

हे धर्मदास! जो गुरु से प्यार करने का तरीका जानता है, वह सच्चे शब्द का रास्ता पहचान लेता है। गुरु जीवों को सतपुरुष की भक्ति में दृढ़ करते हैं उन्हें सुरत और निरत का अभ्यास करवाकर उनके घर पहुँचा देते हैं अगर कोई चतुराई और मूर्खता छोड़कर सच्चे दिल से गुरु से प्यार करता है तो वह अवश्य ही निज घर पहुँच जाता है, भवसागर पार कर जाता है और इस संसार में वापिस नहीं आता।

हे धर्मदास! जो शिष्य सतनाम रूपी अमोलक शब्द-नाम को प्राप्त कर लेता है वह काग रूपी वृति छोड़कर हंस वृति को प्राप्त करके गुरु के चरणों में लिव लगा लेता है वह दूसरे पंथो और कुमार्गों में मन नहीं लगाता। ऐसा शिष्य सारे भ्रमों को छोड़कर गुरु के चरणों से प्रेम करे और गुरुमुख के शब्दों पर विश्वास करके अपने शरीर को मिट्टी के समान समझे।

नामदान का हुक्म व अधिकारी जीवों की पहचान:

तब धर्मदास अपने हृदय में बहुत खुश हुआ और आँखों से खुशी के आँसू बहाते हुए बोला, ''हे सतगुरु! मेरे दिल में अज्ञान का अंधेरा था आपके दया रूपी जुगनू के प्रकाश से उसमें प्रकाश हो गया है।'' फिर धीरज धरकर और विचार करके कहने लगा, ''हे प्रभु! मैं आपके गुणों का गान किस प्रकार करूँ? आप मेरी विनती सुनिए और मुझे पहचान बताइए कि कैसे जीवों को नामदान देना है?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम चिन्ता मत करो और जीवों को मुक्ति का सन्देश दो। तुम जिन जीवों में नम्रता और भक्ति देखो उन्हें मुक्ति के बारे में बताना। जिनके अंदर तुम्हें दया, शील और क्षमा दिखाई दे तुम उन्हें ही नामदान देना। जिन पर दया नहीं हुई वे 'शब्द' की बात नहीं सुनते वे काल की तरफ रुख कर लेते हैं। जिनका ध्यान बंटा हो जिनकी नजर चंचल हो उनके अंदर 'सच्चा-शब्द' नहीं रुकता। जिनकी ठोड़ी बाहर हो व दाँत बाहर निकले हो जिनकी आँखों में तिल हो उनको निश्चय ही काल का रूप जानना। जिनका सिर छोटा और शरीर बड़ा हो उनके हृदय में सदा कपट छाया रहता है। ऐसे जीवों को सतपुरुष की पहचान अर्थात नामदान मत देना। ऐसे जीव पंथ (सन्तमार्ग) को हानि पहुँचाते हैं।''

काया कमल विचार:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! आपने मेरा जन्म सफल कर दिया आपने मुझे भय से छुड़ाकर अपना बना लिया अगर मेरे मुँह में हजार जीभें हों तब भी मैं आपका गुणगान नहीं कर सकता। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। अब आप मेरी यह प्रार्थना सुनिए और मुझे इस शरीर का वर्णन करके समझाएं कि इस शरीर में कौन सा देवता कहाँ रहता है; वह किस स्थान पर कार्य करता है; इस शरीर में कितनी नाड़ियाँ, बाल और खून हैं और श्वास कौन से रास्ते से चलता है?''

हे साहब! मुझे आंत, पित्त और फेफड़ों के बारे में समझाएं ये चीजें शरीर के किस स्थान पर हैं और उनकी पहचान का वर्णन कीजिए? इस शरीर में कितने कमल है और उनके क्या-क्या नाम हैं वहाँ कितना जप करना पड़ता है, दिन-रात कितने श्वास आते-जाते हैं? शब्द कहाँ से उठता है और कहाँ जाकर समा जाता है? और जब कोई झिलमिल

प्रकाश को देखता है तो वह कौन-कौन से स्थानों पर किस-किस देवता के दर्शन करता है? मुझे यह सब समझाएं।

कबीर साहब ने धर्मदास से कहा, ''हे धर्मदास! तुम इस शरीर के ज्ञान को समझो परन्तु सतपुरुष का नाम इस शरीर से अलग है। सबसे पहले मूल चक्र का कमल है इसमें चार पंखड़ियां हैं यहाँ गणेश देवता का पसारा है यह विद्या के गुण का दाता है; वहाँ ध्यान लगाने से छह सौ जाप करने से इसका अनुभव होता है। मूल चक्र के ऊपर छह पंखड़ियों का कमल है वहाँ ब्रह्मा व सावित्री देवताओं का राज्य है; वहाँ छह हजार जपों की आवाज गूँजती है। नाभि में आठ पंखड़ियों का कमल है वहाँ के मुख्य विष्णु व लक्ष्मी हैं। उसके ऊपर बारह पंखड़ियों का कमल है उस कमल में शिव और पार्वती रहते हैं। वहाँ छह हजार जाप हो रहे हैं ये बातें पूरे गुरु से ही समझ आती हैं। फिर ऊपर सोलह पंखड़ी का कमल है जहाँ एक हजार जाप हो रहे हैं वहाँ का राजा मन है।''

हे धर्मदास! तुम अच्छी तरह समझ लो वहाँ पर एक हजार अजपा का जाप हो रहा है उसके आगे सुरति कमल है अर्थात तीसरा तिल है वहाँ पर एक हजार छह सौ बीस अजपा का जाप हो रहा है। हे आत्माओं के देव धर्मदास! तुम इस बात को समझो। यहाँ से ऊपर का रास्ता सतगुरु के वश में है। दो कमलों के ऊपर शून्य स्थान है जहाँ झिलमिल प्रकाश हो रहा है इसको तुम निरंजन के रूप में समझो।

हे धर्मदास! तुम शब्द का संदेश सुनो। जो कुछ घट के अंदर है मैं उसका उपदेश दे रहा हूँ। अब तुम शरीर के बारे में सुनो और नाम में ही विश्वास रखो। सारा शरीर खून से बना हुआ है और इस शरीर रूपी मिट्टी को करोड़ो बालों से सजाया हुआ है। इसमें बहत्तर नाड़ियां प्रदान हैं और इनमें से

नौं व तीन नाड़िया(इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना) नाड़ियों को जानना साधक के लिए जरूरी है। इन तीनों नाड़ियों में एक नाड़ी सुषुम्ना अनुपम है उसको पकड़कर ही सत्य रूप का ज्ञान होता है। जितने कमल दल हैं उनमें से जो शब्द उठता है वह उसके गुणों को प्रकट करता है। शब्द वहाँ से उठकर शून्य मण्डल में समा जाता है।

हे धर्मदास! आंत इक्कीस हाथ की है और पेट सवा हाथ का है फिर नाभि का घेरा है जो सवा हाथ का होता है। नाभि रूपी गुफा में सात खिड़कियां होती हैं। पित्ताशय तीन अंगुल का और दिल पाँच अंगुल का होता है। फेफड़ा सात अंगुल का होता हैं और उसमें सात सागर समाए हुए हैं। योगी व साधु पवन की धारा के संयम द्वारा ध्यान लगाते हैं। वे भक्ति के बिना ये योग करते हुए संसार में बहते रहते हैं।

हे धर्मदास! ज्ञान योग सुखों का समूह है और नाम लेकर जीव अपने घर पहुँच जाता है। वह अति बलवान काल का नाश करके मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

<u>मन का चरित्रः</u>

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! तुम गुरु के उपदेश से मन के चरित्र को समझो। यह मन शून्य में ज्योति दिखाता है और अनेक भ्रमों को पैदा करता है। हे भाई! मन के अंदर बैठे निरंकार ने ही तीनों लोकों में मन का पसारा रखा हुआ है। जीव अनेक स्थानों पर मस्तक झुकाता है लेकिन अपने आपको पहचाने बिना धोखा खाता है; यह सब निरंजन की आशा के अनुसार होता है। सतनाम के बिना काल का जाल नहीं छूट सकता जिस तरह मदारी बंदर को अनेक प्रकार के कष्ट देकर नचाता है उसी तरह यह मन जीवों को कर्मों और भ्रमों के जाल में फँसाकर नचाता है। सत्य शब्द मन के जाल

को उखाड़ देता है लेकिन विरले जीव ही इस भेद को जानकर मन की चाल को समझते हैं।''

हे धर्मदास! तुम इस मन के चरित्र को सुनो और मन को पहचानकर सत्य को ग्रहण करो। इस शरीर के अंदर मन और जीव दोनों रहते हैं। मन पाँच तत्व पच्चीस प्रकृति और तीन गुणों में फँसा हुआ है; ये सब निरंजन के दास हैं। इन दासों ने जीव को घेर रखा है और अनजाने में ही जीव यम का दास हो जाता है।

जब सतपुरुष का अंश जीव में आकर समा जाता है तो इनकी याद को भुलाकर अपने निज घर को पहचान लेता है। जिस तरह तोता शिकारी के नलनी-यंत्र में फँस जाता है, शेर कुँए के पानी में अपनी छाया देखता है और अपनी छाया को ही दूसरा शेर समझ लेता है फिर कुँए में कूदकर अपने प्राणों को गँवा देता है। कुत्ता शीशे के महल में अपनी छाया को देखकर भौंकता है इसी तरह जीव मन के धोखे को समझ नहीं पाता। यम जीव को अनेक धोखों में डालता है जब काल इसे खाता है, तब यह पछताता है।

नकली नाम निरंजन की शाखा है, आदि नाम (धुर शब्द) सतगुरु से ही मिलता है। जीव सतगुरु के चरणों से प्रेम नहीं करते लेकिन जीव सतगुरु मिलाप करने से ही अपने घर सतलोक को चले जाते हैं। ये जीव पराए हो गए हैं अमृत के धोखे में विष से लिपट रहे हैं। धोखे में फँसकर जीव काल के जाल में पड़ जाते हैं। मन ने अनेक कर्मकांडो का पसारा कर रखा है लेकिन इस दुष्ट को पहचान कर ही जीव अपना उद्धार कर सकता है।

हे धर्मदास! मेरे शब्द रूपी दीपक को पाकर जीव काल के धोखे को पहचानकर इससे दूर रहे। जो यह भेद समझ

जाएगा यम उसे कभी ग्रहण नहीं करेगा। जब तक पहरेदार जाग रहे हैं तब तक चोर चोरी करने के लिए सेंध नहीं लगाते जो जीव जाग जाता है उसमें अनुपम कलाएं आ जाती हैं, काल उसके पास नहीं जा सकता।

मन के पाप और पुण्य विचार:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे वीर पुरुष धर्मदास! तुम मन के तत्वों को सुनो। पूर्ण गुरु की मदद से चोर और साहूकार के फर्क को समझो। यह मन एक भयंकर काल है यह जीवों को नचाकर उनका बुरा हाल करता है। जब किसी सुंदर स्त्री को देखता है मन उत्तेजित हो जाता है और काम देह को सताता है; दिल दिमाग उसे बहका देते हैं और अज्ञानी जीव धोखा खा जाता है। स्त्री के साथ भोग-विलास करके इन्द्रियों का रस लेता है, जिसका पाप जीव के सिर पर आ जाता है।

दूसरे का धन देखकर मन खुश होता है कि यह धन मेरा हो जाए, दूसरे का धन लेकर पाप का बोझ ले लेता है। यह पागल मन कर्म करता है और उसका कष्ट यह भोला जीव सहन करता है। दूसरों की आलोचना करना और दूसरों का धन ले लेना यह सब मन के फंदे हैं। सन्तों का विरोध, गुरु की निन्दा ये कर्म करवाकर यह मन जीव को काल के फंदे में डालता हैं। गृहस्थी होकर पर स्त्री की ओर देखना इस तरह है जैसे वह अंधे कर्म का बीज बो रहा है। यह मन जोश में आकर जीवों की हत्या करवा देता है और उसके पाप से नर्क भोगता है फिर यह मन जीव को धोखे में डालकर तीर्थ, व्रत और देवी-देवताओं की पूजा मे लगा देता है।

मन जीव को बुरी आदतों में फंसाकर बर्बाद कर देता है। जो इस जन्म में राजा है, वह नर्कों का दु:ख भोगता है फिर सांड योनि में जन्म लेकर अनेक गायों का पति बनता है।

कर्म-योग मन का एक फंदा है अगर यह निष्कर्म हो जाए तो सारे दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं। जो जैसे कर्म करता है उसे वैसे सुख-दुःख भोगने पड़ते हैं।''

हे धर्मदास! मन के चरित्र सुनो। मैं कब से तुम्हें इस बारे में समझा रहा हूँ। तीनों देव व तैंतीस करोड़ देवता भी इसके जाल में फँसे हुए हैं। शेषनाग और अन्य देवता भी इससे हार चुके हैं। सतगुरु के बिना कोई भी मन की इन चालों से बच नहीं सकता। विरले सन्तों ने ही अपने विवेक से समझकर अपने आपको काल से छुड़वाया है। हे धर्मदास! सतगुरु में भरोसा रखकर जन्म-मरण का दुःख दूर हो जाता है। जो सतनाम में पूरी तरह विश्वास कर लेता है वह सतपुरुष का दास बन जाता है।

निरंजन के चरित्र का वर्णनः

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब तुम धर्मराय के चरित्र सुनो। इसने जीवों की बुद्धि को छलकर अपने जाल में फँसा लिया है। इसने अवतार लेकर गीता को सुनाया और अंधे जीवों को भवसागर से पार नहीं होने दिया। अर्जुन इसका प्रिय भक्त सेवक था इसने अर्जुन को बहुत प्रकार से ज्ञान की बारीकियों को समझाया फिर उसको कर्म करने व निष्काम कर्म करने का उपदेश दिया। उसे दया, ज्ञान-विज्ञान और कर्म करने के लिए कहा। पहले तो कृष्ण ने अर्जुन की आशा को जगाया जब वह समर्पित हो गया तो फिर उसे नर्क में भेज दिया। कृष्ण ने अर्जुन से ज्ञान योग छुड़वाकर उसे कर्म-योग में लगा दिया। कर्मों के वश होकर अर्जुन को बहुत दुःख उठाना पड़ा। उसको मीठा अमृत दिखाकर जहर दे दिया। उसने सन्त का रूप धारण करके जीवों को लूट लिया।

हे धर्मदास! मैं कब तक तुम्हें इस यम की छल बुद्धियों के

बारे में बताता रहूँ? कोई विरला सन्त ही इसकी परख कर सकता है अगर जीव ज्ञान मार्ग में मजबूती से लगा रहे तभी उसे सत्य मार्ग का ज्ञान होगा। यम के छल को पहचान कर इससे दूर रहो। सतगुरु की शरण में आने से यम का डर दूर हो जाता है और परम सुख प्राप्त होता है।

हे आत्माओं के राजा धर्मदास! सतगुरु की महिमा से पंथ को आगे चलाओ, मैंने तुम्हें अमर करने वाला उपदेश दिया है।

मुक्तिदाता पंथ की पहचान:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! आप दयालु सतपुरुष हैं। आपके वचन अमृत से भरे हुए हैं। मुझे मन के चरित्र का भेद पता चल गया है। हे सतगुरु! आप धन्य हैं आपने मुझे जगा दिया है। अब आप मुझे पंथ के बारे में बताएं कि मैं किस तरह की रहनी से यम के तिनके को तोड़ सकूँगा?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें सतपुरुष की दया से सतपुरुष के पंथ का रास्ता बता रहा हूँ। जब अंदर सतपुरुष की शक्ति आ जाती है तो कसाई काल इसे रोक नहीं सकता। सतपुरुष के पास सोलह शक्तियाँ-ज्ञान, विवेक, सत्य, संतोष, प्रेम, धीरज, मौन, दया, क्षमा, शील, नेह कर्म, त्याग, शान्ति, धर्म का पालन, करुणा और समान भाव हैं जीव इन शक्तियों को चित्त में धारण करके अपना उद्धार करे। इन शक्तियों की सहायता से जीव वापिस सतलोक जा सकता है।

इन शक्तियों के बिना पंथ नहीं चल सकता और जीव शक्तिहीन होकर भवसागर में अटका रहता है। जो सदा गुरु की सेवा करता है, गुरु के चरणों से प्रीत करता है वो गुरु के हृदय में निवास करता है और यम को हराता है। वेद-शास्त्र भी सन्तों की महिमा करते हैं। जो सन्त की भक्ति गुरु समान

करता है वह मोह, ममता और क्रोध को वश में कर लेता है। सतपुरुष का 'सतनाम' अमृत का वृक्ष है।

सन्त की संगति से ही जीव अविचलधाम-सतलोक जा सकता है। अंधा आदमी अपने घर नहीं पहुँच सकता। सतपुरुष का नाम आँखें हैं और वापिस अपने घर जाने का परवाना है। सतपुरुष के चरणों में भरोसा रखने वालों के जन्म-मरण का चक्कर खत्म हो जाता है।''

पंथ की रहनी:

धर्मदास ने कहा, ''हे प्रभु! आप दयालु सतपुरुष हैं। आपके वचन मुझे शान्ति देते हैं। वैरागी और गृहस्थी की रहनी पर प्रकाश डालिए, वैरागी और गृहस्थी को किस तरह का जीवन बिताना चाहिए?''

वैरागी के लक्ष्ण:

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! अब मैं तुम्हें वैरागी के जीवन के बारे में बताता हूँ। वह तम्बाकू, शराब और मीट आदि छोड़ देता है तभी हंस बनता है। उसके हृदय में प्रेम और भक्तिभाव हो। उसके मन में कभी ईर्ष्या-द्वेष नहीं आना चाहिए। वह मन, वचन, कर्म से किसी का नुकसान न करे। वह मुक्ति देने वाला 'नाम' प्राप्त करे जिससे उसके सारे कर्म, भ्रम और अहंकार मिट जाएंगे वह हंस का रूप धारण करके पंथ को चलाए। वह कान में कुंडल, गले में कंठी और माथे पर तिलक लगाकर रखे। वह सादा खाना खाए और रात-दिन नाम का सिमरन करता रहे फिर वह तुमसे नाम ले तो मैं उसे सतलोक भेज दूँगा।

वह सारे कर्म-धर्म छोड़कर 'सार-शब्द' में समाया रहे। वह नारी को स्पर्श न करे व अपने बिंद को नष्ट न करे।

अपने हृदय से क्रोध और कपट को दूर कर दे। वह नारी को नर्कों की खान समझते हुए उसे त्याग दे और एक चित्त होकर गुरु के शब्द की कमाई करे। कपट और क्रोध को दूर करके क्षमा रूपी गंगा में स्नान करे। उसके मुख पर प्रसन्नता की हँसी हो और वह भजन-अभ्यास में लगा रहे। उसका शीतल स्वभाव हो और वह सुख के सागर सतगुरु से प्रेम करे।

वह राजा, प्रजा या सेठ साहूकार का कभी भी याचक न बने। सदा अपनी कमाई से अपने पेट की पालना करे। अपने अंदर भक्ति की लहर जगाकर मेहनत से भजन-अभ्यास करे। ऐसा वैरागी मुझको प्राप्त करता है और मुझसे मिलकर मेरे जैसा ही हो जाता है और उसकी समस्त दुविधाओं का अंत हो जाता है। जो सदा गुरु की आज्ञा में रहता है काल उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। गुरु की सेवा करके सब फलों की प्राप्ति हो जाती है। गुरु से विमुख होने पर मुनष्य भवसागर से पार नहीं हो सकता। जिसे गुरु से प्यार है वही सच्चा वैरागी है।''

गृहस्थी के लक्ष्ण:

हे धर्मदास! अब तुम गृहस्थी की भक्ति के बारे में सुनो। जिससे वे काल के पिंजरे में नहीं फंसेंगे। उनके हृदय में जीवों के लिए हमेशा दया होती है। वे माँस, शराब और मछली का सेवन नहीं करते, शुद्ध शाकाहारी रहते हैं। वे मुक्ति देने वाले नाम को प्राप्त करते हैं जिससे काल उन्हें नहीं रोक सकता। वे हमेशा गले में कंठी, माथे पर तिलक और साधुओं की तरह कपड़े पहनते हैं और गुरुमुख से प्यार करते हैं। वे अपने दिल में सन्तों के लिए प्यार रखते हैं और सच्चे गुरु की सेवा में अपना सब कुछ कुर्बान कर देते हैं। हे भाई! गुरु उन्हें जो सिमरन देता है वे उसमें पक्के हो जाते हें।

हे धर्मदास सुनो! ये ही सतपुरुष की डोर है जिस पर

चलकर गृहस्थी मुक्त हो जाता है। जो मेरे शब्दों में विश्वास रखेगा, मैं उसका जन्म-मरण खत्म कर दूँगा। जो शब्द को स्वीकार कर लेते हैं और दिन-रात नाम का सिमरन करते हैं, वे भव सागर पर विजय पा लेते हैं।

आरती का महत्त्वः

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! गृहस्थी प्रत्येक अमावस को आरती (गुरु प्रार्थना/ दर्शन) करे अगर अमावस को आरती नहीं होती तो उस घर में काल का वास होता है अगर अमावस को आरती नहीं हो सकती तो प्रत्येक पूर्णिमा को आरती करे। अगर शिष्य पूर्णिमा के दिन नाम का अमृत पी लेता है तो उसके घर में सुख का वास होता है अगर किसी को पूर्णिमा के दिन नाम मिलता है तो वह अपनी शक्ति के अनुसार गुरु की सेवा करके सतलोक पहुँच जाता है।''

धर्मदास ने इस प्रकार विनती की, ''हे साहब! मुझे कुछ ऐसा बताएं जिससे जीवों का उद्धार हो सके? कलियुग में बहुत से लोग गरीब होंगे उनके लिए कुछ बताएं? सब जीव आपके हैं फिर गरीब जीव कैसे सेवा करेंगे?''

कबीर साहब ने कहा, ''हे धर्मदास! गरीब छह महीने में एक बार आरती करे अगर वह यह आरती छह महीने में भी नहीं कर सकता तो साल में एक बार चौका करके गुरु की सेवा करे अगर वह साल में एक बार भी ऐसा नहीं कर सकता तो सन्त उसे मनमुख कहते हैं। साल में एक बार भी आरती करने वाली आत्माएं धोखा नहीं खाती। जो कोई कबीर का नाम प्रेम पूर्वक जपता है, तुम्हारे नाम-शब्द की कमाई करता है और लगातार गुरु चरणों से प्रीत करता है उसका उद्धार हो जाएगा। जो गृहस्थी ऐसी धारणा रखेगा वह गुरु के प्रताप से सतलोक में निवास करेगा।''

हे धर्मदास! मैंने तुम्हें गृहस्थी और वैरागी दोनों के रहन-सहन के लक्ष्ण बता दिए हैं। वे अपने-अपने तरीके से चलकर शब्द-नाम की कमाई करके पार उतर जाएंगे। यह भवसागर बहुत गहरा, अगम व बहुत भयंकर है। जो जीव नाम रूपी नाव को मजबूती से पकड़ेगा वह भवसागर के दूसरे किनारे पर पहुँच जाएगा। भवसागर से पार उतारने वाला केवट गुरु ही होता है तुम गुरु से प्यार करो। जब सतगुरु रूपी केवट मिल जाता है तो यह जीव भवसागर को जीतकर सतलोक चला जाता है।

मुक्तिपंथ में असावधानी व सावधानी के फलः

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! जब तक आत्मा शरीर में है तब तक जीव 'शब्द-नाम' की कमाई करते हुए सन्तमार्ग पर चलता रहे। जैसे सूरमा रणभूमि में डटा रहता है अगर वह रण से भाग जाए तो बदनाम होता है। सतगुरु का अमूल्य शब्द ही रणभूमि है जो जीव इसमें डगमगा जाता है उसे यमराम अपने काबू में कर लेता है। जो जीव गुरु से विमुख हो जाता है वह बच नहीं सकता और अग्निकुंड नर्क में पड़कर जलता है। उसे अनेक प्रकार के दुःख उठाने पड़ते हैं और वह करोड़ों बार सर्प की योनि लेकर विष की आग में अपने कर्मों को भोगता है, फिर वह कई जन्म विष्टा में कीड़े का शरीर धारण करता है और करोड़ों जन्म नर्क में पड़ा रहता है।

मैं तुम्हें इस जीव के दुःखों का कहाँ तक वर्णन करूँ? इसलिए मजबूत होकर गुरुमुख के शब्द को ग्रहण करो अगर गुरु दयालु हो जाए तो सतपुरुष अपने आप दयालु हो जाता है ऐसे गुरु वृत्ति शिष्य को काल छू भी नहीं सकता। मैं जीवों की भलाई के लिए परमार्थ बताता हूँ कि गुरु भक्तों का कभी कुछ नहीं बिगड़ सकता।''

सावधानी के फल:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! तुम कोयल के बच्चे के स्वभाव को सुनो। कोयल चतुर है उसकी आवाज मधुर है। पापों की खानि कौवा उसका दुश्मन होता है। कोयल कौवे के घौंसले में अपने अंडे रख देती है इस तरह कोयल दुष्ट को भी अपना मित्र बनाकर उससे कार्य ले लेती है; कौवा काल बुद्धि रखते हुए भी उसके अंडो को सेता है। जब अंडे से बच्चे बाहर निकल आते हैं कुछ दिन बाद उनकी आँखें खुल जाती हैं और पंख मजबूत हो जाते हैं।

जब कौवा बच्चों के लिए चुगा लेने जाता है तब कोयल अपना शब्द सुनाती है; कोयल बच्चों को जागृत करती है जो उसके अंश हैं। बच्चों के हृदय में कौवे का कोई गुण नहीं होता। एक दिन कोयल कौवे के सामने अपने बच्चों को उड़ाकर ले जाती है। कोयल का बच्चा अपने परिवार में घुल-मिल जाता है। कौवा व्याकुल होकर उनके पीछे भागता है उनको पकड़ नहीं सकता। थककर वापिस आ जाता है। इस तरह कौवा झक मारकर मूर्छित हो जाता है।''

हे धर्मदास! जो जीव कोयल के बच्चे की तरह मुझसे आकर मिलेंगे वे इस रास्ते से अपने घर सतलोक पहुँच जाएंगे और उनका पूरा वंश तर जाएगा।

हंस के लक्षण:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! जो कौवे के अवगुण छोड़कर हंस के गुणों को अपनाता है वह सतलोक पहुँच जाता है। कौवे की आवाज किसी को नहीं भाती कोयल की आवाज सुनकर सब खुश होते हैं। इसी तरह से हंस प्यार और सच के वचन बोलता है और गुरु के वचनों को प्रेम का अमृत

समझता है। वह कभी भी किसी के साथ धोखा नहीं करता और हमेशा शान्त चित्त रहता है। अगर कोई गुस्से में उसके पास आता है तो वह उसे प्यार से ठंडा कर देता है। ज्ञानी और अज्ञानी में यह फर्क होता है कि अज्ञानी कुमति, कुटिल और कठोर होता है लेकिन ज्ञानी शान्त और प्यार से भरा होता है। उसमें सत्य, विवेक और संतोष समाए होते हैं।''

ज्ञानी के लक्षण:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! ज्ञानी कुमति छोड़ देता है और मन की चालाकियों को समझकर उन्हें भुला देता है अगर ज्ञानी बनकर भी वह किसी को कठोर वचन कहे तो वह अज्ञानी ही कहलाएगा। कोई व्यक्ति योद्धा का वेश धारण करने से योद्धा नहीं होता जब वह युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त करता है तभी उसका यश होता है।

मूर्ख के हृदय में सत कर्म नहीं आते वह 'सार-शब्द' और गुरु को समझ ही नहीं सकता। अंधा किसी गंदी जगह पैर रख ले तो कोई उसकी हँसी नहीं उड़ाता अगर कोई आँख वाला किसी गंदी जगह पैर रखे तो सब उसे दोष देते हैं।''

हे धर्मदास! हमें 'सार-शब्द' और गुरु के ध्यान से ज्ञानी और अज्ञानी के फर्क को समझ लेना चाहिए। वह सबके अंदर रहता है। वह कुछ जगह छिपा और कुछ जगह प्रकट है। उसकी निशानी है कि वह सबके आगे झुककर सबको नमस्कार करता है। सबको उस परमात्मा की अंश समझता है।

प्रह्लाद नाम के रंग में रंगा जा चुका था, इसलिए वह भक्ति में दृढ़ रहा। जब उसे बहुत भयानक पीड़ा दी गई, तब भी उसने प्रभु के गुणों को स्वीकार किया अगर कोई आत्मा इस तरह से सतगुरु की भक्ति करती है तो वह अमूल्य हो जाती है। जो आत्मा अटल और अडोल होकर रहती है वह अमरलोक

में निवास पाती है। यमजाल के भ्रम को छोड़कर सदा सतनाम में ध्यान लगाएं फिर सत्यमार्ग पर चलकर सच्चे दिल से परमार्थ को ग्रहण करें।

परमार्थी गाय का उदाहरण:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! गाय को परमार्थ की खानि समझो। हे ज्ञानी! तुम गाय के परोपकार और गुणों को देखो। गाय घास के तिनके चरती है और पानी पीती है लेकिन दूसरों को दूध देती है। वह बछड़े का पालन-पोषण अपने दूध से करती है। यहाँ तक उसके दूध और घी से देवी-देवता तृप्त होते हैं। गाय का गोबर भी मनुष्य के काम आता है। गाय के मरने पर उसके शरीर को राक्षस मनुष्य खा जाता है। हे भाई! गाय के शरीर में बहुत गुण हैं लेकिन मनुष्य पाप कर्मों के कारण अपने जीवन को बेकार खो देते हैं।''

परमार्थी सन्त के लक्षण:

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! अगर सन्त भी गाय की तरह इन गुणों को ग्रहण कर लें तो काल जीवों को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। जो नर देही धारण करके ऐसी बुद्धि रखता है वह सतगुरु से मिलकर अमर हो जाता है। सुनो धर्मदास! परमार्थ से किसी का कोई नुकसान नहीं होता। परमार्थ पद ही सन्त का आधार है। जो इसे पूर्ण रूप से ग्रहण करता है वह निश्चय ही भवसागर से पार हो जाता है। वह स्वयं को भूलकर सेवा करता है अगर अपने आपको कुछ समझकर अहंकार करता है तो वह बहुत दुःख पाता है।

जो मनुष्य अपने आपको चतुर और बुद्धिमान समझता है और सदा यह कहता है कि मैं गुणवान और शुभ कर्मों वाला हूँ अपने अवगुणों को प्रभु पर डाल देता है, ऐसा करने से शुभ

कर्मों का नाश हो जाता है और अहंकार से निराशा ही हाथ लगती है।

जीव केवल एक नाम की आशा रखे और अपने शुभ कर्मों को किसी के सामने प्रकट न करे। जिस तरह मछली पानी के बिना नहीं रह सकती उसी तरह अपना ध्यान सदा गुरु के चरणों में लगाए रखे। सतपुरुष के नाम का ऐसा प्रभाव है कि यह आत्मा फिर संसार में नहीं आती।''

हे धर्मदास! आत्मा दौड़ते हुए अपने घर सतलोक को जाएगी। जैसे कछुए के बच्चे खुष्क स्थान से वापिस आ जाते हैं ऐसी आत्माएं सतनाम जपकर निडर हो जाती है और जाकर अपने परिवार में मिल जाती हैं; यमदूत परेशान होकर देखते रह जाते हैं।

हे धर्मदास! जहाँ आत्माएं सुख से रहती हैं वह अमोलक आनन्द का धाम है। सारी आत्माएं सतपुरुष के दर्शन करते हुए आपस में मिलकर आनन्द में मग्न रहती हैं।

ग्रन्थ की समाप्तिः

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! मैंने तुझे **प्यार का सागर** - अनुराग सागर की कथा कहकर अगम लोक के पार अनामी परमात्मा का भेद बता दिया है जिसमें सतपुरुष की लीला और काल के चरित्र का वर्णन सुनाया है। कोई पारखी मनुष्य ही अपने आचरण और विवेक से इन बातों को समझेगा। जो गुरुवाणी या शब्द को ग्रहण करके कमाई करेगा उसको ही इस अगम मार्ग का पता चल सकेगा।''

उपसंहारः

कबीर साहब कहते हैं, ''हे धर्मदास! सदा सतगुरु के चरणों में विश्वास करते हुए नाम की भक्ति में लगे रहो। जिस

तरह सती अपने पति के प्यार में अपने शरीर को जला देती है। सतगुरु रूपी पति अजर और अमर है। मैं तुम्हें शब्द का प्रमाण देकर कहता हूँ कि जो अमर सतगुरु से मिल जाता है वह अमर हो जाता है।''

हे धर्मदास! अपने मन और आत्मा को जगाकर सतगुरु के चरणों में लगाओ। इस मन रूपी भँवरे को सतगुरु के सुंदर चरणों में रखो तभी तुम सतलोक पहुँच सकोगे।

हे धर्मदास! आत्मा शब्द और सुरति के मिलाप से शब्द में मिलकर सन्तों के धाम सतलोक पहुँचती है। यह बूँद और सागर के खेल की तरह है। दोनों मिलकर एक ही हो जाते हैं फिर उनको अलग-अलग कैसे कहें।

हे धर्मदास! मन की चालाकियों को छोड़कर सोच समझकर सन्तमार्ग पर चलने से यह आत्मा सतलोक में चली जाती है और सुख सागर जाकर सुख प्राप्त करती है। तुम इस जीव को बूँद के समान और सतगुरु के नाम को सच्चा सागर समझो। तुम इसको अच्छी तरह समझ गए होगे? तुम सतगुरु की भक्ति करो और जीवों को भी भक्ति में लगाओ।